# पुस्तकालय

## गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार

वर्ग संख्या......... आगत संख्या...........

पुस्तक-विवरण की तिथि नीचे अंकित है। इस तिथि सहित ३०वें दिन तक यह पुस्तक पुस्तकालय में वापिस आ जानी चाहिए अन्यथा ५० पैसे प्रति दिन के हिसाब से विलम्ब दण्ड लगेगा।

# गुरुकुल कांगड़ी के ६० वर्ष

हीरक जयन्ती के अवसर पर
मुख्याधिष्ठाता द्वारा प्रकाशित

प्रकाशक—

मुख्याधिष्ठाता
गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय

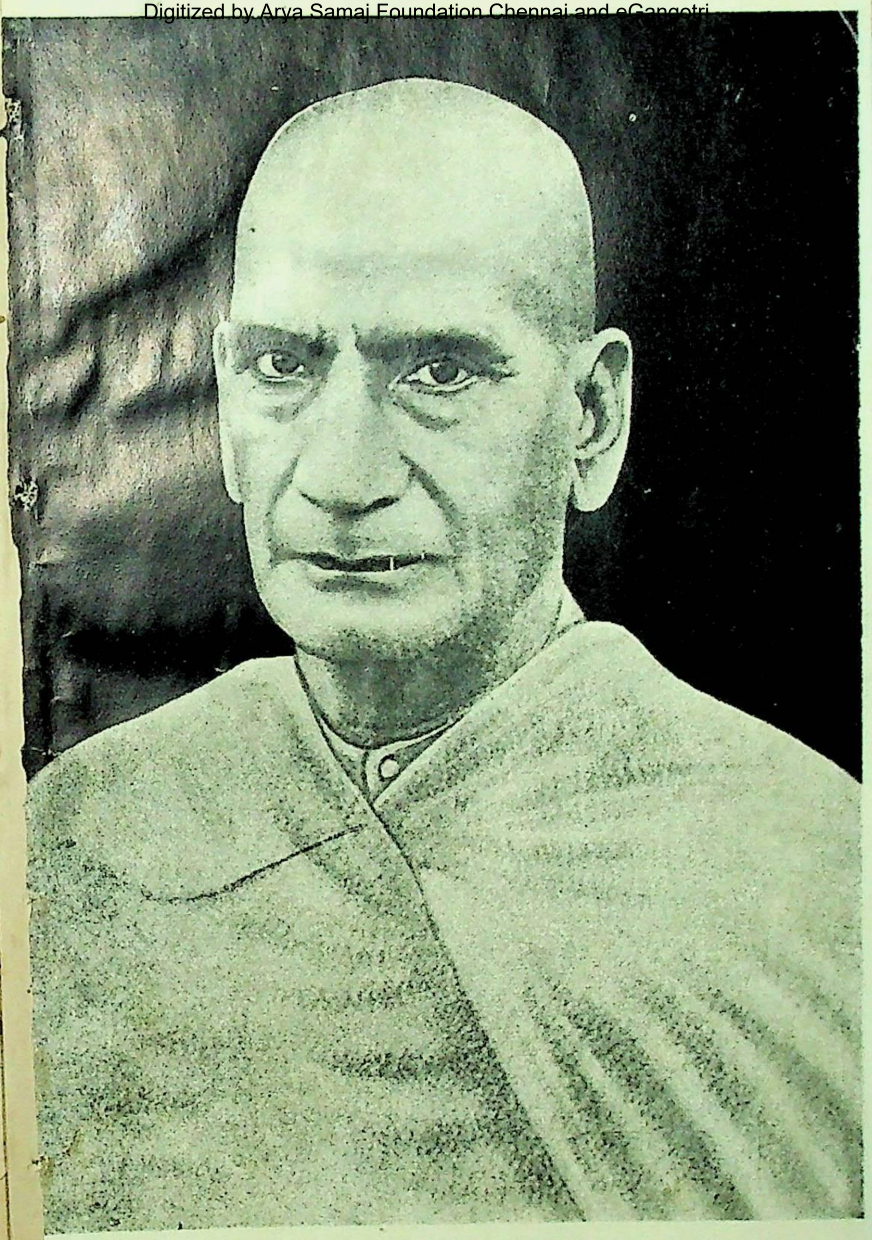
मूल्य २)

मुद्रक—

रणवीर पुरी विद्यावाचस्पति
पुरी प्रिंटर्स, २६–ए, जवाहर नगर,
दिल्ली-६

# विषय सूची

पृष्ठ



कुलपिता स्वामी श्रद्धानन्द जी

: १ :

# योजना

१६वीं सदी में भारत के अन्धकार पूर्ण अन्तरिक्ष में जिन महानुभावों ने जागृति की ज्योति जगाई उनमें ऋषि दयानंद का सन्देश बहुत व्यापक था, वे युग प्रवर्तक ऋषि थे, जिन्होंने शिक्षा, राजनीति, समाज-संगठन आदि सब क्षेत्रों में नये विचारों का संदेश दिया। भारत को विदेशी शासन से मुक्त हो स्वराज्य प्राप्त करना चाहिये इस बात को सब से पहले ऋषि दयानंद ने ही जनता के सम्मुख रखा था। भारत में शासन का क्या रूप हो, समाज का संगठन किस प्रकार से हो, और यह देश किस तरह अपने प्राचीन गौरव को प्राप्त कर संसार का शिरोमणि बने, इन सब बातों के संबन्ध में ऋषि दयानंद ने अपने निश्चित विचार "सत्यार्थ-प्रकाश" आदि ग्रन्थों में प्रकट किये। ये विचार न केवल भारत के लिये उपयोगी हैं, अपितु सम्पूर्ण संसार को अशान्ति और अव्यवस्था के मार्ग से हटा कर सुख-समृद्धि के पथ पर ले जा सकते हैं। इन्हीं विचारों और आदर्शों को क्रिया में परिणत करने के लिये ऋषि दयानंद ने आर्य समाज की स्थापना की थी।

अन्य क्षेत्रों के समान शिक्षा के क्षेत्र में भी आर्य समाज के विशेष आदर्श हैं। ऋषि दयानंद ने अपने समय में प्रचलित शिक्षापद्धति में अनेक दोष अनुभव कर प्राचीन आर्ष शिक्षाप्रणाली का प्रतिपादन किया। ऋषि ने उसे गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का नाम दिया। उस समय भारत में शिक्षा की मुख्यतया दो

प्रणालियाँ प्रचलित थीं। एक भारत के ब्रिटिश शासकों द्वारा प्रारम्भ की गई थी और दूसरी पुरानी परम्परा के अनुसार पण्डित-मण्डली में प्रचलित थी। सरकार द्वारा प्रचलित प्रणाली भारत के राष्ट्रीय तथा धार्मिक आदर्शों के प्रतिकूल थी। उसमें भारत की भाषा, धर्म, सभ्यता, साहित्य तथा संस्कृति की सर्वथा उपेक्षा की गई थी। पंडित–मण्डली की शिक्षा–पद्धति समय की आवश्यकताओं को पूर्ण नहीं करती थी। उसमें वर्तमान युग के ज्ञान-विज्ञानों को कोई स्थान प्राप्त न था। चरित्र निर्माण के लिए ब्रह्मचर्य, त्याग, तपस्या आदि जिन आदर्शों का पालन आवश्यक है, उनका दोनों प्रणालियों में महत्व न था। ऋषि दयानँद ने अनुभव किया कि भारत में प्राचीन गुरुकुल प्रणाली का पुनरुद्धार कर इन दोषों को दूर किया जाना चाहिये। इसी लिए उन्होंने शिक्षा के निम्नलिखित आदर्श और सिद्धान्त प्रतिपादित किये:–

१. यह राज-नियम और जातिनियम होना चाहिये कि आठवें वर्ष से आगे अपने लड़के लड़कियों को घर में न रखें। पाठशाला में अवश्य भेज देवें, जो नहीं भेजे वह दण्डनीय हो।

२. लड़कों और लड़कियों के गुरुकुल पृथक् पृथक् हों।

३. विद्यार्थी लोग गुरुकुलों में ब्रह्मचर्य का पालन करें। २५ वर्ष पूर्व बालक का और १६ वर्ष से पूर्व कन्या का विवाह न हो सके।

४. गुरुकुल में सबको तुल्य वस्त्र, खान, पान, आसन दिये जावें, चाहे वह राजकुमार व राजकुमारी हों, चाहे दरिद्र के सन्तान हों। सब के साथ एक जैसा व्यवहार किया जावे।

५. गुरुकुलों में गुरु और शिष्य पिता पुत्र के समान रहें।

६. विद्या पढ़ने के स्थान गुरुकुल शहर व ग्रामों से दूर एकान्त में हों।

७. शिक्षा में वेदांग तथा सत्य शास्त्रों को प्रमुख स्थान दिया जाय,

: १ :

# योजना

१९वीं सदी में भारत के अन्धकार पूर्ण अन्तरिक्ष में जिन महानुभावों ने जागृति की ज्योति जगाई उनमें ऋषि दयानंद का सन्देश बहुत व्यापक था, वे युग प्रवर्तक ऋषि थे, जिन्होंने शिक्षा, राजनीति, समाज-संगठन आदि सब क्षेत्रों में नये विचारों का संदेश दिया। भारत को विदेशी शासन से मुक्त हो स्वराज्य प्राप्त करना चाहिये इस बात को सब से पहले ऋषि दयानंद ने ही जनता के सम्मुख रखा था। भारत में शासन का क्या रूप हो, समाज का संगठन किस प्रकार से हो, और यह देश किस तरह अपने प्राचीन गौरव को प्राप्त कर संसार का शिरोमणि बने, इन सब बातों के संबन्ध में ऋषि दयानंद ने अपने निश्चित विचार "सत्यार्थ-प्रकाश" आदि ग्रन्थों में प्रकट किये। ये विचार न केवल भारत के लिये उपयोगी हैं, अपितु सम्पूर्ण संसार को अशान्ति और अव्यवस्था के मार्ग से हटा कर सुख-समृद्धि के पथ पर ले जा सकते हैं। इन्हीं विचारों और आदर्शों को क्रिया में परिणत करने के लिये ऋषि दयानंद ने आर्य समाज की स्थापना की थी। ..

अन्य क्षेत्रों के समान शिक्षा के क्षेत्र में भी आर्य समाज के विशेष आदर्श हैं। ऋषि दयानंद ने अपने समय में प्रचलित शिक्षापद्धति में अनेक दोष अनुभव कर प्राचीन आर्ष शिक्षाप्रणाली का प्रतिपादन किया। ऋषि ने उसे गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का नाम दिया। उस समय भारत में शिक्षा की मुख्यतया दो

प्रणालियाँ प्रचलित थीं । एक भारत के ब्रिटिश शासकों द्वारा आरम्भ की गई थी और दूसरी पुरानी परम्परा के अनुसार पण्डित-मण्डली में प्रचलित थी । सरकार द्वारा प्रचलित प्रणाली भारत के राष्ट्रीय तथा धार्मिक आदर्शों के प्रतिकूल थी । उसमें भारत की भाषा, धर्म, सभ्यता, साहित्य तथा संस्कृति की सर्वथा उपेक्षा की गई थी। पंडित-मण्डली की शिक्षा-पद्धति समय की आवश्यकताओं को पूर्ण नहीं करती थी । उसमें वर्तमान युग के ज्ञान-विज्ञानों को कोई स्थान प्राप्त न था । चरित्र निर्माण के लिए ब्रह्मचर्य, त्याग, तपस्या आदि जिन आदर्शों का पालन आवश्यक है, उनका दोनों प्रणालियों में महत्व न था । ऋषि दयानंद ने अनुभव किया कि भारत में प्राचीन गुरुकुल प्रणाली का पुनरुद्धार कर इन दोषों को दूर किया जाना चाहिये । इसी लिए उन्होंने शिक्षा के निम्नलिखित आदर्श और सिद्धान्त प्रतिपादित किये:—

१. यह राज-नियम और जातिनियम होना चाहिये कि आठवें वर्ष से आगे अपने लड़के लड़कियों को घर में न रखें । पाठशाला में अवश्य भेज देवें, जो नहीं भेजे वह दण्डनीय हो ।

२. लड़कों और लड़कियों के गुरुकुल पृथक् पृथक् हों ।

३. विद्यार्थी लोग गुरुकुलों में ब्रह्मचर्य का पालन करें । २५ वर्ष पूर्व बालक का और १६ वर्ष से पूर्व कन्या का विवाह न हो सके ।

४. गुरुकुल में सबको तुल्य वस्त्र, खान, पान, आसन दिये जावें, चाहे वह राजकुमार व राजकुमारी हों, चाहे दरिद्र के सन्तान हों । सब के साथ एक जैसा व्यवहार किया जावे ।

५. गुरुकुलों में गुरु और शिष्य पिता पुत्र के समान रहें ।

६. विद्या पढ़ने के स्थान गुरुकुल शहर व ग्रामों से दूर एकान्त में हों ।

७. शिक्षा में वेदांग तथा सत्य शास्त्रों को प्रमुख स्थान दिया जाय,

साथ ही राजविद्या, संगीत, नृत्य, शिल्पविद्या, गणित, ज्योतिष, भूगोल खगोल, भूगर्भविद्या, यन्त्रकला, हस्तक्रिया, चिकित्साशास्त्र आदि का भी यथोचित रूप से अभ्यास कराया जावे ।

निःसन्देह ऋषि दयानंद के ये विचार शिक्षा के क्षेत्र में अत्यन्त क्रान्तिकारी विचार थे । आर्य समाज के सम्मुख शुरू से ही उन्हें क्रिया में परिणत करने की समस्या उपस्थित थी ।

१९वीं शताब्दी के अन्त में कुछ लोगों के हृदय में यह विचार उत्पन्न हुआ कि ऋषि दयानन्द के शिक्षा सम्बन्धी आदेशों के अनुसार गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का पुनरुद्धार करना चाहिये । महात्मा मुन्शीराम इस आन्दोलन के प्रवर्तक तथा प्रमुख नेता थे । ऋषि दयानंद ने आदर्श शिक्षा का जो मार्ग दिखलाया था, महात्मा मुन्शीराम उसके पहले पथिक बने । आज से ३५ वर्ष पूर्व गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का पुनरुद्धार एक असम्भव कल्पना, एक अक्रियात्मक आदर्श समझा जाता था । महात्मा मुन्शीराम के प्रयत्न से यह असम्भव कल्पना सम्भव हो गयी और शिक्षा के क्षेत्र में एक नई क्रान्ति हुई ।

गुरुकुल के लिये पहले पहिल आन्दोलन सन् १८९७ में प्रारम्भ हुआ । उन दिनों महात्मा मुन्शीराम जालन्धर से 'सद्धर्मप्रचारक' प्रकाशित करते थे । सद्धर्मप्रचारक में उसके लिये प्रबल आन्दोलन किया गया 'आर्य पत्रिका' आदि अन्य सामाजिक पत्रों ने इसका पक्षपोषण किया । नवम्बर १८९८ के आर्य प्रतिनिधि सभा के साधारण अधिवेशन में गुरुकुल खोलने का प्रस्ताव उपस्थित किया गया । वह प्रस्ताव स्वीकृत हो गया ।

गुरुकुल को खोलने का प्रस्ताव तो स्वीकृत हो गया, पर धन के बिना गुरुकुल खोलना संभव कैसे था ? धन एकत्रित करने का कार्य भी महात्मा मुन्शीराम जी ने अपने ऊपर लिया । उन्होने प्रतिज्ञा की कि जबतक

३० हजार रुपया एकत्रित नहीं कर लेंगे अपने घर में पैर नहीं रखेंगे। आजकल ३० हजार रुपये किसी सार्वजनिक कार्य के लिये एकत्रित करना बहुत कठिन नहीं है। पर अब से ५० वर्ष पूर्व जब कि किसी सार्वजनिक कार्य के लिये दान देने का अभ्यास जनता को नहीं था, ३० हजार रुपया इकट्ठा करना एक असाधारण बात थी। महात्मा मुन्शीराम जी गुरुकुल के लिये धन एकत्रित करने निकल पड़े। आठ महीने लगातार घूमने के बाद ३० हजार रुपये एकत्रित हुए। महात्मा मुन्शीराम जी की यह असाधारण सफलता थी, उनके अटल विश्वास और हार्दिक धर्मप्रेम की यह अद्भुत विजय थी। इस सफलता के अभिनन्दन स्वरूप लाहौर में उनका शानदार जलूस निकला। सर्वत्र फूलों के हारों तथा उत्साहपूर्ण जयकारों के साथ उनका स्वागत हुआ।

गुरुकुल के नियम आदि बनाने का कार्य भी महात्मा मुन्शीराम जी के सुपुर्द किया गया और २६ दिसम्बर १६०० के प्रतिनिधि सभा के साधारण अधिवेशन में गुरुकुल के प्रथम नियम स्वीकृत किये गये थे। गुजरांवाला के लाला रलाराम उन दिनों आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान थे। उनके हस्ताक्षरों से गुरुकुल की प्रथम नियमावली प्रकाशित हुई। उसमें २० पृष्ठ की भूमिका थी, जिसमें इन नियमों की व्याख्या की गई है। गुरुकुल के उद्देश्य आदि के संम्बन्ध में यह नियमावली सभा की प्रामाणिक घोषणा है। गुरुकुल की स्थापना के समय महात्मा मुन्शीराम जी के ही नहीं, अपितु उस समय की आर्य प्रतिनिधि सभा के क्या विचार थे, यह जानने के लिये इस प्रथम नियमावली से बढ़कर और कोई साधन नहीं है। इसमें गुरुकुल की स्थापना के निम्नलिखित आठ कारण बताये गए हैं।

१. वेद आर्य समाज के प्राण हैं। विशाल संस्कृत, साहित्य का मूलस्रोत वेद ही हैं। वेद के अध्ययन के लिये गुरुकुल की आवश्यकता है।

२. संस्कृत का अध्ययन तब तक पूर्ण नहीं हो सकता जब तक अंगों और उपांगों के साथ वेद का अध्ययन न किया जाये। अत: ऐसे शिक्षणालय की आवश्यकता है, जहां संस्कृत साहित्य के साथ साथ वैदिक साहित्य का भी अध्ययन हो।

३. भारत की शिक्षा सच्चे अर्थों में राष्ट्रीय तभी हो सकती है जब यहां के शिक्षणालयों में संस्कृत का अध्ययन हो। ब्रिटिश सरकार ने जो कुछ भी शिक्षा प्रचलित की है, वह भारतीयों को "अंग्रेज" बना रही है, वह भारतीयों में देश-भक्ति का विनाश कर रही है। मुसलिम शासन की अनेक शताब्दियां जिन हिन्दुओं को अपना दास नहीं बना सकीं, उन्हें दस बीस वर्षों की अंग्रेजी शिक्षा दास बनाने में समर्थ हो रही है। अतः आवश्यकता इस बात की है कि हम आर्यजाति के लिये शिक्षा की एक ऐसी योजना तैयार करें जो सच्चे अर्थों में "राष्ट्रीय" हो, जो आर्य जाति की "राष्ट्रीय शिक्षा" की आवश्यकता को पूर्ण करे। हमारा यह अभिप्राय नहीं है, कि विदेशी भाषा और नये ज्ञान विज्ञानों को ग्रहण न किया जाय। इनका लाभ उठाना परम आवश्यक है। हमें अंग्रेजी, आधुनिक विज्ञान पाश्चात्य दर्शन, अर्थशास्त्र और राजनीति का अध्ययन करना ही चाहिये। क्या योरोपियन लोग विदेशी भाषाओं और प्राच्य विद्याओं को नहीं पढ़ते हैं? वे पढ़ते हैं, पर अपनी शिक्षा को विदेशी नहीं बना देते। इसी तरह हमें भी विदेशी ज्ञान विज्ञानों को पढ़ते हुए अपनी राष्ट्रीयता की रक्षा करनी चाहिये। गुरुकुल की स्थापना में यह तीसरा हेतु है।

४. ब्रह्मचर्य शिक्षा का मुख्य आधार है। हमारी संस्थायें ऐसी होनी चाहिये जो नगरों के दूषित प्रभावों से दूर हों और जहां ब्रह्मचर्य के नियमों का भली भांति पालन होता हो।

५. सरकारी यूनिवर्सिटियों में परीक्षा की जो पद्धति प्रचलित है वह वास्तविक विद्वत्ता के मार्ग में बाधक है। अतः कोई ऐसी संस्था जो सरकारी यूनिवर्सिटियों की परीक्षा भी दिलाना चाहे और वैदिक पाण्डित्य भी उत्पन्न करना चाहे, कभी सफल नहीं हो सकती। डी० ए० वी० कालेज ने यही प्रयत्न किया है और उसे असफलता हुई। गुरुकुल इस शिक्षा पद्धति से दूर रहेगा।

६. शिक्षणालय में शिक्षक को बालक के माता पिता का स्थान लेना चाहिये। भारत के वर्तमान शिक्षणालयों में शिक्षक लोग माता पिता का स्थान नहीं लेते। गुरुकुल में इस कमी को दूर किया जायगा।

७. शिक्षा के लिये कोई फीस नहीं होनी चाहिये।

८. यूरोपियन विद्वानों ने भारतीय इतिहास की जो खोज की है उसमें भारतीय इतिहास के साथ न्याय नहीं हुआ। उसमें जो तिथि क्रम निश्चित किया गया है, वह सर्वथा अशुद्ध है। उसका खण्डन करने के लिये भारत के प्राचीन इतिहास तथा पुरातत्व का विवेचनात्मक अध्ययन किया जाना चाहिये। यह कार्य भी गुरुकुल जैसे शिक्षणालय से ही पूर्ण किया जा सकता है।

गुरुकुल की स्थापना के हेतुओं पर किसी प्रकार की टीका-टिप्पणी करने की आवश्यकता नहीं है। ये अपने आप में सर्वथा स्पष्ट हैं। ऋषि दयानन्द ने शिक्षा सम्बन्धी जो आदर्श अपने ग्रन्थों में प्रतिपादित किये थे, उनकी ये समयानुकूल व्याख्या मात्र प्रतीत होते हैं। इनको दृष्टि में रखकर गुरुकुल में पढ़ाने के लिये जो पहली पाठविधि बनाई गई थी, उसमें सांगोपांग वेद और संस्कृत साहित्य के गंभीर अध्ययन के साथ साथ अंग्रेजी, गणित, रसायन (Chemistry) भौतिकविज्ञान (Physics) जीवन विज्ञान (Biology) वनस्पति शास्त्र (Botany)

भूविज्ञान (Geology) कृषि, आयुर्वेद, पाश्चात्य दर्शन, अर्थशास्त्र आदि के उच्चकोटि के अध्ययन की भी व्यवस्था की गई थी। वस्तुतः गुरुकुल के प्रथम प्रवर्तक आर्य जाति के लिए 'राष्ट्रीय शिक्षा' की योजना तैयार कर रहे थे। उनकी दृष्टि में आदर्श राष्ट्रीय शिक्षा वह थी जिसमें आधुनिक ज्ञान विज्ञान के साथ संस्कृत साहित्य और सांगोपांग वेद का अध्ययन होता हो।

महात्मा मुन्शीराम जी जब गुरुकुल के लिये धन एकत्रित करते हुये पहले पहल लाहौर आये, तब उन्होंने, सन् १९०० की जनवरी मास में कुछ व्याख्यान गुरुकुल के सम्बन्ध में दिये। इन सब व्याख्यानों से गुरुकुल के विषय में बड़ी हलचल मची और पंजाब के शिक्षित समुदाय का ध्यान गुरुकुल की ओर आकृष्ट हुआ था। इन व्याख्यानों में उन्होंने गुरुकुल शिक्षा प्रणाली की निम्नलिखित विशेषताओं को प्रकट किया था।

१. ब्रह्मचर्य का पुनरुद्धार।

२. ब्रह्मचारियों और उनके गुरुओं का पुत्र और पिता के सम्बन्ध मे रहना।

३. परीक्षा पद्धति के दोषों से मुक्त रहना।

४. शारीरिक उन्नति के लिए विशेष रूप से बल देना।

५. भारत की शिक्षा-प्रणाली में संस्कृत तथा मातृभाषा हिन्दी को प्रमुख स्थान देना।

६. आधुनिक विज्ञानों तथा इंगलिश भाषा को समुचित स्थान देना।

७. शिक्षा के लिए कोई फीस न लेना।

८. प्राचीन भारतीय इतिहास के अन्वेषण तथा शोध का विशेष रूप से प्रबन्ध करना।

गुरुकुल की स्थापना के समय उसके संस्थापकों के सम्मुख ये विचार थे। इन्हीं को दृष्टि में रख कर गुरुकुल का प्रारम्भ किया गया।

## गुरुकुल की स्थापना

गुरुकुल कहां खुले, इसके संबन्ध में भी आर्य जनता के सम्मुख अनेक विचार थे। श्री गोविन्दपुर के लाला विशनदास ने १००० रु० और और लाला मोहनलाल ने भूमि देने का वचन दिया। लूनमियानी के लाला ज्वालासहाय ने अपनी एक भूमि पेश की। परन्तु महात्मा मुन्शीराम गुरुकुल को गंगा के तट पर स्थापित करना चाहते थे। उनकी आंखों में वेद का यह मंत्र सदैव विद्यमान रहता था:—

**उपह्वरे गिरीणाँ संगमे च नदीनाम्।**
**धिया विप्रो अजायत ॥ –यजुर्वेद**

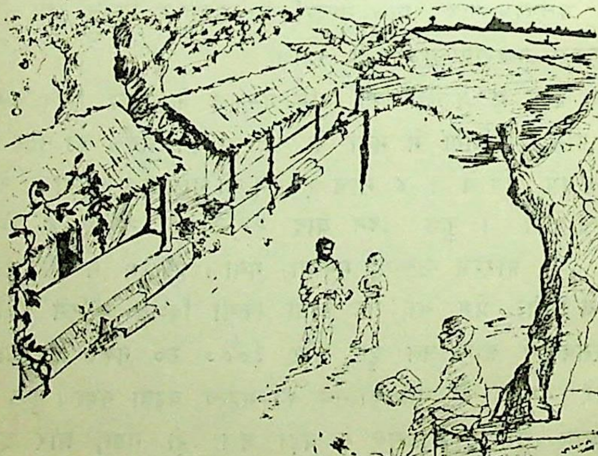
वे कहीं नदियों का संगम और पर्वतों की उपत्यका चाहते थे। उनकी दृष्टि रह रह कर हिमालय के दामन में गंगा के तट पर जाती थी महात्मा जी कई बार वहां गये और निराश लौटे। लाला रलाराम और उनके साथी पंजाब से बाहर जाने को उद्यत न थे। अन्त में जब मुंशी अमनसिंह ने अपना कांगड़ी ग्राम, जो हरिद्वार के सामने गंगा के पूर्वीय तट पर स्थित था, गुरुकुल के लिये प्रतिनिधि सभा को प्रदान कर दिया, तो इस समस्या का हल हुआ। मुंशी अमनसिंह नजीबाबाद जिला बिजनौर के निवासी थे। आप बड़े त्यागी, धर्मपरायण और सत्यनिष्ठ रईस थे। उनकी कुल सम्पत्ति कांगड़ी ग्राम थी, जिसका क्षेत्र १४०० बीघा है। इस भूमि को गुरुकुल के लिये देकर उन्होंने जो दान दिया, उसकी जितनी प्रशंसा की जावे कम है। गुरुकुल के लिए कांगड़ी की यह भूमि एक आदर्श स्थान था।

हिमालय की उपत्यका में गंगा के तट पर सघन रमणीक वनों से घिरे हुए इस प्रदेश से बढ़ कर गुरुकुल के लिए कौन सा स्थान हो सकता था। अतः यहीं पर गुरुकुल खोलने का निश्चय किया गया पर यह स्थान तो सन् १९०१ के अन्त में गुरुकुल के लिए मिला। इससे पूर्व ही १६ मई सन् १९०० को गुजरांवाला में गुरुकुल की स्थापना कर दी गई थी। गुजरांवाला में सामयिक रूप से वैदिक पाठशाला तो पहले विद्यमान थी, उसके साथ ही गुरुकुल की पहली श्रेणी भी पृथक् रूप से खोल दी गई। भक्त आनन्द स्वरूप की वाटिका में पांच कमरों का निर्माण कर उससे आश्रम का काम लिया गया। महात्मा मुन्शीराम जी ने अपने दोनों पुत्र गुरुकुल में प्रविष्ट कराये। उनके अतिरिक्त अन्य अनेक प्रतिष्ठित कुलों के २० बालक इस गुरुकुल में प्रविष्ट हुये। वैदिक पाठशाला में पं० गंगादत्त संस्कृत अध्यापक का कार्य करते थे। उन्हें पाठशाला से बदल कर गुरुकुल का मुख्याध्यापक नियत किया गया। उनके साथ पं० विष्णुमित्र, महाशय भक्तराम तथा मा० सुन्दरसिंह अध्यापक नियत हुए। दो वर्ष तक गुरुकुल गुजरांवाला में ही रहा।

इस बीच में कांगड़ी की भूमि गुरुकुल के लिये मिल चुकी थी। कांगड़ी ग्राम के दक्षिण में गंगा के तट पर बने जंगल को साफ कर कुछ छप्पर बनाये गये थे। ४ मार्च १९०२ को गुरुकुल गुजरांवाला से कांगड़ी ले आया गया। कुछ दिन बाद २२, २३, तथा २४ मार्च को गुरुकुल का प्रारम्भ उत्सव मनाया गया। प्रारम्भ से ही जनता को गुरुकुल से इतना प्रेम था, कि बिना किसी विशेष नोटिस के ५०० नर नारी उत्सव में सम्मिलित हुए और ३००० रु० नकद इकट्ठा हुआ। धीरे धीरे गुरुकुल के वार्षिकोत्सव का महत्व बढ़ता गया। कुछ ही वर्षों में यह आर्य समाज का सब से बड़ा मेला हो गया, और इसमें न केवल पंजाब से अपितु सारे भारत से हज़ारों की संख्या में नरनारी

सम्मिलित होने लगे और उत्सव के व्याख्यानों, सम्मेलनों, उपदेशों और परिषदों द्वारा अपने ज्ञान तथा धर्म की पिपासा को शान्त करने लगे।

गुरुकुल में प्रविष्ट होने वाले ब्रह्मचारियों की संख्या निरंतर बढ़ती रही। गुजरांवाला से कुल ३४ ब्रह्मचारी शुरू में कांगड़ी में आये थे। पांचवें साल के अन्त में ब्रह्मचारियों की संख्या बढ़कर १८७ हो गई पहले लोगों का विचार था कि कौन माता पिता अपने गोद के लालों को अपने से पृथक् किसी जंगल में १४ वर्ष के लिये पढ़ने को भेजेगा। पर अनुभव ने इस आशंका को निर्मूल कर दिया। प्रतिवर्ष सैकड़ों प्रार्थनापत्र अपने बालकों को गुरुकुल में दाखिल कराने के लिये आने लगे। सबको प्रविष्ट करना सम्भव नहीं था, क्योंकि रुपये की कमी थी और ब्रह्मचारियों के निवास के लिये प्रबन्ध पर्याप्त नहीं था। ब्रह्मचारियों का प्रवेश चुनाव द्वारा होता था और बहुत से माता पिताओं को निराश हो कर गुरुकुल से लौटना पड़ता था।



पुण्यभूमि में गुरुकुल की प्रारंभिक झोपड़ियां

* * *

: २ :

# विकास

आन्तरिक प्रबन्ध और व्यवस्था की दृष्टि से भी गुरुकुल निरन्तर उन्नति कर रहा था। धीरे धीरे फूंस की झोपड़ियों का स्थान ईंट की इमारतें ले रहीं थीं। चार वर्ष के अन्दर अन्दर २५००० रुपये की लागत से २२ पढ़ने के कमरे और ब्रह्मचारियों के निवास के लिये पृथक् आश्रम बना लिया गया था। इसके अतिरिक्त भोजन भण्डार हस्पताल, यज्ञशाला, धर्मशाला और अध्यापकों के निवास के लिये भी मकान बन गए थे। दो कूएं भी तैयार हो गए थे। पर गुरुकुल के संचालक इतने से संतुष्ट नहीं थे। वे पांच लाख की लागत से ६०० विद्यार्थियों के निवास तथा पढ़ने योग्य पक्की सुन्दर इमारत बनवाने का स्वप्न ले रहे थे। पटियाला स्टेट के मुख्य इन्जीनियर लाला गंगाराम से उन्होंने उत्कृष्ट इमारत का नक्शा तैयार कराया था और उसके लिये भी अपील की थी। सन् १९०७ में महात्मा मुंशीराम जी ने लिखा था कि गुरुकुल के लिये पक्की इमारतों का निर्माण परमावश्यक है। इसी के अनुसार सन् १९०८ में कालेज की पक्की शानदार इमारत बननी आरम्भ हो गई थी।

गुरुकुल के पहले आचार्य पं० गंगादत्त जी थे। महात्मा मुंशीराम जी उस समय मुख्याधिष्ठाता थे। पं० गंगादत्त जी व्याकरण के प्रकाण्ड पण्डित थे। उनके साथ पं० काशीनाथ शास्त्री, प० भीमसेन

शर्मा, पं० दौलतराम शास्त्री, पं० पद्मसिंह, पं० विष्णु मित्र आदि अनेक विद्वान् काम करते थे। अंग्रेजी तथा गणित आदि पढ़ाने का कार्य मा० गोवर्धन बी० ए०, मा० विनायक साठे आदि द्वारा होता था। भोजन भण्डार का प्रबन्ध जालन्धर के लाला शालिग्राम के हाथ में था। लाला जी गुरुकुल के अनन्य भक्त थे। उन्होंने अपना तन मन धन गुरुकुल के लिये अर्पित कर रखा था। इन महानुभावों के सहयोग से गुरुकुल दिन दुगनी रात चौगुनी उन्नति करता रहा।

१६०२ में गुरुकुल कांगड़ी में आ गया था। १६०६ तक उसमें सात श्रेणियां हो चुकीं थीं। अब गुरुकुल में उच्च पढ़ाइयों की समस्या उपस्थित हुई। इसके पूर्व केवल ६ श्रेणियां ही थीं, जिसमें प्रधानतया संस्कृत साहित्य और व्याकरण की तथा सामान्यतया अंग्रेजी तथा प्रारम्भिक विषयों की शिक्षा दी जाती थी। अब उच्च कक्षाओं के खुलने पर यह प्रश्न उपस्थित हुआ कि विज्ञान गणित आदि आधुनिक विषयों की क्या व्यवस्था की जाय। इसी समय मा० रामदेव जी गुरुकुल में कार्य करने आये, वे एक ट्रेन्ड ग्रेजुएट थे और जालन्धर स्कूल के सफल हेडमास्टर रहे थे। उनका विचार था कि कि आधुनिक विज्ञान शिक्षा का आवश्यक अंग है और गुरुकुल में उसकी यथोचित व्यवस्था होनी चाहिये। साथही वे शिक्षा संबन्धी नियन्त्रण के पक्षपाती थे। गुरुकुल अपनी प्रारंभिक दशा को पार कर रहा था। अब वे चाहते थे कि यहां पढ़ाई का नियमित समयविभाग बने और सब कार्य व्यवस्थित रूप में हो। यह स्वाभाविक भी था, क्योंकि शुरू से ही गुरुकुल को एक पुराने ढंग की पाठशाला बनाना अभिप्रेत नहीं था। गुरुकुल की प्रारंभिक स्कीम में आधुनिक ज्ञान, विज्ञान को यथोचित स्थान दिया गया था। इस प्रवृत्ति के विपक्ष में आचार्य गंगादत्त जी का मौलिक मत भेद था जो नीति से संबन्ध

रखता था। परिणाम यह हुआ की उन्होंने गुरुकुल से त्याग पत्र दे दिया और कुछ समय बाद ज्वालापुर के निकट एक पृथक् गुरुकुल की स्थापना की। यह गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

आचार्य गंगादत्त जी के बाद महात्मा मुन्शीराम ही गुरुकुल के आचार्य नियत हुए। शिक्षा विषयक प्रबन्ध में इनकी सहायता मा० रामदेव जी करते थे, जो उस समय मुख्याध्यापक के पद पर नियुक्त थे।

## महाविद्यालय का प्रारम्भ

सन् १९०७ में गुरुकुल में महाविद्यालय कालेज विभाग का प्रारम्भ हुआ था। तीन विद्यार्थी ९ साल तक विद्यालय विभाग में रह कर अधिकारी परीक्षा उत्तीर्ण कर महाविद्यालय में आये। महाविद्यालय विभाग के शुरू होने पर गुरुकुल में अनेक उच्चकोटि के विद्वान अध्यापन के लिये नियुक्त किये गये। गुरुकुल के महाविद्यालय विभाग के इन प्रारम्भिक शिक्षकों का नाम देना यहाँ अनुचित न होगा।

१. महात्मा मुन्शीराम जी आचार्य।

२. आचार्य रामदेव जी बी० ए०, एम० आर० ए० एस० उपाचार्य तथा उपाध्याय पाश्चात्य दर्शन।

३. पं० काशीनाथ शास्त्री–उपाध्याय प्राच्यदर्शन।

४. पं० शिवशंकर काव्यतीर्थ–उपाध्याय वेद।

५. श्री बाल कृष्ण एम० ए०–उपाध्याय इतिहास, अर्थशास्त्र।

६. श्री विनायक गणेश साठे एम० ए०–उपाध्याय रसायनशास्त्र।

७. श्री महेशचरणसिंह एम० एस० सी०–उपाध्याय वनस्पतिशास्त्र।

८. श्री घनश्यामसिंह गुप्त बी० ए० एल० बी०–उपाध्याय विज्ञान।

९- श्री सेवाराम एम० ए०–उपाध्याय आँग्ल भाषा।

१०. श्री लक्ष्मीनारायण बी० ए०–उपाध्याय आँग्ल भाषा।

११. श्री लक्ष्मणदास बी० ए०–उपाध्याय गणित।

महाविद्यालय खुलने के साथ ही आ० रामदेव जी उपाचार्य के पद पर नियत हो गये थे और उनके स्थान पर मुख्याध्यापक मा० गोवर्धन बी० ए० बने थे। शिक्षा के क्षेत्र में इस समय गुरुकुल बड़ी तत्परता से कार्य कर रहा था। गुरुकुल में सब विषयों की शिक्षा मातृभाषा हिन्दी के माध्यम द्वारा दी जाती थी। विज्ञान, गणित पाश्चात्य दर्शन आदि विषय भी हिन्दी में ही पढ़ाये जाते थे। जब महाविद्यालय विभाग खुला तो उसमें भी हिन्दी को ही माध्यम रखा गया। उस समय हिन्दी में उच्च शिक्षा देना एक असम्भव बात समझी जाती थी। गुरुकुल ने इसे कार्य रूप में परिणत करके दिखा दिया। उस समय आधुनिक विज्ञानों की पुस्तकें हिन्दी में बिलकुल न थीं। गुरुकुल के उपाध्यायों ने पहिले पहल इस क्षेत्र में काम किया और गुरुकुल से अनेक उच्चकोटि के ग्रन्थ प्रकाशित हुए प्रो० महेशचरणसिंह की 'हिन्दी कैमिस्ट्री', प्रो० साठे का 'विकासवाद' श्रीयुत गोवर्धन की 'भौतिकी' और 'रसायन', प्रो० रामशरणदास सक्सेना का 'गुणात्मक विश्लेषण', प्रो० सिन्हा का 'वनस्पतिशास्त्र' प्रो० प्राणनाथ का 'अर्थशास्त्र', 'राष्ट्रीय आय-व्यय शास्त्र' और 'राजनीति शास्त्र'' प्रो० बालकृष्ण का 'अर्थशास्त्र' और 'राजनीति शास्त्र' और प्रो० सुधाकर का 'मनोविज्ञान' हिन्दी में अपने अपने विषय के पहले ग्रन्थ हैं। यह इतना महत्वपूर्ण कार्य गुरुकुल द्वारा किया गया। हिन्दी में वैज्ञानिक ग्रन्थों की रचना ही गुरुकुल द्वारा प्रारम्भ हुई। इन वैज्ञानिक ग्रन्थों के अतिरिक्त अन्य भी बहुत से उच्चकोटि के ग्रन्थ गुरुकुल द्वारा प्रकाशित हुए। प्रो० रामदेव ने भारतीय

इतिहास के संबन्ध में मौलिक अनुसंधान कर अपना प्रसिद्ध 'भारतवर्ष का इतिहास' प्रकाशित किया। महात्मा मुन्शीराम जी ने विविध धर्मों का तुलनात्मक अध्ययन कर पारसी आदि अनेक धर्मों पर मौलिक ग्रन्थ लिखे। गुरुकुल की साहित्य परिषद् ने दो दर्जन से अधिक ग्रन्थ प्रकाशित किये। ये सभी ग्रन्थ किन्हीं नये विषयों पर निबन्ध के रूप में थे। साहित्य परिषद् की ओर से गुरुकुल के वार्षिकोत्सव पर सरस्वती सम्मेलन किये जाते थे, जिन में विविध विषयों पर मौलिक निबन्ध पढ़े जाते थे। उस समय के शिक्षित समुदाय में इन निबन्धों की बड़ी धूम थी। गुरुकुल ने छोटे बालकों के लिये पाठ्य पुस्तकें तैयार करने के लिये भी बड़ा काम किया संस्कृत की पहली रीडरें गुरुकुल ने ही प्रकाशित कीं। सब श्रेणियों के लिये हिन्दी संस्कृत विज्ञान आदि की बहुत सी पाठ्य पुस्तकें गुरुकुल में तैयार हुई। बाहर के भी अनेक शिक्षणालयों ने इनको अपनाया।

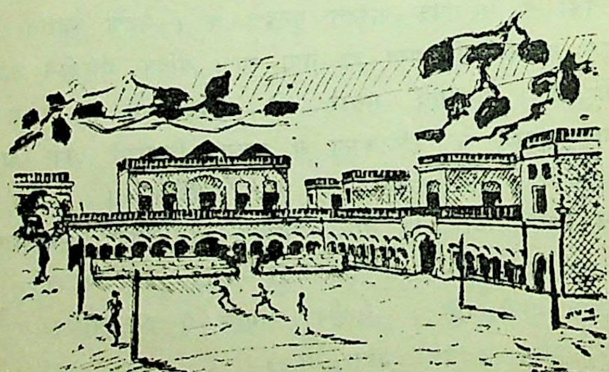
सन् १९०७ में "वैदिक मैगज़ीन" का भी पुनरुद्धार किया गया इस पत्रिका के संस्थापक पण्डित गुरुदत्त थे। उनके देहान्त के साथ साथ इस पत्रिका भी अन्त हो गया था। वैदिक मैगज़ीन अंग्रेजी में निकलती थी। पाश्चात्य संसार को वैदिक धर्म का संदेश सुनाने तथा आर्य समाज के दृष्टिकोण से प्राच्य विद्याओं का अनुशीलन करने के लिये इस पत्रिका का बड़ा उपयोग था। अब उसका पुनर्जीवन किया गया और मा० रामदेव जी उसके संम्पादक बने। सन् १९०७ से १९३२ तक २५ वर्ष निरंतर यह पत्रिका गुरुकुल से प्रकाशित होती रही। शिक्षक समाज में इस पत्रिका को बड़ी आदर की दृष्टि से देखा जाता था।

'सद्धर्मप्रचारक' पहले जालन्धर से प्रकाशित होता था महात्मा

मुन्शीराम जी का 'सद्धर्मप्रचारक' प्रेस भी जालन्धर में ही था। १६०८ में उसे गुरुकुल ले आया गया। तब से 'सद्धर्मप्रचारक' नियत रूप से गुरुकुल से ही प्रकाशित होने लगा। गुरुकुल का प्रचार करने में इस पत्र से बड़ी सहायता मिली। सद्धर्मप्रचारक पत्र और "सद्धर्मप्रचारक प्रेस" गुरुकुल को साहित्यिक जीवन का एक महत्वपूर्ण केन्द्र बनाने में अत्यन्त सफल हुए।

## फलनिष्पत्ति

१६२२ में गुरुकुल से दो ब्रह्मचारी हरिश्चन्द्र और इन्द्र अपनी शिक्षा पूर्ण कर स्नातक हुए। वर्षिकोत्सव के अवसर पर बड़े समारोह के साथ इनका दीक्षान्त संस्कार हुआ। गुरुकुल का यह वार्षिकोत्सव अद्वितीय था। जनता के उत्साह की कोई सीमा न थी। नव स्नातकों के दीक्षान्त संस्कार का दृश्य आज भी एक अद्भुत आकर्षण रखता है सन् १६१२ में आज से २४ वर्ष पूर्व गुरुकुल का जब पहिला दीक्षान्त संस्कार हुआ तब उसका कितना प्रभाव जनता पर हुआ होगा इसकी कल्पना सहज में ही की जा सकती है।



पुण्य भूमि में गुरुकुल के भवन

* * *

: ३ :

# विश्वविद्यालय की स्थापना

## गुरुकुल और ब्रिटिश सरकार

गुरुकुल निरन्तर लोक-प्रिय होता जारहा था । जनता गुरुकुल में आकर सतयुग का दृश्य देखती थी । शहरों के कोलाहल से दूर, गंगा पार, हिमालय की उपत्यका में यह तपोवन स्थापित था । चारों ओर सघन वन थे । यहां ३०० के लगभग ब्रह्मचारी अपने गुरुवर्ग के के साथ ब्रह्मचर्य और विद्या की साधना में तत्पर थे । यहां अमीर ग़रीब वा ऊंच-नीच का कोई भेद न था । गौड़ ब्राह्मण, और अछूत मेघ के पुत्र एक साथ रहते थे, एक साथ भोजन करते थे सबके एकसे वस्त्र, एकसा खानपान और एकसा रहन सहन था । सब एक दूसरे को भाई भाई समझते थे । यदि किसी के पिता अपने ब्रह्मचारी के लिये कोई मिष्ठान्न लाते, तो वह सब को बाँट कर उसे खाता था । ऋषि दयानंद ने शिक्षा के सम्बन्ध मे जो आदर्श रखे थे, वे यहां मूर्त रूप से दृष्टिगोचर होते थे । यही कारण था कि गुरुकुल में एक विशेष आकर्षण था, एक अद्भुत जादू था । जो भी गुरुकुल में आता वह वहाँ के जीवन से प्रभावित हुए बिना न रहता ।

केवल भारतीय जनता ही नहीं, अनेक विदेशियों को भी गुरुकुल ने अपनी ओर आकृष्ट किया । शिक्षा के क्षेत्र में गुरुकुल एक नई

क्रान्ति था। इसे देखने के लिये बहुत से विदेशी विद्वान गुरुकुल पधारने लगे। अमेरिका के प्रसिद्ध शिक्षा विशारद श्रीयुत मायरन फेल्प्स सन् १६२८ में गुरुकुल आये। उन्होंने कई महीने गुरुकुल में रह कर इसके प्रत्येक विभाग का सूक्ष्मता के साथ निरीक्षण किया। गुरुकुल में रह कर जो कुछ देखा उसके संबन्ध में एक विस्तृत लेख माला उन्होंने इलाहाबाद के प्रसिद्ध ऐंग्लो इन्डियन पत्र "पायोनियर" में लिखी। इस लेखमाला से बहुत से शिक्षाविशारदों का ध्यान गुरुकुल की ओर आकृष्ट हुआ, और गुरुकुल में विदेशी यात्रियों की संख्या निरंतर बढ़ने लगी। कुछ समय बाद श्रीयुत सी०एफ० एंड्रूज़ अपने मित्र श्रीयुत पियर्सन के साथ आकर गुरुकुल में रहे। गुरुकुल के जीवन तथा शिक्षा का उनपर बड़ा प्रभाव पड़ा उन्होंने भी गुरुकुल के संबन्ध में अनेक लेख लिखे। परिणाम यह हुआ कि गुरुकुल भारत से बाहर यूरोप और अमेरिका में भी प्रसिद्ध हो गया। इन देशों से जो यात्री भारत आते वे गुरुकुल देखे बिना वापिस न लौटते। ब्रिटिश ट्रेड यूनियन आन्दोलन के प्रसिद्ध नेता श्रीयुत सिडनी वैब गुरुकुल आये और इस संस्था को देख कर अत्यन्त प्रभावित हुए। सन् १६१४ में लेबर पार्टी के प्रसिद्ध नेता और ग्रेट ब्रिटेन के भूतपूर्व प्रधान मंत्री श्री रेम्जे मैक्डानल्ड गुरुकुल पधारे। उन्होंने गुरुकुल के संबन्ध में एक लेख में लिखा-'मैकाले के बाद भारत में शिक्षा के क्षेत्र में जो सबसे महत्वपूर्ण और मौलिक प्रयत्न हुआ, वह गुरुकुल है।'

यह असम्भव था कि ब्रिटिश शासकों की दृष्टि गुरुकुल की ओर आकृष्ट न होती। श्रीयुत रैम्जे मैक्डानल्ड के शब्दों में सरकारी आफिसरों के लिये गुरुकुल एक पहेली है। गुरुकुल के शिक्षक वर्ग में एक भी अंग्रेज नहीं है। यहां शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी नहीं है

पंजाब यूनिवर्सिटी में इंगलिश साहित्य पढ़ने के लिये जो पुस्तकें प्रयोग में आ सकती हैं, गुरुकुल उन्हें अपनी पाठ्य पुस्तकें नहीं बनाता। यहां एक भी विद्यार्थी सरकारी यूनिवर्सीटियों की परीक्षा देने नहीं जाता। गुरुकुल अपनी पृथक् उपाधि 'डिग्री' प्रदान करता है। सचमुच यह सरकार की भारी अवज्ञा है। यह स्वाभाविक है कि घबड़ाये हुए सरकारी आफीसर के मुख से पहिली बात इसके लिये यही निकले कि यह 'राजद्रोही है''।

निःसंदेह पहले पहल सरकार ने गुरुकुल को राजद्रोही संस्था समझा। सरकारी यूनिवर्सिटियों से सर्वथा स्वतंत्र सच्ची राष्ट्रीय शिक्षा के लिये किया गया वह अद्भुत प्रयत्न था। गुरुकुल राजद्रोही है, सरकार का यह विचार तब तक दूर नहीं हुआ, जब तक संयुक्तप्रान्त के लेफ्टिनेन्ट गवर्नर श्रीयुत सर जेम्स मेस्टन इस संस्था को अपनी आंखों से नहीं देख गये। श्रीयुत सर जेम्स मेस्टन गुरुकुल में चार बार आये, उनकी गुरुकुल यात्रा का उद्देश्य यही था कि वे स्वयं गुरुकुल का अवलोकन कर इस बात का निर्णय करें कि सरकारी अफसरों में गुरुकुल के राजद्रोही होने का जो विचार फैला हुआ है, वह कहाँ तक ठीक है। ६ मार्च १९१३ को श्रीयुत सर जेम्स मेस्टन पहली बार आये। अभिनन्दन पत्र का उत्तर देते हुए अपने भाषण में उन्होंने कहा—"न केवल संयुक्त प्रान्त अपितु सम्पूर्ण भारत में शिक्षा के क्षेत्र में जो परीक्षण किये गये हैं, गुरुकुल उसमें सबसे अधिक मौलिक और महत्वपूर्ण है"।

सरकारी कागजात में गुरुकुल को एक शाश्वत भयंकर और अज्ञात खतरे का मूल बनाया जाता रहा था। इसका सबसे उत्तम जबाब सर जेम्स मेस्टन ने दिया। गुरुकुल को देख कर वे इतने प्रभावित हुए कि अपनी दूसरी यात्रा में (१९ फरवरी १९१४) उन्होंने

गुरुकुल के संबन्ध में यह सम्मति दी–

"This is my idea of an ideal university"

दो वर्ष के बाद भारत के वायसराय तथा गवर्नर जनरल लार्ड चेम्सफोर्ड भी गुरुकुल पधारे और इस अद्वितीय संस्था का अवलोकन कर अत्यन्त प्रभावित हुए, ब्रह्मचारियों के स्वस्थ और सुदृढ़ शरीरों की वायसराय महोदय ने बहुत प्रशंसा की और इस संस्था के संबन्ध में अपनी हितैषिता को प्रकट किया।

भारतीय सरकार के इन उच्च राजकर्मचारियों का स्वागत करते हुए भी गुरुकुल ने अपनी विशेषता को नहीं छोड़ा। गुरुकुल आर्य-जाति की एकमात्र राष्ट्रीय संस्था है उसे किसी भी दशा में भारतीयता और राष्ट्रीयता को नहीं छोड़ना चाहिए। यही कारण है कि कि वायसराय महोदय का अभिनन्दन संस्कृत के श्लोकों द्वारा किया गया। उनके भोजन के लिये तुलसी की चाय, फल, पकौड़े और भारतीय मिठाइयों का आयोजन किया गया। गुरुकुल में जो भी विदेशी यात्री आते थे वे ब्रह्मचारियों के साथ भोजनभंडार में आसन पर बैठकर भारतीय ढंग से भोजन करते थे। गुरुकुल आकर उन्हें गुरुकुलीय बनना होता था। गुरुकुल की कुछ अपनी विशेषतायें हैं गुरुकुल वैदिक धर्म, भारतीय सभ्यता और आर्य संस्कृति के पुनरुज्जीवन के लिये खोला गया है। बड़े से बड़े राजपदाधिकारी के लिए गुरुकुल ने अपनी राष्ट्रीय संस्कृति का परित्याग नहीं किया।

गुरुकुल राजद्रोही न था। गुरुकुल को राजद्रोही समझना सरकार की भूल थी। पर इस में भी संदेह नहीं, कि गुरुकुल भारत के राष्ट्रीय पुनरुज्जीवन और राजद्रोह को एक ही बात नहीं समझता था यही कारण है कि जब कभी धर्म, जाति व देश के लिये किसी

सेवा का त्याग की आवश्यकता हुई, गुरुकुल सदैव आगे रहा। १९०७ के व्यापक दुर्भिक्ष, १९०८ के दक्षिण हैदराबाद के जल विप्लव और १९११ के गुजरात दुर्भिक्ष के अवसर पर गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने अपने भोजन में कमी कर के पीड़ितों की सहायता के लिये दान दिया। दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों के साथ दासों का सा व्यवहार होता था। इसके विरुद्ध महात्मा गांधी के नेतृत्व में सत्याग्रह संग्राम प्रारम्भ किया गया। भारत में श्रीयुत गोखले ने इस सत्याग्रह संग्राम के लिए सहायता की अपील की। गुरुकुल के विद्यार्थियों ने अपना घी दूध छोड़ कर और मज़दूरी करके इस फण्ड में सहायता की। उन दिनों हरिद्वार के ऊपर गंगा का एक बड़ा बांध बांधा जा रहा था, जो दूधिया बन्ध के नाम से प्रसिद्ध है। गुरुकुल के विद्यार्थी वहाँ साधारण मजदूरों की तरह टोकरी ढो कर मजदूरी प्राप्त करते थे, और उसे दक्षिणी अफ्रिका के सत्याग्राहियों के लिये भेजते थे। इस प्रकार गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने मजदूरों द्वारा काम करके और अपने घी दूध में कमी करके जो धन बचाया उससे १५०० रु० दक्षिण अफ्रिका के सत्याग्रह के लिए प्रदान किया। महात्मा गांधी गुरुकुल के ब्रह्मचारियों की इस भावना और त्याग से बड़े प्रभावित हुए। यही कारण है कि जब महात्मा गांधी अपने सत्याग्रह आश्रम के विद्यार्थियों के साथ भारत आए तो अहमदाबाद में प्रथक् आश्रम खुलने तक अपने विद्यार्थियों के लिये सर्वोतम स्थान उन्होंने गुरुकुल को ही समझा और उनके विद्यार्थी कई मास तक गुरुकुल में रहे। गुरुकुल के विद्यार्थी राष्ट्रीय पुनरुज्जीवन और सेवा के जिस वातावरण में रहते थे, उस में इस भावना का उत्पन्न होना स्वाभाविक ही था।

* * *

: ४ :

# विस्तार

गुरुकुल की ख्याति खूब बढ़ती जाती थी । शिक्षा के क्षेत्र में गुरुकुल एक नई क्रान्ति के रूप में था । जनता में इसका आकर्षण निरंतर बढ़ रहा था । यही कारण है कि गुरुकुल स्थापित होने के कुछ ही वर्षों बाद इसकी शाखायें पंजाब के भिन्न भिन्न स्थानों पर खुलनी प्रारम्भ होगईं । गुरुकुल–शिक्षा की मांग बहुत अधिक थी । एक गुरुकुल कांगड़ी इस मांग को पूरा करने में असमर्थ था इसी लिये अन्य स्थानों पर शाखा–गुरुकुल खुलने प्रारम्भ हुए । सबसे पहली शाखा मुलतान में खुली । मुलतान शहर से तीन मील की दूरी पर ताराकुण्ड के समीप एक रमणीय स्थान पर यह गुरुकुल स्थापित है । इस की स्थापना २३ फरवरी सन् १९०९ को हुई थी । तब से गुरुकुल निरंतर उन्नति करता गया और धीरे धीरे इसमें दस श्रेणियां हो गईं । गुरुकुल कांगड़ी की अधिकारी परीक्षा पास कर के इसके विद्यार्थी उच्च शिक्षा के लिये गुरुकुल कांगड़ी महाविद्यालय में प्रविष्ट होने लगे ।

मुलतान के दो वर्ष बाद गुरुकुल की दूसरी शाखा कुरुक्षेत्र में खुली । सन् १९१० में थानेश्वर शहर के सुप्रसिद्ध रईस लाला ज्योतिप्रसाद जी के मन में यह शुभ विचार उत्पन्न हुआ कि वे भी गुरुकुल कांगड़ी की शाखा अपने यहां खुलवायें । इन्होंने अपने विचार महात्मा मुन्शीराम जी के सामने रखे । लाला ज्योतिप्रसाद ने प्रारम्भ

में १० हजार रुपया नगद और १०४८ बीघा भूमि गुरुकुल के लिये अर्पण की । सन् १९११ में थानेश्वर के समीप महाभारत काल की प्रसिद्ध युद्धभूमि कुरुक्षेत्र में गुरुकुल की स्थापना हो गई । गुरुकुल की आधारशिला रखते हुए महात्मा मुन्शीराम जी ने अपने भाषण में कहा था--"आज से ५००० वर्ष पूर्व इसी कुरुक्षेत्र भूमि में आर्यावर्त के विनाश का बीज बोया गया था आज इसी भूमि में आर्यावर्त की उन्नति के लिये यह बीज बोया गया है" ।

सन् १९१२ में देहली के सुप्रसिद्ध सेठ रघुमल जी ने एक लाख रुपया इस निमित्त दिया कि इस से देहली के समीप गुरुकुल की एक शाखा खोली जाय । इस के फलस्वरूप देहली से १० मील की दूरी पर गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ की स्थापना हुई ।

सन् १९१५ में हरियाणा प्रान्त में श्री चौधरी पीरूसिंह जी आदि उत्साही सज्जनों द्वारा जिला रोहतक के मटिन्डू ग्राम के समीप यमुना की एक छोटी नहर के किनारे अत्यन्त रमणीक स्थान पर गुरुकुल की एक और शाखा खोली गई, जो "गुरुकुल मटिण्डू" के नाम से प्रसिद्ध है । कुछ समय बाद सूपा (गुजरात) में तथा हरियाना के भैंसवाल, झज्झर आदि स्थानों पर भी शाखा गुरुकुल खुले ।

इस प्रकार गुरुकुल रूपी वृक्ष निरन्तर फलता फूलता जा रहा था । सन् १९०२ में जिस गुरुकुल का बीजारोपण किया गया था वह १५ वर्ष के थोड़े से समय में ही एक ऐसे विशाल वृक्ष के रूप में परिवर्तित हो गया था, जिसकी छाया के नीचे सैकड़ों विद्यार्थी विद्याभ्यास कर रहे थे । गुरुकुल शिक्षा प्रणाली निरन्तर लोकप्रिय होती जाती थी गुरुकुल कांगड़ी और उसकी शाखाओं के अतिरिक्त अन्य गुरुकुल भ खुलने लगे ।

महात्मा मुन्शीराम जी गुरुकुल की स्थापना के समय से ही उस

प्रधान संचालक रहे। गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना आर्य प्रतिनिधि पंजाब द्वारा हुई थी। संयुक्तप्रान्त, बिहार, बम्बई आदि अन्य प्रान्तों में भी आर्य प्रतिनिधि सभाएं विद्यमान थीं। इन्होंने भी गुरुकुल खोलना प्रारम्भ किया। संयुक्तप्रान्त की प्रतिनिधि सभा ने वृन्दावन में गुरुकुल स्थापित किया। बिहार और बंगाल की प्रतिनिधिसभा ने वैद्यनाथ धाम में गुरुकुल खोला। मध्यप्रदेश में होशंगाबाद में गुरुकुल की स्थापना की गई। इसी प्रकार शान्ताकुंज, हरपुरजान, बेट सोहनी आदि कितने ही स्थानों पर नये नये गुरुकुल खुले।

गुरुकुल प्रणाली को केवल आर्य समाज ने ही नहीं अपनाया अपितु सनातनी, जैन आदि अन्य धर्मावलम्बियों ने भी ऋषि दयानंद के शिक्षा सम्बन्धी आदर्शों को स्वीकार कर गुरुकुल के ढंग के शिक्षणालय खोलने शुरू किये। जैनियों ने गुजरांवाला 'पंचकूला' आदि अनेक स्थानों पर गुरुकुल खोले। सनातनी विचार के लोगों ने हरिद्वार में "ऋषिकुल" की स्थापना की। इसी तरह की संस्थाएं अन्य भी अनेक स्थानों पर स्थापित की गई। बीसवीं सदी का प्रथम चतुर्थांश गुरुकुल शिक्षाप्रणाली की विजय का काल था। ब्रिटिश शासकों द्वारा प्रचारित की गई शिक्षाप्रणाली से असंतुष्ट देशसेवक लोग जिन नये स्वतंत्र शिक्षणालयों को खोलने का उद्योग करते थे, उनमें ऋषि दयानन्द के शिक्षा संबन्धी मन्तव्यों को सम्मुख रखा जाता था। उस युग में राष्ट्रीय शिक्षा की केवल एक ही कल्पना जनता के सन्मुख थी, वह थी गुरुकुल शिक्षाप्रणाली। इसमें संदेह नहीं कि आर्यसमाज और गुरुकुल की भारी यह विजय थी।

सन् १९१२ में गुरुकुल की शिक्षा समाप्त करके दो स्नातक विद्यालंकार की उपाधि से विभूषित किये गये। इस प्रकार गुरुकुल ने विश्वविद्यालय का रूप धारण किया।

# मुन्शीराम से श्रद्धानंद

महात्मा मुन्शीराम जी गुरुकुल की स्थापना के समय से ही उसके प्रधान संचालक रहे। महात्मा जी जालन्धर के निवासी थे। वे वहां के सफल व समृद्ध वकील थे। पर उनकी प्रतिभा व शक्ति केवल वकालत तक ही सीमित न थी। इन्हें आर्य समाज से असाधारण प्रेम था। ऋषि दयानंद के उपदेशों से प्रभावित होकर उन्होंने अपना जीवन आर्य समाज के अर्पण करने का निश्चय कर लिया था। जालन्धर आर्यसमाज के वे ही प्राण थे। पर उनकी अपूर्व प्रतिभा और कार्य शक्ति जालन्धर के संकुचित क्षेत्र तक सीमित नहीं रह सकती थी। कुछ ही वर्षों में वे पंजाब भर के सब से बड़े आर्य नेता हो गये। आर्यप्रतिनिधि सभा पंजाब ने उन्हें अपना प्रधान निर्वाचित किया। महात्मा मुन्शीराम जी न केवल कुशल प्रबन्धक थे, वह साथ ही प्रभावशाली प्रचारक भी थे अछूतोद्धार, शुद्धि, समाज संगठन आदि विविध क्षेत्रों में उन्होंने अद्भुत योग्यता व कार्य क्षमता प्रदर्शित की। और कुछ ही समय में उनका यश भारत के कोने कोने में व्याप्त होगया।

आर्य समाज का कार्य करते हुये महात्मा मुन्शीराम जी का ध्यान ऋषि दयानंद के शिक्षा सम्बन्धी सिद्धान्तों की तरफ आकृष्ट हुआ। उन्होंने अनुभव किया की देश में प्रचलित शिक्षा प्रणाली दूषित है। देश का उद्धार तभी हो सकता है, जब बच्चों को ब्रह्मचर्य, तपस्या व सादगी के वातावरण में रख कर शिक्षा दी जायं। ऋषि दयानन्द की गुरुकुल की कल्पना को पूर्ण रूप देने का उन्होंने संकल्प किया। गुरुकुल की स्थापना का मुख्य श्रेय उन्हीं को प्राप्त है। उन्होंने अपना तन मन धन, और सर्वस्व गुरुकुल के लिये

अर्पण किया । गुरुकुल शिक्षा प्रणाली पर उन्हें अटल विश्वास था, इसी लिये जहां उन्होंने अपने दोनों पुत्र गुरुकुल को अर्पित किये, वहां साथ ही संम्पति भी गुरुकुल को दान करदी । उनके पास जो कोठी, प्रेस, तथा अन्य संम्पत्ति थी वह गुरुकुल के अर्पण कर दी । महात्मा जी का यह 'सर्वमेध यज्ञ' वस्तुतः अद्वितीय था। गुरुकुल के स्थापना काल से सन् १९१७ तक निरन्तर १५ वर्ष महात्मा मुन्शीराम जी गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता रहे । इस बीच में गुरुकुल ने जो उन्नति की, उसकी कथा हम ऊपर लिख चुके हैं।

१५ वर्ष तक गुरुकुल का संचालन कर सन् १९१७ से महात्मा मुन्शीराम जी ने संन्यासाश्रम में प्रवेश किया। वैदिक आश्रम की मर्यादा अनुसार महात्मा जी के लिये सन्यास लेना आवश्यक था । गुरुकुल निवास महात्मा जी का वानप्रस्थ-आश्रम था । सन् १९१७ के बाद उन्होंने सन्यास धारण किया और "मुन्शीराम से श्रद्धानन्द" हो गये। सन्यासी हो कर महात्मा जी अधिक विस्तृत क्षेत्र में प्रविष्ट हुए और गुरुकुल के निवासियों ने भरे हृदय से अपने कुलपिता को विदा दी ।

सन् १९१७ में महात्मा मुन्शीराम जी के विदा होते समय गुरुकुल की क्या दशा थी, इस पर संक्षिप्त रूप से प्रकाश डालना उपयोगी है । सन् १९१७ में गुरुकुल कांगड़ी में विद्यार्थियों की कुलसंख्या ३४० थी, जिनमें से २७६ विद्यालय विभाग में और ६४ महाविद्यालय विभाग में शिक्षा प्राप्त करते थे । महाविद्यालय विभाग में वेद दर्शन संस्कृत साहित्य और आंग्लभाषा का पढ़ना प्रत्येक विद्यार्थी के लिये अनिवार्य था । इसके अतिरिक्त विस्तृत वैदिक साहित्य, आर्यसिद्धान्त रसायन, इतिहास, अर्थशास्त्र, पाश्चात्य दर्शन, कृषि और गणित ये साथ ऐच्छिक विषय थे जिनमें से कोई एक विषय विद्यार्थियों को लेना

होता था। जो विद्यार्थी विस्तृत वैदिक साहित्य को ऐच्छिक विषय के रूप में ले, उसे स्नातक होने पर वेदालंकार की, आर्य सिद्धान्त लेने वाले को सिद्धान्तालंकार की और शेष को विद्यालंकार की उपाधि दी जाती थी। महाविद्यालय विभाग में इन विविध विषयों को पढ़ाने के लिये ५ अध्यापक नियत थे। मुख्याध्यापक के पद पर गुरुकुल के स्नातक पं० यज्ञदत्त विद्यालंकार नियत थे, जो बड़ी योग्ता से विद्यालय विभाग का संचालन करते थे। ब्रह्मचारियों की चिकित्सा के लिये गुरुकुल का अपना हास्पिटल था। उसके मुख्य चिकित्सक डा० सुखदेव जी थे। डा० सुखदेव जी बड़ी ही लगन और सेवा वृत्ति के चिकित्सक थे। उनका सारा समय ब्रह्मचारियों के स्वास्थ्य की उन्नति में लगता था। गुरुकुल का आन्तरिक प्रबन्ध लाला नन्दलाल जी के हाथ में था। लाला जी अत्यन्त योग्य प्रबन्ध कर्त्ता थे वे सहायक मुख्यधिष्ठाता के पद पर नियत थे, और गुरुकुल के आन्तरिक प्रबन्ध को व्यवस्थित करने के लिये बहुत प्रयत्नशील थे। गुरुकुल कार्यालय लाला मुरारी लाल जी के हाथ में था। जो दिन रात एक कर गुरुकुल की सेवा में तत्पर रहते थे। आश्रम के अध्यक्ष मा० सुखराम जी थे, जो अपना जीवन गुरुकुल के लिये अर्पण कर त्याग का अनुपम आदर्श विद्यार्थियों के सम्मुख रख रहे थे। अभिप्राय यह है कि महात्मा मुन्शीराम जी के गुरुकुल से विदा होने के समय गुरुकुल ऐसी अवस्था में पहुंच चुका था जब उसका प्रत्येक विभाग अत्यन्त योग्य हाथों में था, और सब लोग मिल कर गुरुकुल की उन्नति के लिये तत्पर थे।

* * *

: ५ :

# आगे प्रगति

सन् १९१७ में महात्मा मुन्शीराम जी सन्यास लेकर गुरुकुल से विदा हुए थे। उनके बाद आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान लाला रामकृष्ण जी गुरुकुल मुख्याधिष्ठाता नियत हुए। वे जालन्धर रह कर ही गुरुकुल का प्रबन्ध करते थे और उनके प्रतिनिधि रूप में प्रो० सुधाकर जी गुरुकुल में रह कर कार्य करते थे। आचार्य का काम प्रो० रामदेव जी को दिया गया। प्रो० रामदेव जी सन् १९०५ में गुरुकुल में आये थे, और कुछ वर्ष मुख्याध्यापक का कार्य करने के अनन्तर जब गुरुकुल में महाविद्यालय खुला, तो उपाचार्य के पद पर नियत हुए थे। गुरुकुल में कार्य करते हुए उन्हें ग्यारह वर्ष हो चुके थे और यहां का उन्हें अच्छा अनुभव था। इस समय सभा के प्रधान, पण्डित विश्वम्भरनाथ जी बने जो बहुत समय से उप प्रधान का कार्य करते रहे थे। गुरुकुल का यह प्रबन्ध १९२० तक रहा। इस बीच भी में गुरुकुल की निरंतर उन्नति हुई। सन् १९१९ में लुधियाना ज़िले के रायकोट नामक स्थान पर गुरुकुल की एक शाखा खोली गई। इसके संस्थापक श्री स्वामी गंगागिरी जी महाराज हैं। गुरुकुल रायकोट की आधारशिला श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज द्वारा रक्खी गई थी।

आन्तरिक दृष्टि से भी इस काल में गुरुकुल की अच्छी उन्नति

हुई । सन् १९१८ में गुरुकुल में राष्ट्र प्रतिनिधि सभा 'मौक पार्लियामैन्ट, का सूत्रपात हुआ । इस सभा में ब्रह्मचारियों के मन्त्रिमण्डल 'केबिनेट'' द्वारा किसी गम्भीर विषय पर मस्विदा पेश किया जाता है, और उस पर बाकायदा पार्लियामेन्टरी ढंग से वाद-विवाद होता है । सन् १९१८ से बराबर राष्ट्र प्रतिनिधि सभा के अधिवेशन प्रतिवर्ष होते रहे, और इन अधिवेशनों में अनेक बार देश के नेता भी सम्मिलित हो चुके हैं ।

इसी काल में कलकत्ता यूनिवर्सिटी कमीशन के प्रधान डा० सैडलस, सर आशुतोष मुकर्जी के साथ गुरुकुल पधारे । गुरुकुल का अवलोकन करके वे बहुत प्रभावित हुए । उन्होंने अपने एक पत्र में गुरुकुल के संबन्ध में विचार प्रगट किये थे—"मैं समझता हूं कि जिस शिक्षा विधि में मातृभाषा को प्रथम और सबसे प्रमुख स्थान दिया जावे, वहीं यह संभव है कि मन का स्वतन्त्र विकास होकर मानसिक वृत्तियों तथा भावों पर प्रभुत्व प्राप्त हो सके ।—मेरी हार्दिक इच्छा है कि गुरुकुल का विकास राज्य द्वारा स्वीकृत एक स्वतन्त्र विश्वविद्यालय के रूप में हो सके" ।

डा० सैडलर के अतिरिक्त भूतपूर्व भारत सचिव मिस्टर मान्टेग्यू महोदय के प्राइवेट सेक्रेटरी श्रीयुत किश और राइट आनरेबल श्री श्रीनिवास शास्त्री महोदय गुरुकुल आये । श्रीयुत किश ने गुरुकुल के संबन्ध में लिखा था—"प्रबन्ध के साधनों की पूर्णता, कार्यकर्त्ताओं के विश्वास और ब्रह्मचारियों की प्रत्यक्ष प्रसन्नता ने मुझ पर इतना प्रभाव डाला है कि मैं उसका इन थोड़ी सी पंक्तियों में वर्णन नहीं कर सकता ।"

श्री श्रीनिवास शास्त्री ने अपने एक भाषण में ये विचार प्रकट

किये थे—'शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी रहे या भारतीय भाषायें, इस प्रश्न पर बहुत वाद-विवाद है। मेरा अपना विचार यह रहा है कि विद्यालय विभाग में शिक्षा का माध्यम भारतीय भाषाएं ही रहनी चाहियें, परन्तु महाविद्यालय विभाग की पढ़ाई अंग्रेजी के माध्यम द्वारा होनी चाहिये। परन्तु अब गुरुकुल को देख कर मैं अपने इस विचार से परे हट रहा हूं।"

यह सचमुच गौरव की बात है, कि गुरुकुल ने श्री श्रीनिवास शास्त्री जी जैसे गम्भीर विचारक को भी अपने मन्तव्यों पर पुनः विचार करने के लिये बाधित किया।

सन्यासी होने के बाद स्वामी श्रद्धानन्द जी ने आर्य समाज का एक प्रमाणिक इतिहास लिखने का विचार किया। इस कार्य को वे गुरुकुल कुरुक्षेत्र में बैठ कर करना चाहते थे। पर प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामकृष्ण जी और गुरुकुल के आचार्य श्री रामदेव जी के आग्रह तथा अन्तरंग सभा की प्रार्थना पर स्वामी जी ने गुरुकुल कांगड़ी में ही बैठकर इतिहास लिखने का निश्चय किया। इतिहास के लिये स्वामी जी ने बहुत सी सामग्री एकत्रित की। पर इस बीच में गढ़वाल प्रान्त में भयंकर दुर्भिक्ष पड़ा। यह प्रदेश गुरुकुल के समीप ही था अतः संभव नहीं था कि गुरुकुलवासी इसकी उपेक्षा कर सकें। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने दुर्भिक्ष निवारण के लिए एक अपील समाचार पत्रों में प्रकाशित की और स्वयं गुरुकुल के ब्रह्मचारियों के साथ गढ़वाल प्रस्थान किया। स्वामी जी की अपील पर ७० हजार के लगभग रुपया एकत्रित हुआ था। गुरुकुल के विद्यार्थियों को जनता की क्रियात्मक सेवा करने का यह बहुत उत्तम अवसर मिला था। उन्होंने इसका पूर्ण उपयोग किया और १९१८ की ग्रीष्मऋतु

में गढ़वाल में खूब काम किया ।

पर स्वामी जी बहुत देर तक गुरुकुल नहीं रह सके । सन् १६१६ में भारत में रौलट एक्ट के विरुद्ध आन्दोलन शुरू हुआ । महात्मा गांधी ने सत्याग्रह की घोषणा की । अनेक स्थानों पर सरकार और जनता का संघर्ष हुआ । अमृतसर में जलियानवाला बाग का हत्याकाण्ड इसी समय हुआ । स्वामी जी भी इस आन्दोलन में सम्मिलित हुए सितम्बर सन् १६८६ में जब कांग्रेस का अधिवेशन अमृतसर में हुआ तो स्वामी जी उसकी स्वागत समिति के अध्यक्ष निर्वाचित हुए, यह समय देश में तीव्र राजनीतिक आन्दोलन का था । सर्वत्र भारत में ब्रिटिश शासन के विरुद्ध भावना प्रबल हो रही थी । ऐसी स्थिति में लोग राष्ट्रीय शिक्षा की आवश्यकता को भलीभाँति अनुभव करने लगे थे और गुरुकुल का महत्व जनता की दृष्टि में बढ़ रहा था । ऐसे समय में गुरुकुल को एक अत्यन्त प्रभावशाली नेता की आवश्यकता थी । विस्तृत राजनैतिक क्षेत्र में पदार्पण करने के बाद भी स्वामी जी से फिर गुरुकुल के हित की सदा चिंता रहती थी तब गुरुकुल प्रेमी बार बार स्वामी जी से फिर गुरुकुल संभालने का अनुरोध करने लगे, तो फरवरी १६२० में स्वमी जी फिर गुरुकुल लौट आये, और पहिले की तरह मुख्यधिष्ठाता तथा आचार्य दोनों पदों चार्ज ले लिया ।

## विश्वविद्यालय की नई व्यवस्था

गुरुकुल के इतिहास में सन् १६२१ का बड़ा महत्व है । गुरुकुल का स्वरूप क्या हो, इस विषय में प्रतिनिधि सभा के नेताओं में देर से मतभेद चला आता था । गुरुकुल का विकास एक स्वतन्त्र विश्वविद्यालय के रूप में हो रहा था । उसके संस्थापकों ने भारत में

प्रचलित शिक्षा को दूषित समझ कर ऋषि दयानन्द के शिक्षा संबन्धी आदर्शों को क्रिया में परिणत करने के लिये गुरुकुल की स्थापना की थी । पर कई लोगों का यह विचार था कि गुरुकुल केवल एक धार्मिक विद्यालय 'डिविनिटी कालेज' है । सामान्य शिक्षा देना गुरुकुल का काम नहीं है । अब सन् १९२१ में इस वाद विवाद और मत भेद का अन्त कर गुरुकुल के स्वरूप को सर्वसम्मत रूप से निर्णीत करने का प्रयत्न किया गया और इसी के अनुसार २२ मार्च १९२१ को आर्य प्रतिनिधि सभा ने गुरुकुल के सम्बन्ध में निम्नलिखित प्रस्ताव स्वीकृत किया ।

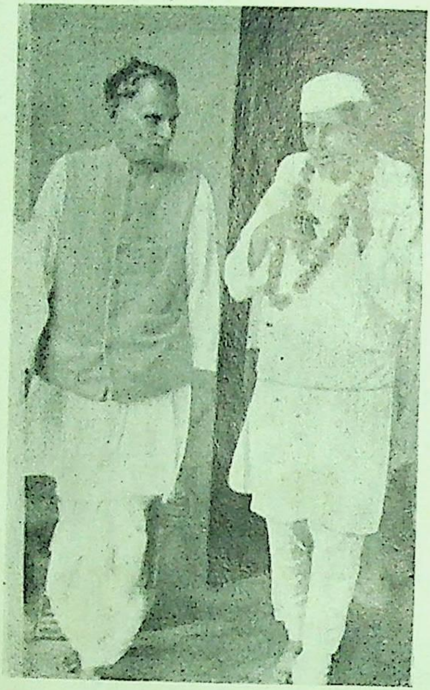
१. शिक्षा संबन्धी क्षमता को बढ़ाने के लिये आवश्यकता होती है कि वर्तमान गुरुकुल को ऐसे विश्वविद्यालय के रूप में परिणत किया जाय, जिससे भिन्न २ विषयों में शिक्षा दी जा सके । इस लिये निश्चय हुआ कि इस विश्वविद्यालय के साथ निम्नलिखित महाविद्यालय संबन्धित होंगे ।

(क) वेद महाविद्यालय ।
(ख) साधारण महाविद्यालय ।
(ग) आयुर्वेद महाविद्यालय ।
(घ) कृषि महाविद्यालय ।

२. सं० (क), (ख) का गुरुकुल में पहिले से परस्पर सम्बन्ध अधिक रहा है, अब वह उचित परिवर्तन के पश्चात् कांगड़ी में पृथक् २ चलाये जावें । उनका वार्षिक व्यय विद्यालय के ऊपर लगभग बराबर हुआ करे । अब तक का एकत्रित धन व सम्पति या जो आगे को प्राप्त हो, इन्हीं के अर्पित रहे । जिसका नाम गुरुकुल धन होगा सिवाय उसके जो किसी विशेष कार्य के लिये प्राप्त हो ।



पुण्यभूमि में गुरुकुल के भवन



पं० जवाहरलाल नेहरू संग्रहालय में

वेद महाविद्यालय



३. सं० ग, घ, ङ, महाविद्यालय उनके सम्बन्धी उचित धन प्राप्त होने पर तब प्रारम्भ किये जायेंगे, जब यह सभा संचित धन और स्थानादि का विचार करके आज्ञा दे ।

४. सब विद्यालय जो सभा की ओर से या सभा की आज्ञानुसार गुरुकुलों के नाम खोले हुये हों या खोले जायें सं० (ख) महाविद्यालय से संबन्धित हों ।

५. ग, घ, ङ, महाविद्यालय कांगड़ी से बाहर खोले जांय और उनमें गुरुकुल विद्यालय और अन्य विद्यालयों के छात्र अन्तरंग सभा के बनाये नियमानुसार प्रविष्ट होंगे ।

६. आयुर्वेदिक और कृषि महाविद्यालयों के पृथक् २ खुलने तक इन विषयों की जो पढ़ाई अब होती है, वह केवल विशेष विषय के रूप में ही साधारण महाविद्यालय में ही होती रहेगी परन्तु आवश्यक विषयों में इन विद्यार्थियों की योग्यता न्यून न हो । और उन्हें कोई पृथक् प्रमाण पत्र नहीं दिया जायगा, और इन विषयों पर वही धन व्यय होगा जो इनके लिये प्राप्त हो । गुरुकुल धन से जो वार्षिक व्यय अब होता है, वह १० वर्ष में १० प्रतिशत के हिसाब से कम करके बन्द किया जायगा ।

७. इन सब की पाठविधि और नियम अन्तरंग सभा बनायेगी ।

८. इस विश्वविद्यालय के प्रबन्ध के लिये एक विद्यासभा बनाई जावे । इसके बनाने तक अन्तरंग सभा कार्य करेगी ।

गुरुकुल का क्या उद्देश्य है ? गुरुकुल का क्या स्वरूप है ? क्या गुरुकुल केवल धार्मिक विद्यालय है ? आदि सभी विषयों का निर्णय आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिवेशन में स्वीकृत हुवे इस प्रस्ताव से हो जाता है । गुरुकुल एक विश्वविद्यालय है, जिनमें भिन्न भिन्न विषयों की शिक्षा दी जाती है और शिक्षा संबन्धी क्षमता को बढ़ाने

के लिये सदा प्रयत्न किया जाता है। यह बात इस प्रस्ताव द्वारा बिलकुल स्पष्ट हो गई है। साथ ही इस प्रस्ताव में यह भी निश्चय किया गया है कि गुरुकुल का संचालन करने के लिये एक पृथक् विद्यासभा का निर्माण किया जाय। यह निर्णय आगे चलकर किस प्रकार कार्य में परिणत हुआ, इस पर यथा स्थान प्रकाश डालेंगे।

स्वामी श्रद्धानन्द जी फरवरी १९२० से अक्तूबर १९२१ तक लगभग डेढ़ वर्ष गुरुकुल में रहे। इस काल में अनेक नवीन बातें गुरुकुल में शुरू हुई। "सद्धर्म प्रचारक" के बन्द हो जाने के बाद गुरुकुल का कोई मुखपत्र नहीं था। अब "श्रद्धा" नामक नये साप्ताहिक पत्र का प्रारम्भ किया गया। श्रद्धा के सम्पादक स्वामी जी महाराज स्वयं थे। न केवल आर्यजगत में, अपितु बाहर भी "श्रद्धा" की खूब प्रसिद्धि हुई गुरुकुल को लोकप्रिय बनाने में इस पत्र से बड़ी सहायता मिली। वेद संबन्धी अन्वेषण का कार्य गुरुकुल में प्रारम्भ करने का विचार तो बहुत दिनों से था। पर उसे क्रिया में परिणत नहीं किया जा सका था। अब सन् १९२० में गुरुकुल में बाकायदा "अनुसंधान विभाग" खोल दिया गया। एक योग्य स्नातक को वैदिककोष तैयार करने को नियत किया गया और श्री पण्डित देवशर्मा जी वैदिक खोज के लिये विशेष रूप से रखे गये थे। यह भी यत्न किया गया कि विविध गुरुकुलों को एक सूत्र में बांधा जाय। गुरुकुल वृन्दावन के कार्यकर्त्ताओं से इस विषय में बातचीत भी प्रारम्भ हुई।

पर स्वामी जी देर तक गुरुकुल में न रह सके। इस समय देश में प्रबल असहयोग आन्दोलन प्रारम्भ हो रहा था। महात्मा गांधी ने ६ मास में स्वराज्य प्राप्त करने का प्रोग्राम देश के सम्मुख रखा था सारे देश में एक नई जागृति, नई चेतना उत्पन्न हो रही थी। यद्यपि स्वामी जी के महात्मा गांधी से अनेक विषयों में मत भेद थे,

पर इस जागृति के काल में वह स्वराज्य आन्दोलन से अपने को पृथक् नहीं रख सके । प्रधान रामकृष्ण जी को एक पत्र में उन्होंने लिखा था—"इस समय में मेरी सम्मति में "असहयोग" की व्यवस्था के क्रियात्मक प्रचार पर ही मातृभूमि का भविष्य निर्भर है । यदि आन्दोलन अकृतकार्य हुआ और महात्मा गांधी को सहायता न मिली, तो देश की स्वतन्त्रता का प्रश्न ५० वर्ष पीछे जा पड़ेगा। यह जाति के जीवन या मरण का प्रश्न हो गया है, इसलिये मैं इस काम में शीघ्र ही लग जाऊंगा ।"

असहयोग आन्दोलन में कार्य करने की हार्दिक प्रेरणा ही थी जो स्वामी श्रद्धानन्द जी को गुरुकुल से बाहर ले गयी। यदि स्वामी जी कुछ समय तक और गुरुकुल के कर्णधार रहते, तो अपने अनेक प्रसिद्ध स्वप्नों को पूर्ण कर सकते थे । स्वामी जी गुरुकुल में आयुर्वेदिक कृषि और व्यवसाय महाविद्यालय स्थापित करना चाहते थे । आयुर्वेद और कृषि की श्रेणियां तो खोल भी दी गई थीं । इनमें से आयुर्वेद की श्रेणी इस समय एक पृथक् महाविद्यालय के रूप में परिवर्तित भी हो चुकी है। पर कृषि और व्यवसाय के महाविद्यालय अब तक गुरुकुल में नहीं खुल सके थे। स्वामी जी श्रद्धा के पृष्ठों में बार बार अपनी यह इच्छा प्रकट की थी, कि गुरुकुल में व्यवसाय महाविद्यालय (Industrial College) शीघ्र खुल जाना चाहिये। कला भवन के लिये वह बार बार अपील कर चुके थे। अपने बलिदान से दो ढाई मास पूर्व स्वामी जी ने "माई स्पेशल अपील" शीर्षक से एक लेख अपने अंग्रेजी सप्ताहिक पत्र "लिबरेटर" में लिखा था। इसमें उन्होंने शिल्प व व्यवसाय महाविद्यालय के लिये धन की विशेष रूप से अपील की थी ।

* * *

: ६ :

# बाढ़ और पुनर्निर्माण

## पं० विश्वम्भरनाथ जी

१९२१ में स्वामी श्रद्धानन्द जी के चले जाने पर पं० विश्वम्भरनाथ जी गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता नियत हुए। पण्डित जी आर्यसमाज के पुराने कार्यकर्त्ता थे। गुरुकुल की स्थापना के समय से ही आप गुरुकुल की स्वामिनी सभा के सदस्य थे और अनेक वार कोषाध्यक्ष तथा उप प्रधान के पद पर नियुक्त हो चुके थे। महात्मा मुन्शीराम जी के सन्यास लेने पर दो वर्ष के लिये वे सभा के प्रधान भी रहे पं० जी सभा के ठोस कार्यकर्त्ता थे और महात्मा मुन्शीराम जी को इन पर दृढ़ विश्वास था। जिस समय महात्मा जी सन्यास लेने लगे, तो पण्डित जी को गुरुकुल में आ कर कार्य सम्भालने के लिये प्रेरणा करते हुए उन्होंने लिखा था कि "उस उद्देश्य की पूर्ति के लिये जो मेरे और तुम्हारे लिये इतना प्रिय रहा, तुम्हें साहस पूर्वक बाहर निकल आना चाहिये।" अब १९२१ में पण्डित जी ने गुरुकुल का कार्य सम्भाला। आर्य समाज के वीतराग सन्यासी स्वामी सत्यानन्द जी आचार्य नियत हुये और शिक्षा संबन्धी कार्य उपाचार्य के रूप में प्रो० रामदेव जी के हाथ में रहा। १९२४ में स्वामी सत्यानन्द जी के त्याग पत्र दे देने पर प्रो० रामदेव जी आचार्य बने

और उपाचार्य का काम पं० विश्वनाथ जी विद्यालंकार के हाथ में आया ।

पं० विश्वम्भरनाथ जी १९२१ से १९२७ तक गुरुकुल में मुख्याधिष्ठाता रहे। यह काल गुरुकुल के इतिहास में बड़ा घटना पूर्ण है । आन्तरिक प्रबन्ध और व्यवस्था की दृष्टि से इस समय में गुरुकुल की बहुत उन्नति हुई पं० विश्वम्भरनाथ जी आर्थिक प्रबन्ध में बहुत दक्ष थे। उन्होंने गुरुकुल के बजट को नये ढंग से व्यवस्थित किया और गुरुकुल के व्यय को ब्रह्मचारियों के भरणपोषण और शिक्षा—इन दो विभागों में नियमित रूप से विभक्त कर दिया और यह नियम बनादिया कि एक का धन दूसरे विभाग में व्यय न हो । भरण पोषण के लिये केवल वह रुपया व्यय हो जो संरक्षकों से फीस द्वारा या छात्रवृत्ति की आमदनी से प्राप्त होता है । शिक्षा के लिये व्यय, दान तथा उपाध्याय वृत्तियों से सूद का धन ही हो। साथ ही खर्चे को कम करने के लिये और गुरुकुल की आय तथा व्यय को बराबर करने के लिये बहुत उद्योग किया गया ।

गुरुकुल को बाकायदा विश्वविद्यालय के रूप में परिवर्तित करने का प्रस्ताव सन् १९२१ में पास किया जा चुका था। अब सन् १९२३ में शिक्षा विषयक प्रबन्ध के लिये पृथक् शिक्षापटल (Board of Education) की स्थापना की गई। शिक्षा पटल में गुरुकुल के अध्यापकों के अतिरिक्त तीन अन्य तत्वों का समावेश किया गया—

१. अन्तरंग सभा के प्रतिनिधि
२. स्नातक मंडल के प्रतिनिधि
३. बाहर के विद्वान ।

शिक्षापटल का निर्माण निम्नलिखित प्रकार से करने की व्यवस्था की

गई ।

१-आर्य प्रतिनिधि सभा का प्रधान ।

१-गुरुकुल कांगड़ी का मुख्याधिष्ठाता ।

१-गुरुकुल कांगड़ी के प्रत्येक महाविद्यालय का अध्यक्ष ।

१-गुरुकुल काँगड़ी का आचार्य ।

६-अन्तरंग सभा द्वारा निर्वाचित ६ महानुभाव जिनमें से न्यून से न्यून ३ सज्जन शिक्षा कला में प्रवीण होंगे ।

३-संवन्धित महाविद्यालयों के उपाध्यायों की ओर से निर्वाचित तीन प्रतिनिधि ।

१-दयानन्द सेवासदन के सदस्यों और गुरुकुल के स्थिर सेवकों का निर्वाचित एक प्रतिनिधि ।

२-गुरुकुल के स्नातकों की ओर से निर्वाचित एक प्रतिनिधि ।

गुरुकुल विश्वविद्यालय का मुख्याधिष्ठाता पदाधिकार से शिक्षापटल का प्रधान और प्रस्तोता मन्त्री होता है । कार्यारम्भ के लिये ७ की उपस्थिति आवश्यक है । शिक्षापटल के वन जाने से गुरुकुल में शिक्षा विषयक क्षमता बढ़ाने में बहुत सहायता मिली । पटल ने पहिले मंत्री (प्रस्तोता) गुरुकुल के सुयोग्य स्नातक पं० महानन्द जी सिद्धान्तालंकार नियत किये ।

## कन्या गुरुकुल व अन्य नये शाखा गुरुकुल

इस काल में गुरुकुल की अनेक नई शाखायें खुली । १९२३ में दिवाली के दिन देहली नगर के दरियागंज मुहल्ले में एक बड़ी कोठी किराये पर ले कर कन्या गुरुकुल की स्थापना की गई । १९२१ में स्वामी श्रद्धानन्द जी ने गुरुकुल कांगड़ी की वार्षिकोत्सव के अवसर पर यह घोषणा की थी, कि दिल्ली निवासी सेठ रघुमल जी कन्या

गुरुकुल के लिये एक लाख रुपया दान देने को उद्यत हैं। सेठ रघुमल गुरुकुल शिक्षाप्रणाली के अनन्य भक्त थे। इससे पूर्व १९१२ में वे दिल्ली के समीप गुरुकुल की शाखा खोलने के लिये एक लाख का दान दे चुके थे। अब उन्होंने ही कन्या गुरुकुल की स्थापना के लिये भी आर्य प्रतिनिधि सभा को प्रोत्साहित किया। गुरुकुल काँगड़ी की स्थापना के समय से ही कन्याओं के लिए पृथक् गुरुकुल को खोलने का विचार आता था। महात्मा मुन्शीराम जी देर से इसके लिये आन्दोलन कर रहे थे। सद्धर्मप्रचारक में उन्होंने अनेक बार आर्य जनता का ध्यान इस ओर आकृष्ट किया था। इसीलिये गुरुकुल कांगड़ी की नियमावली में यह टिप्पणी देर से प्रकाशित हो रही थी, कि साधन जुट जाने पर कन्याओं की शिक्षा के लिये भी पृथक् गुरुकुल की स्थापना कर दी जायगी। अब सेठ रघुमल जी के दान से सन् १९२३ में इस विचार को क्रिया में परिणत होने का अवसर मिला।

चार साल तक कन्या गुरुकुल दिल्ली में रहा। पहली ५ श्रेणियां वहां शुरु में ही खोलदी गई थीं। धीरे धीरे आठ श्रेणियों का विद्यालय विभाग और तीन उच्च कक्षाओं का महाविद्यालय विभाग भी स्थापित किया गया।

पर दिल्ली नगर में कन्या गुरुकुल के लिये उपयुक्त स्थान नहीं मिला अतः चार वर्ष बाद उसे देहरादून ले जाया गया। प्रारम्भ में दो कोठियां किराये पर ले कर इस संस्था को वहां स्थापित किया गया पर कोठियों के कमरे गुरुकुल के लिये पर्याप्त नहीं थे। इसलिये टीन के शैड बनवा कर उससे काम चलाया गया १९३० में देहरादून में राजपुर रोड पर दो बड़ी कोठियां कन्या गुरुकुल के लिये क्रय कर ली गयीं। इन कोठियों के साथ जमीन पर्याप्त थी। धीरे धीरे इनमें

नई इमारत बनाई गई। इस समय देहरादून में कन्या गुरुकुल की भूसम्पति कई लाख कीमत की है, और यह संस्था बहुत उन्नति कर चुकी है।

गुजरात प्रान्त के निवासियों की चिरकाल से इच्छा थी, कि गुरुकुल कांगड़ी की एक शाखा उनके प्रान्त में भी खोली जावे। श्री पं० ईश्वरदत्त विद्यालंकार, श्री दयाल जी लल्लू भाई और श्री झीणा भाई देवा भाई के अनथक परिश्रम से सन् १९२३ में गुरुकुल के लिये २५ हजार रुपये नकद जमा हुये और गुजरात में गुरुकुल सभा का निर्माण हुआ। सूरत जिले की बादौली तहसील में पूर्णा नदी के सुरम्य तट पर १८ फरवरी सन् १९२४ को गुरुकुल की एक शाखा स्थापित की गई। सूपा ग्राम के निकट होने के कारण इसका नाम 'गुरुकुल सूपा' रखा गया। गुरुकुल की आधार शिला श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के कर कमलों द्वारा रखी गई थी। गुरुकुल सूपा की उन्नति बड़ी तेजी से हुई। अब इसमें १० श्रेणियां हैं और प्रतिवर्ष इसके विद्यार्थी गुरुकुल कांगड़ी की अधिकारी परीक्षा पास कर महाविद्यालय विभाग में प्रविष्ट होते हैं।

१९२४ में ही हरियाणा प्रान्त में झज्झर नामक स्थान पर गुरुकुल की एक शाखा स्थापित हुई। इसकी स्थापना में महाशय विश्वम्भरनाथ जी, स्वामी परमानन्द जी और स्वामी ब्रह्मनन्द जी ने बड़ा पुरुषार्थ किया।

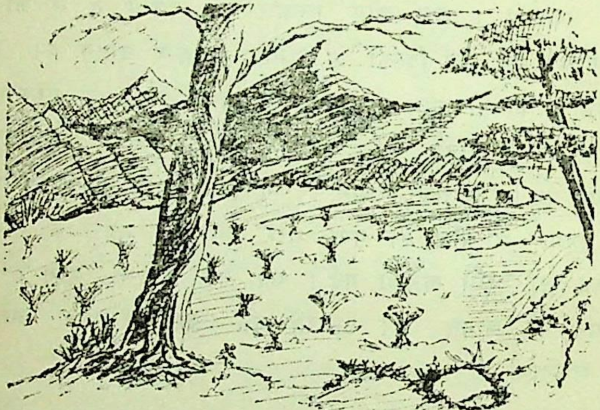
सन् १९२४ में गुरुकुल कांगड़ी की एक शाखा भटिंडा में खुली इसकी भी आधार शिला श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा रखी गई।

इस प्रकार गुरुकुल की चार नई शाखायें १९२३-२४ में स्थापित हुई। गुरुकुल के विस्तार की दृष्टि से ये वर्ष बड़े महत्व के हैं।

सन् १९२४ में जहां गुरुकुल का इतना विस्तार हुआ, वहां गुरुकुल पर सबसे बड़ी विपत्ति भी आई। गुरुकुल गंगा के तट पर स्थित था सितम्बर १९२४ में असाधारण वर्षा के कारण गंगा में भयंकर बाढ़ आई और गुरुकुल की बहुत इमारतें नष्ट हो गयीं। उन दिनों गुरुकुल में बड़ी छुट्टियां थीं। विद्यार्थी प्रायः बाहर गये हुए थे जो व्यक्ति वहां थे उनकी बड़ी कठिनता से रक्षा हुई। इमारतों का एक लाख से ऊपर का नुकसान हुआ इस भयंकर बाढ़ के कारण गुरुकुल के स्थान परिवर्तन का प्रश्न बहुत महत्वपूर्ण हो गया। प्रतिनिधि सभा में इस विषय में अनेक पक्ष थे। कुछ लोग गुरुकुल को पंजाब में ले जाना चाहते थे। कईयों का मत दिल्ली के समीप गुरुकुल बनाने का था। अनेक महानुभाव कांगड़ी ग्राम के समीप ही दूसरी जगह पर गुरुकुल की नई इमारत बनाना चाहते थे। पर विश्वम्भरनाथ जी का पक्ष गंगा के पश्चिमी तट पर सुरक्षित स्थान पर गुरुकुल रखने का था। पं० जी का पक्ष बहुमत से पास हो गया और गंगा की नहर के साथ गुरुकुल के लिये नई भूमि खरीदी गई। अब तक इस नई भूमि पर १५ लाख से ऊपर की लागत की इमारतें बन चुकी हैं और अनेक इमारतें अभी अवशिष्ट हैं।

१९२५ में गुरुकुल में "व्रताभ्यास" की परिपाटी डाली गई। इसका उद्देश्य यह है कि ब्रह्मचारी अपने वैयक्तिक और सामाजिक कर्त्तव्यों को दण्ड के भय से नहीं, किन्तु उनकी उपयोगिता और महत्व समझ कर पूरा करें। प्रत्येक ब्रह्मचारी के पास एक व्रताभ्यास पंजिका रहती है जिसमें प्रतिदिन वह स्वयं लिखता है कि किन किन नियमों का उसने पालन किया, किन किन का नहीं किया। जिन नियमों का पालन न किया हो उनके संबन्ध में कारण देना होता है। मास के अन्त में

इस पंजि[illegible] शिक्षा के क्षेत्र में गुरुकुल का यह मौलिक परीक्षण है । अखिल एशियाटिक शिक्षा परिषद् में इस पद्धति को बहुत पसन्द किया गया और इसे सर्वत्र प्रारम्भ करने की सिफारिश भी की गई ।



शिवालक का दृश्य

* * *

: ७ :

# रजत जयन्ती

१९२७ में गुरुकुल को स्थापित हुए पूरे २५ वर्ष हो गये थे। अत: इस वर्ष का वार्षिकोत्सव रजतजयन्ती (सिलवर जुबली) के रूप में बड़ी धूमधाम के साथ मनाया गया। इसमें ५० हजार से अधिक यात्री विविध प्रान्तों से सम्मिलित हुए। इन में महात्मा गांधी, पं० मदनमोहन मालवीय, श्री निवास आयंगर, बाबू राजेन्द्र प्रसाद, सेठ जमुना लाल बजाज, डा० मुन्जे और श्री शंकरलाल बैंकर के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। इनके अतिरिक्त प्रिन्सीपल ध्रुव साधुवर वास्वानी, डा० अविनाशचन्द्र जी दास, श्रीयुत पीयूषकान्ति घोष आदि अनेक प्रसिद्ध लेखक भी जयन्ती महोत्सव में पधारे थे। आर्य समाज के तो प्राय: सभी नेता, सन्यासी और विद्वान इस अवसर पर उपस्थित थे। गुरुकुल के २५ सालों के उत्सव में यह पहला ही उत्सव था, जब इस संस्था के संस्थापक श्री स्वामी श्रद्धानंद जी महाराज उपस्थित नहीं थे। जयन्ती महोत्सव के लगभग ३ मास पूर्व २३ सितम्बर १९२६ को दिल्ली में उनका बलिदान हुआ था। इस बलिदान के कारण जयन्ती महोत्सव के आनन्द पूर्ण समारोह में एक गंभीर वेदना सी मिली हुई थी। जयन्ती महोत्सव बड़ी सफलता के साथ सम्पन्न हुआ। उस अवसर पर १५३०००) रु० नकद प्राप्त हुवे और १३००००) रु० की प्रतिज्ञाएँ हुई। इन प्रतिज्ञाओं का प्राय: साराधन

पीछे से प्राप्त हो गया था।

जयन्ती को सफलता के साथ पूर्ण करवा कर श्री पण्डित विश्वम्भरनाथ जी गुरुकुल से विदा हो गये। पण्डित जी का यह सिद्धान्त था कि किसी व्यक्ति को एक संस्था में ५ वर्ष से अधिक संचालक रूप में नहीं रहना चाहिये। इसके अनुसार उन्होंने त्याग पत्र दे दिया और श्री आचार्य रामदेव जी उनके स्थान पर मुख्यधिष्ठाता नियत हुये।

## आचार्य रामदेव जी

आचार्य रामदेव जी सन् १६०५ में गुरुकुल आये थे। उन्होंने गुरुकुल का कार्य अंग्रेजी के अध्यापक के रूप में प्रारंभ किया था। पर वे लगन के पक्के थे। और गुरुकुल के लिये रात दिन एक कर कार्य करने में उन्हें आनन्द आता था। इसी का परिणाम यह हुआ कि गुरुकुल के संचालन में उनका हाथ निरन्तर बढ़ता ही गया। वे अध्यापक से मुख्याध्यापक, फिर उपाचार्य फिर आचार्य और अब १६२७ में मुख्याधिष्ठाता के पद पर अधिष्ठित हुए। इन २२ वर्षों में वे शिक्षाविषयक प्रबन्ध के प्रायः कर्त्ता धर्त्ता ही रहे। यही नहीं, गुरुकुल के संचालन में भी उनका प्रमुख भाग रहा। धन एकत्रित करने में वे महात्मा मुन्शीराम जी के दायें हाथ थे। उनके व्याख्यानों की समाज में धूम थी। उनमें एक प्रकार की अद्भुतशक्ति थी, जो अटल विश्वास, त्याग और लगन से मनुष्य में विकसित होती है।

सन् १६२७ से १६३३ तक आचार्य रामदेव जी गुरुकुल में मुख्याधिष्ठाता रहे। इस काल में गुरुकुल की नई इमारत के लिये धन एकत्रित किया गया आचार्य रामदेव जी के प्रयत्न से लाखों रुपया गुरुकुल को दान में मिला। नई भूमि का क्रय कर उसपर इमारतें बननी शुरू हुई। सन् १६३० में गुरुकुल अपनी पुरानी भूमि को सदा के लिये नमस्कार कर नये स्थान पर आ गया। गंगा के तट वाली उस

पुरानी भूमि का कुलवासियों के हृदय में एक विशेष आकर्षण था। उस स्थान पर तपस्वी मुन्शीराम ने अपने तप को सिद्ध किया था। भरे हृदयों से कुलवासियों ने उस स्थान का परित्याग किया और एक बृहद् यज्ञ के साथ नवीन भूमि में निवास का आरम्भ हुआ।

बीस लाख के लगभग मूल्य की इमारतों को तैयार करने के लिये धन एकत्रित करना साधारण बात न थी। आचार्य रामदेव जी ने इसके लिये अनथक परिश्रम किया उन्हीं के प्रभाव व श्रम का यह परिणाम था, कि आर्य जनता ने गुरुकुल की नई इमारतों के लिये दिल खोलकर दान दिया। गुरुकुल के अध्यापकों व अन्य गुरुकुल प्रेमियों ने भी धन एकत्रित करने में आचार्य जी को सहयोग दिया। इसी प्रकार अन्य भी अनेक महानुभावों ने अत्यन्त उदारता पूर्वक इस समय गुरुकुल की नई इमारतों के लिये दान दिया। उन्हीं प्रयत्नों से भयंकर जल-प्रवाह बाढ़ द्वारा हुआ नुकसान पूरा हो सका।

## सत्याग्रह आन्दोलन और गुरुकुल

सन् १९३० में महात्मा गांधी के नेतृत्व में सत्याग्रह संग्राम का प्रारम्भ हुआ। सारे भारत में एक आग सी धधक उठी। हजारों की संख्या में देशभक्त लोग सत्याग्रह आन्दोलन में कैद होने लगे। सरकारी स्कूल और कालेज तक इसके प्रभाव से न बच सके इस दशा में यह कैसे संभव था कि गुरुकुल पर इस देश व्यापी आन्दोलन का प्रभाव न होता गुरुकुल एक राष्ट्रीय संस्था है। जब कभी देश, जाति व धर्म के लिये त्याग की आवश्यकता हुई, गुरुकुल कभी पीछे नहीं रहा। । १९३० का सत्याग्रह संग्राम नवयुवकों को त्याग और तपस्या के लिये आवाहन कर रहा था। गुरुकुल के विद्यार्थी ऐसे समय में शान्त नहीं रह सके। उन दिनों ब्र० सर्वमित्र १४वीं श्रेणी में पढ़ते थे। वह एक अत्यन्त होनहार

विद्यार्थी थे। इनके नेतृत्व में गुरुकुल के विद्यार्थियों ने देश के प्रति अपने कर्त्तव्यपालन का निश्चय किया । गुरुकुल के अधिकारी इसके लिये अनुमति नहीं दे सकते थे, क्योंकि गुरुकुल का एक संस्था के रूप में सत्याग्रह संग्राम में भाग लेना संभव नहीं था अतः अधिकारियों से अनुमति प्राप्त न होने पर भी विद्यार्थियों ने स्वराज्य संग्राम में भाग लिया और विवश हो कर कुछ महीनों के लिये गुरुकुल के लिये महाविद्यालय विभाग में अवकाश करना पड़ा । बहुत से विद्यार्थी और उपाध्याय भी कैद हो गये और ब्र० सर्वमित्र तथा उनके साथी ब्र० सत्यभूषण देहातों में काम करते हुए बीमार पड़े और स्वर्ग सिधारे । विपत्तियों और प्रचण्ड महामारी की परवाह न कर जिस ढंग से इन ब्रह्मचारियों ने अपने प्राणों को मातृभूमि के लिये स्वाहा किया, उसे हम बलिदान कहें तो अनुचित न होगा।

कुछ मास के असाधारण अवकाश के बाद गुरुकुल तो खुल गया, परन्तु अनेक विद्यार्थी सत्याग्रह संग्राम में लगे रहे । सत्याग्रह के स्थगित होने पर ये फिर गुरुकुल में प्रविष्ट हुए और अपनी पढ़ाई को पूर्ण किया ।

## प्रबन्ध समिति

सन् १९३२ में आचार्य रामदेव जी भी सत्याग्रह में कार्य करने के लिये गुरुकुल से चले गये । उनके बाद प्रतिनिधि सभा ने किन्हीं एक महानुभाव को गुरुकुल का मुख्याधिष्ठाता नियत नहीं किया, अपितु गुरुकुल का प्रबन्ध एक समिति के सुपुर्द किया । श्रीयुत देवराज जी सेठी उन दिनों गुरुकुल के सहायक मुख्याधिष्ठाता थे । उन्हें उप समिति का मंत्री बनाया गया उनके अतिरिक्त श्री पंडित चमूपति जी एम० ए० और श्री पं० देवशर्मा जी विद्यालंकार इसमें और रखे गये । उप-समिति का प्रधान पद श्री चमूपति जी को दिया गया । एक मुख्याधिष्ठाता के स्थान पर तीन

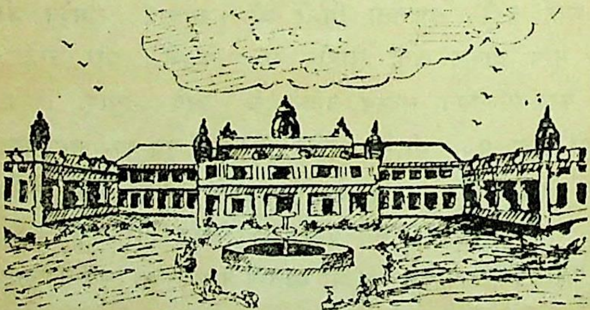
महानुभावों की उप-समिति नियत करना गुरुकुल के इतिहास में एक नया परीक्षण था। यह सफल न हो सका। कारण यह था कि समिति के तीनों सदस्यों के विचार एक सदृश नहीं थे उन में मतभेद था इस समस्या का अन्त तब हुआ जब श्री पं० देवशर्मा जी और श्री देवराज जी सेठी त्यागपत्र देकर विस्तृत क्षेत्र में सेवा के लिये बाहर चले गये। अब पं० चमूपति जी मुख्याधिष्ठाता और आचार्य दोनों पदों का कार्य करने लगे। आचार्य रामदेव जी के जाने पर गुरुकुल के कार्य का संचालन करने के लिये जो उप-समिति बनी थी वह पूरा एक वर्ष भी कार्य न कर सकी और सन् १९३४ के अन्तिम दिनों में गुरुकुल का संचालन भार श्री पं० चमूपति जी के पास आ गया।

श्री पं चमूपति जी आर्य समाज के प्रसिद्ध विद्वान और प्रचारक थे। गुरुकुल से संबन्ध बहुत पुराना था। अब से लगभग २० वर्ष पूर्व वे गुरुकुल मुलतान के मुख्याधिष्ठाता बने थे और उस गुरुकुल का संचालन करने में उन्हें बड़ी सफलता मिली थी। आचार्य रामदेव जी उनके गुणों पर मुग्ध होकर उन्हें लाहौर ले आये थे। और उन्हें दयानन्द सेवासदन का आजीवन सदस्य बनाने के लिये तैयार किया था। अनेक वर्षों तक पं० जी ने लाहौर में 'आर्य' पत्र का सम्पादन किया। वक्ता और लेखक के रूप में आर्यसमाज में उनकी खूब ख्याति हुई। पहले वे आर्य सिद्धान्त के प्रोफेसर नियत हो कर आये और "वैदिक मैगज़ीन" के संपादन में भी आचार्य रामदेव जी की सहायता करते रहे। रामदेव जी के जेल जाने पर गुरुकुल के संचालन का कार्य उनके सुपुर्द किया गया और उन्होंने योग्यता से इस कार्य को निभाया।

इन वर्षों में भी गुरुकुल खूब उन्नति हुई। हिन्दू यूनिवर्सिटी काशी में प्रतिवर्ष हिन्दी और संस्कृत में वाद विवाद होते हैं। इनमें विविध

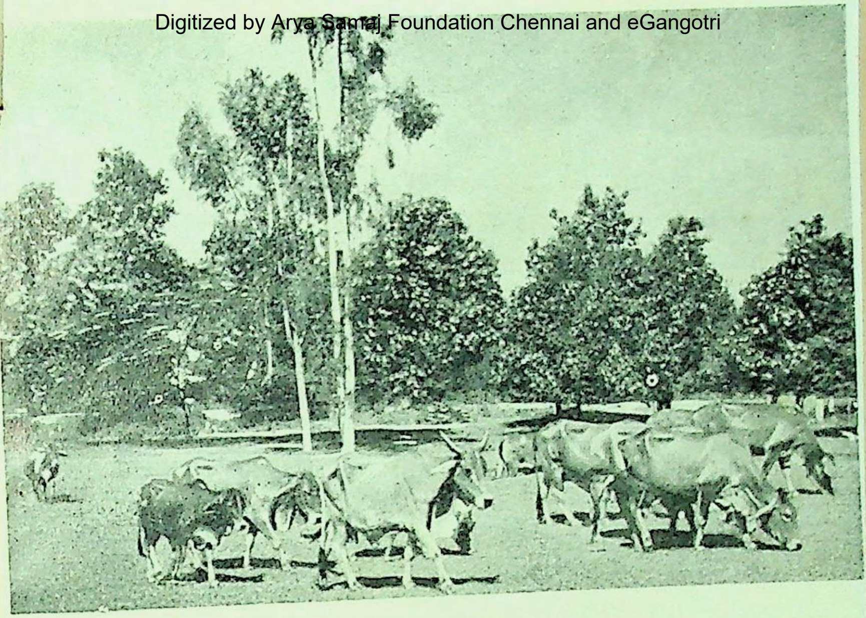
यूनिवर्सिटियों के प्रतिनिधि सम्मिलित हो कर किसी पूर्व निश्चित विषय पर वाद विवाद करते हैं । सर्वोत्तम वक्ताओं को पुरस्कार प्रदान किये जाते हैं । और जिस शिक्षणालय के विद्यार्थी सबसे अधिक अंक प्राप्त करते हैं उन्हें विजयोपहार प्रदान किया जाता है । सन् १९३१ से १९३४ तक गुरुकुल के विद्यार्थी इन अन्तर्विश्वविद्यालय वाद विवादों में सम्मिलित हुए और निरंतर विजयी रहे । केवल बनारस में ही नहीं अपितु मेरठ, दिल्ली आदि कई शिक्षा केन्द्रों में इस प्रकार के वाद विवादों में गुरुकुल के विद्यार्थी "विजयोपहार" जीतकर लाये ।

सन् १९३१ में गुरुकुल अधिक सर्वप्रिय बनाने के साधनों की सिफारिश करने के लिये महात्मा नारायण स्वामी जी की अध्यक्षता में एक कमीशन आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा नियुक्त हुआ । दो वर्ष तक परिश्रम कर इस कमीशन ने एक रिपोर्ट तैयार की ।



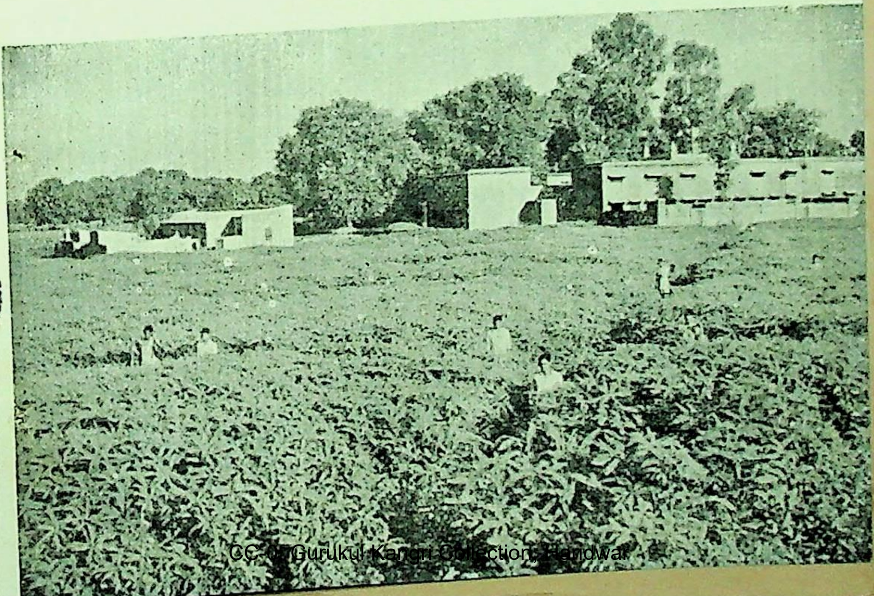
वेद महाविद्याल

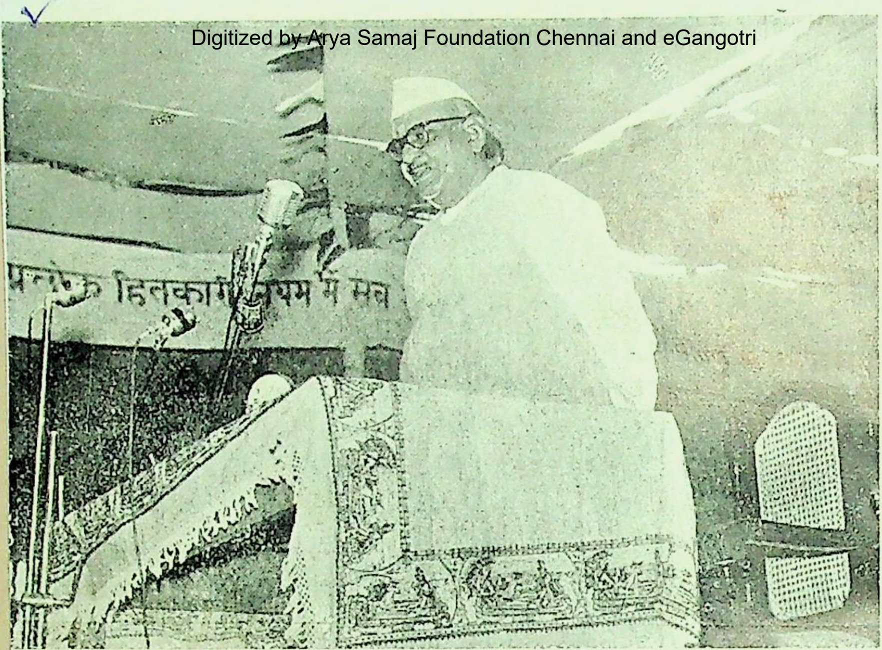
* * *



गुरुकुल का गोधन

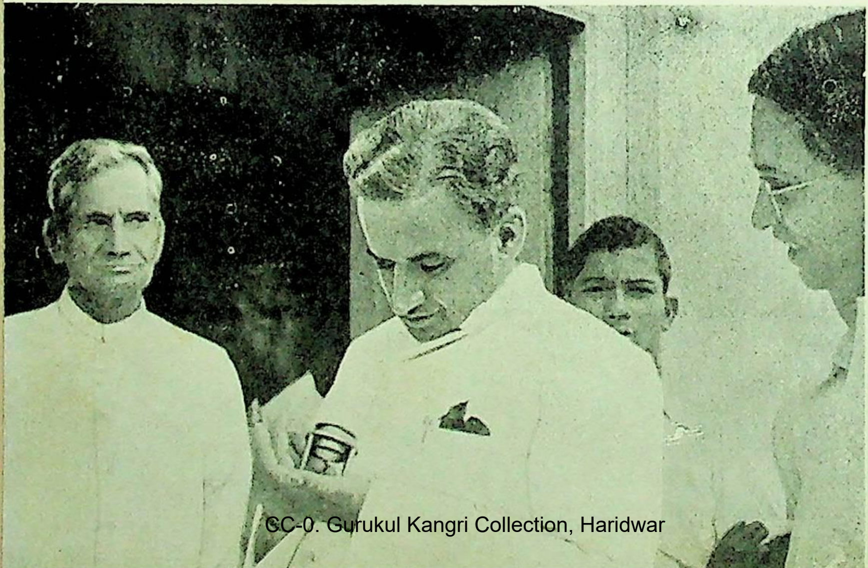
लहलहाती कृषि





डॉ० सम्पूर्णानन्द उत्सव पर भाषण करते हुए

डॉ० चिन्तामणि द्वारकानाथ देशमुख संग्रहालय में एक प्राचीन मुद्रा को ध्यान से देखते हुए





आचार्य रामदेव जी



पं० विश्वम्भरनाथ जी

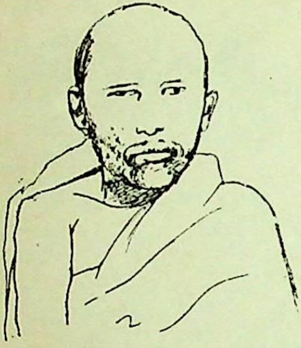


ला० लाजपत राय जी



पं० सत्यव्रत जी सिद्धान्तालङ्कार

# गुरुकुल जिनका ऋणी है



गुरुवर पं० काशीनाथ जी



मुंशी अमनसिंह जी



स्वामी सत्यानन्द जी



पं० गंगादत्त जी

: ८ :

# विद्या सभा की स्थापना

सन् १९३५ में गुरुकुल के प्रबन्ध के सबन्ध में बहुत से महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए, गुरुकुल के लिये पृथक् विद्यासभा स्थापित करने का विचार बहुत पुराना है । महात्मा मुन्शीराम जी ने इसके लिये सन् १९१० से ही अन्दोलन प्रारम्भ कर दिया था । १९२१ में जिस प्रस्ताव द्वारा प्रतिनिधि सभा ने गुरुकुल को एक विश्वविद्यालय के रूप में परिवर्तित किया उसमें ही यह भी सिद्धान्त रूप में स्वीकृत कर लिया कि गुरुकुल के लिये विद्यासभा का पृथक् रूप से निर्माण होना चाहिये । १९२४ में विद्यासभा के संगठन का खाका तैयार हुआ और प्रतिनिधि सभा में यह स्वीकृत हो गया । पर कुछ कारणों से उसे क्रिया में परिणत नहीं किया जा सका । १९३५ में विद्यासभा की स्थापना के लिने फिर प्रबल आंदोलन हुआ । आर्य प्रतिनिधि सभा का कार्यक्षेत्र इतना विस्तृत हो गया था कि एक कार्यकारिणी समिति (अन्तरंग सभा) सब विषयों पर यथोचित ध्यान नहीं दे सकती थी। साथ ही गुरुकुल अब एक अच्छे बड़े विश्वविद्यालय के रूप में विकसित हो गया था। उस के लिये एक ऐसी सभा की आवश्यकता थी जिसका मुख्य कार्य गुरुकुल का ही संचालन हो। स्नातक मण्डल ने इसके लिये वड़ा प्रबल आन्दोलन किया । सन् १९३५ आर्य प्रतिनिधि सभा के नये निर्वाचन का साल था। इसका लाभ उठा कर

विद्यासभा के पक्षपाती लोग बड़ी संख्या में प्रतिनिधि निर्वाचित होकर आये। परिणाम यह हुआ कि १९३५ के प्रतिनिधि सभा के अधिवेशन में गुरुकुल के लिये पृथक् विद्यासभा स्थापित कर ली गई। गुरुकुल के इतिहास में यह बात बहुत महत्व की हुई।

विद्यासभा की रचना निम्नलिखित प्रकार से करने की व्यवस्था की गई—

१. विद्यासभा के कुल सदस्यों की संख्या २७ हो।

२. इन २७ सदस्यों में से न्यून से न्यून १८ आर्य प्रतिनिधि सभा के सभासद् हों-

३. आर्यप्रतिनिधि सभा के निम्नलिखित पदाधिकारी अपने पद के कारण विद्यासभा के सदस्य हों।

(क) आर्यप्रतिनिधि सभा के प्रधान

(ख) ,, के तीनों उप प्रधान

(ग) ,, के मंत्री

(घ) ,, के कोषाध्यक्ष

४. इन छः पदाधिकारियों के अतिरिक्त कम से कम १२ व्यक्ति आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब द्वारा विद्यासभा के लिये निर्वाचित किये जावें इन सदस्यों को निर्वाचित करते हुए यह ध्यान रखा जावे, कि ये सदस्य विद्या आदि विशेष गुणों में सम्पन्न हों।

५. साथ ही गुरुकुल के निम्नलिखित पदाधिकारी भी अपने पद के कारण विद्या सभा के सदस्य हों।

(क) गुरुकुल कांगड़ी का मुख्याधिष्ठाता।

(ख) गुरुकुल कांगड़ी का आचार्य।

(ग) कन्या गुरुकुल का मुख्याधिष्ठाता।

(घ) कन्या गुरुकुल की आचार्या ।

६. इनके अतिरिक्त शेष पांच सदस्यों की नियुक्ति निम्नलिखित प्रकार से की जाय—

(क) गुरुकुल के विद्यार्थी व विद्यार्थिनियों के संरक्षकों में से एक ।

(ख) गुरुकुल के स्नातकों व स्नातिकाओं में से तीन, जिनमें एक अवश्य स्नातिका हो ।

(ग) गुरुकुल के उपाध्याय वर्ग में से एक ।

विद्यासभा के सदस्य केवल वही बन सकें, जिन्हें गुरुकुल शिक्षा प्रणाली से वास्तविक प्रेम हो, और जो स्वयं अपने बालकों को व बालिकाओं को गुरुकुल में पढ़ाने के लिये उद्यत होकर गुरुकुल प्रेम का साक्षात् प्रमाण देने को उद्यत हों ।

विद्यासभा के बन जाने से गुरुकुल का प्रबन्ध व संचालन आर्य प्रतिनिधि सभा के 'वेद प्रचार विभाग' से पृथक् हो गया । इससे गुरुकुल की समस्याओं पर अधिक ध्यान दे सकना व इस संस्था की उन्नति के लिये प्रयत्न कर सकना अधिक संभव हो गया ।

## परिवर्तन

१९३५ के अप्रैल मास में पं० चमूपति जी ने गुरुकुल से त्याग पत्र दे दिया था । नव निर्मित विद्या सभा ने उनके स्थान पर पं० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार को मुख्याधिष्ठाता और पं० देवशर्मा विद्यालंकार को आचार्य पद पर नियत किया । पं० सत्यव्रत जी गुरुकुल के सुयोग्य स्नातक हैं और सन् १९२३ से गुरुकुल में कार्य कर रहे थे । अनेक वर्षों तक वे गुरुकुल के प्रस्तोता (रजिस्ट्रार) रहे थे । अतः शिक्षा

विषयक प्रबन्ध में उनका देर से हाथ था। अच्छे वक्ता और लेखक होने के कारण न केवल आर्य सामाजिक क्षेत्र में अपितु बाहर भी उनकी अच्छी ख्याति थी। पं० देवशर्मा जी भी गुरुकुल के स्नातक हैं और सन् १९२१ से कार्यकर्त्ता के रूप में भी गुरुकुल से उनका संबन्ध था। अनेक बार पहिले भी वे उपाचार्य व 'सामायिक आचार्य' का कार्य कर चुके थे। सादगी और देश सेवा के लिये उनकी प्रसिद्धि थी। सदाचार और तपस्या के लिये महात्मा गांधी भी उनकी प्रतिष्ठा करते थे।

पं० सत्यव्रत जी ने गुरुकुल की उन्नति के लिये विशेष उद्योग किया। चन्दा करके धन एकत्र करना कितना कठिन है, इस बात का उन्हें अच्छी तरह अनुभव था। वे इस प्रयत्न में थे, कि आर्थिक दृष्टि से गुरुकुल को स्वावलम्बी बनाया जाय, और खर्च चलाने के लिये केवल चन्दे पर आश्रित रहने की आवश्यकता न रहे। उन्होंने यह विचार किया कि यदि गुरुकुल में व्यवसाय विभाग को भलीभांति उन्नत किया जाय, तो इतनी आमदनी की जा सकती है कि गुरुकुल बहुत कुछ आत्मनिर्भर हो जाय। गुरुकुल में आयुर्वेदिक फार्मेसी कई सालों से स्थापित थी। साथ ही पुस्तक प्रकाशन विभाग और प्रैस भी विद्यामान थे रसायन विज्ञान के प्रो० श्री फकीरचन्द त्रेहन को व्यवसायिक रसायन का क्रियात्मक अनुभव था, और वे स्याही, फिनाइल आदि तैयार करने के लिये सदा उत्सुक रहते थे। पं० सत्यव्रत जी ने यह अनुभव किया कि यदि इन विभागों का भलीभांति ध्यान दे कर उन्हें उन्नत किया जाय तो गुरुकुल आर्थिक चिन्ताओं से मुक्त हो सकता है। इसलिये उन्होंने 'व्यवसाय पटल" का संगठन किया और स्वयं आयुर्वेदिक फार्मेसी आदि के विकास में विशेष दिलचस्पी लेनी शुरू की। परिणाम यह

हुआ की गुरुकुल के इस विभाग ने बहुत उन्नति की और कुछ ही समय में गुरुकुल को अच्छी धन राशि प्राप्त होने लगी।

प्रो० फकीर चन्द जी की अध्यक्षता में व्यवसायिक 'रसायन विभाग' की पृथक् रूप से स्थापना की गई। इस विभाग द्वारा सब प्रकार की स्याहियां साबुन और फिनाइल तैयार किये जाने लगे। जनता ने इसका उत्साह पूर्वक स्वागत किया। अनेक म्यूनिसिपैलिटियों, बैंकों व व्यापारिक संस्थाओं ने इन वस्तुओं की अपनी अवश्यकताओं को गुरुकुल से पूरा करना शुरू किया। परिणाम यह हुआ कि कुछ ही वर्षों में यह विभाग भी आमदनी का अच्छा साधन बन गया।

प्रेस की उन्नति और पुस्तकों के प्रकाशन पर भी इस समय विशेष ध्यान दिया गया। जब शुरू शुरू में गुरुकुल में महाविद्यालय विभाग की स्थापना हुई थी, तो अनेक प्रोफेसरों ने हिन्दी में उच्चकोटि के ग्रन्थ लिखे थे। इनका प्रकाशन भी गुरुकुल की ओर से हुआ था। प्रो० साठे जी, प्रो० महेशचरण सिन्हा व प्रो० गोवर्धन जी आदि के इन ग्रन्थों का उल्लेख पहिले किया जा चुका है। बाद में भी गुरुकुल के अनेक प्रोफेसरों ने हिन्दी ग्रन्थ लिखे, पर इनका प्रकाशन गुरुकुल की ओर से नहीं हुआ। इस समय अनेक उच्चकोटि के ग्रन्थ गुरुकुल द्वारा प्रकाशित किये गये। जिनमें विशेष रूप से उल्लेखनीय पं० चन्द्रगुप्त विद्यालंकार द्वारा लिखित "बृहत्तर भारत" है। भारतीय सभ्यता व संस्कृति किस प्रकार भारत से बाहर विदेशों में फैली, उत्तर भारत के महत्वाकांक्षी राजपुत्रों ने किस प्रकार सुदूर पूर्व उत्तर पश्चिमी एशिया में अपने नये उपनिवेश स्थापित किये इस सब का वृतांत बड़े सुन्दर रूप में इस ग्रन्थ में दिया गया है

कुछ समय पूर्व "गुरुकुल स्वाध्याय मंजरी" नाम से एक ग्रन्थमाला

का प्रारम्भ किया गया था, जिसमें वैदिक स्वाध्याय संबन्धी एक पुस्तक प्रतिवर्ष प्रकाशित करने की व्यवस्था की गई है। अब तक सन् १९६० तक इस मंजरी में अठारह पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। 'श्रद्धानन्द स्मारक निधि' के सदस्यों को ये पुस्तकें भेंट रूप में दी जाती हैं। इस निधि को भलीभांति संगठित करते हुए इस समय यह प्रयत्न किया गया, कि गुरुकुल आर्थिक दृष्टि से निश्चिंत हो सके और उसे ऐसे दानियों का सहयोग प्राप्त हो जाय जो प्रतिनिधि कम से कम दस रुपया गुरुकुल को दान देते रहें।

गुरुकुल की नई भूमि में अब तक बहुत सी इमारतें तैयार हो चुकी थी। पं० सत्यव्रत जी ने यह व्यवस्था भी विशेष रूप से की कि गुरुकुल भूमि सुन्दर व रमणीक हो। उन्होंने सड़कों के दोनों ओर छाया-वृक्ष लगवाने, आम आदि फलों की वाटिकायें लगवाने और फव्वारों व पार्कों द्वारा गुरुकुल को सुशोभित करने को बहुत महत्व व बल दिया। इस कार्य नीति का यह परिणाम हुआ कि आज हरिद्वार के क्षेत्र में गुरुकुल सबसे सुन्दर व रमणीक स्थान है। इसकी शोभा मन को आकृष्ट करने वाली है।

इस समय आचार्य के पद पर पं० देवशर्मा कार्य कर रहे थे। पंडित जी के त्याग और तपस्यामय जीवन का ब्रह्मचारियों पर बहुत प्रभाव रहा उनके उदाहरण को सन्मुख रख कर अनेक विद्यार्थी देश और धर्म की सेवा के लिये तत्पर हुए। "व्रताभ्यास" की पद्धति का गुरुकुल में सूत्रपात सन् १९२५ में हो चुका था। पं० देवशर्मा जी ने मानसिक शिक्षा की अपेक्षा 'व्रत-शिक्षा' को अधिक महत्व देकर विशेष बल दिया। वे इस बात में विश्वास रखते थे कि सदाचार, संयम और ब्रह्मचर्य का जीवन अक्षराभ्यास मात्र वाली शिक्षा की अपेक्षा अधिक आवश्यक व उपयोगी है। उनके प्रयत्न से गुरुकुल में सदाचार के वातावरण को विकसित करने में बहुत सहायता मिली।

दो वर्ष आचार्य के रूप में कार्य करके पं० देवशर्मा जी गुरुकुल से चले गये। उन्होंने सन्यास ग्रहण कर लिया और स्वामी अभयदेव बन गये। उनके बाद पं० सत्यव्रत जी ने मुख्याधिष्ठाता पद के साथ साथ आचार्य पद भी ग्रहण किया। एक वर्ष बाद स्वामी अभयदेव जी पुनः गुरुकुल लौट आये और आचार्य पद को संम्भाल लिया।

## गुरुकुल के प्रबन्ध की नई व्यवस्था

स्वास्थ्य खराब रहने के कारण पं० सत्यव्रत जी ने सन् १९४२ ई० में मुख्याधिष्ठाता पद से त्यागपत्र दे दिया। विद्यासभा के सन्मुख यह प्रश्न था कि उनके स्थान की किस महानुभाव द्वारा पूर्ति की जाय। अब तक गुरुकुल के प्रबन्ध, नियन्त्रण व संचालन के लिये दो प्रधान अधिकारी नियत होते थे। मुख्याधिष्ठाता और आचार्य। पर अब विद्यासभा ने एक नई व्यवस्था का सूत्रपात किया। जो इस प्रकार थी—

सभा की ओर से गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की शिक्षा तथा उसके अन्य समस्त प्रबन्ध के निरीक्षण, नियन्त्रण तथा निर्देशन के लिये एक मुख्याधिष्ठाता हो जिसकी नियुक्ति विद्यासभा द्वारा की जाये।

गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय में शिक्षा तथा ब्रह्मचारियों के पालन-पोषण, रहन-सहन, आचार-व्यवहार के नियन्त्रण तथा गुरुकुल के शिक्षक वर्ग और ब्रह्मचारियों सम्बन्धी अन्तरीय रीति-नीति व व्यवस्था के लिये एक आचार्य हो जिस की नियुक्ति विद्यासभा द्वारा की जावे। गुरुकुल विश्वविद्यालय से सम्बधित समस्त शाखाओं और गुरुकुलों की शिक्षा का निरीक्षण तथा निर्देशन भी आचार्य के अधीन रहे।

आचार्य के सपुर्द जो काम दिये गये हैं उनके अतिरिक्त गुरुकुल जायदाद, व्यवसाय तथा अन्य प्रबन्ध आदि के लिये आवश्यकतानुसार एक

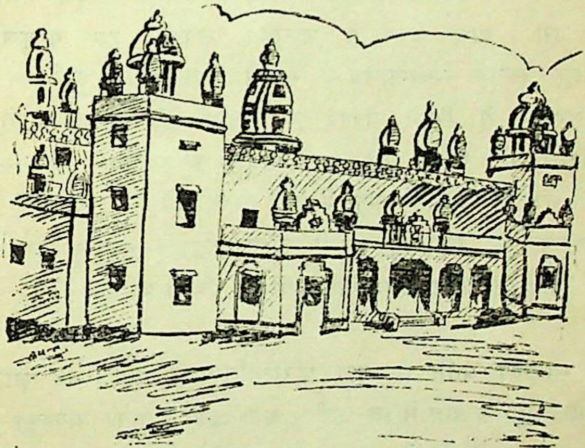
या एक से अधिक प्रबन्धक नियत किये जायें जो मुख्याधिष्ठाता के आधीन कार्य करें ।

इस व्यवस्था के अनुसार पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति को मुख्याधिष्ठाता नियत किया गया । आचार्य के पद पर स्वामी अभयदेव जी रहे । पं० इन्द्र जी गुरुकुल में अधिक समय तक नहीं रह सकते थे और नई योजना के अनुसार शिक्षा प्रबन्ध आदि का प्रधान अधिकारी भी आचार्य को बना दिया गया था अतः स्वामी अभयदेव जी के हाथों में अब गुरुकुल का संचालन क्रियात्मक रूप से आ गया । पर इस नई स्थिति में स्वामी अभयदेव जी ने देर तक कार्य नहीं किया । नवम्बर १९४२ में उन्होंने अपने पद से त्यागपत्र दे दिया और पं० बुद्धदेव जी विद्यालंकार गुरुकुल के नये आचार्य नियुक्त हुए। गुरुकुल को उन्नति के मार्ग पर अग्रसर करने की उनमें उत्कट आकांक्षा थी पर अनेक कारणों से मई १९४३ में उन्होंने आचार्य पद से त्याग पत्र दे दिया और उन के स्थान पर पं० प्रियव्रत जी वेदवाचस्पति को आचार्य नियुक्त किया गया ।

प्रबन्ध सम्बन्धी नवीन व्यवस्था के कायम होने के समय से ही मुख्याधिष्ठाता का कार्य श्री पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति के अधीन संपन्न होता है। गुरुकुल के कार्य की वृद्धि और उसके विकास के कारण प्रबन्ध कार्य के अधिक विस्तार हो जाने से श्री मुख्याधिष्ठाता जी की सहायतार्थ अप्रेल १९५३ ई० में श्री पं० धर्मपाल विद्यालंकार को सहायक मुख्याधिष्ठाता पद पर नियुक्त किया गया जो इस समय कार्य कर रहे हैं।

अगस्त १९४३ ई० से वर्तमान समय तक पं० प्रियव्रत जी गुरुकुल के आचार्य पद पर कार्य करते रहे हैं । पं० प्रियव्रत जी वेदों के गम्भीर विद्वान हैं । अनेक वर्षों तक उन्होंने आर्यप्रतिनिधि

सभा पंजाब के अधीन वेद प्रचार का कार्य किया है, कुछ वर्षों तक उपदेशक विद्यालय के आचार्य भी रहे हैं, उत्कृष्ट वक्ता हैं, और चरित्र बल भी उन में बहुत है इस लिये परस्पर सहयोग से गुरुकुल का कार्य संतोषजनक रीति से चल रहा है और यह विश्वविद्यालय उन्नति के मार्ग पर निरन्तर अग्रसर हो रहा है।



वेद मन्दिर

* * *

: ६ :

# स्वतन्त्र भारत में गुरुकुल

१५ अगस्त १९४७ को भारत ब्रिटिश शासन से मुक्त हुआ। ऋषि दयानन्द ने स्वराज्य का जो आदर्श जनता के सन्मुख रखा था, अन्त में उसे प्राप्त करने में भारतीय सफल हुए। गुरुकुल का विकास एक स्वतंत्र शिक्षणालय के रूप में हुआ था। इसके संचालक विदेशी सरकार से किसी प्रकार का संबन्ध नहीं रखना चाहते थे। जिन आदर्शों को सन्मुख रख कर गुरुकुल की स्थापना की गई थी वे विदेशी सरकार के नियन्त्रण में इस संस्था को रख कर पूरे नहीं किये जा सकते थे। अतः यह सर्वथा उचित था, कि गुरुकुल सरकार से व उसके द्वारा संचालित विश्वविद्यालयों से किसी भी प्रकार का संबन्ध न रखे।

पर स्वराज्य प्राप्ति के बाद परिस्थिति बदल गयी। अब भारत की सरकार भारतीयों के हाथ में आ गई। अतः इस बात की अवश्यकता नहीं रही कि सरकार से किसी प्रकार का संपर्क न रखा जावे। इसलिये १९४७ में गुरुकुल की ओर से यह उद्योग प्रारम्भ हुआ कि इस राष्ट्रीय विश्वविद्यालय द्वारा दी गई विविध उपाधियों को भारतीय व प्रान्तीय सरकारें स्वीकृत करें, व अन्य विश्वविद्यालय भी यहां की डिग्रीयों को स्वीकृत कर इसे अपने समकक्ष मान लें। इस कार्य में गुरुकुल को पूरी सफलता मिली। यह सर्वथा उचित भी था, क्योंकि यहां शिक्षा का स्तर ब्रिटिश युग के सरकारी विश्वविद्यालयों के

मुकाबले में किसी भी प्रकार कम न था।

१५-३-४८ को हिमाचल प्रदेश की सरकार ने गुरुकुल की उपाधियों को इस प्रकार स्वीकृत किया—

विद्याधिकारी—हाई स्कूल या मैट्रिकुलेट के बराबर।

अलंकार—बी०ए० के बराबर।

वाचस्पति — एम० ए० के बराबर।

२४ मई १९४८ को बिहार की प्रान्तीय सरकार ने भी १९४७ तक जिन व्यक्तियों ने गुरुकुल विश्वविद्यालय से विविध डिग्रियां प्राप्त कीं, उनकी अधिकारी डिग्री को मैट्रिकुलेशन के, अलंकार डिग्री को बी०ए० के और वाचस्पति डिग्री को एम०ए० के बराबर स्वीकृत किया।

५ जुलाई १९४८ को उत्तर प्रदेश यू०पी० व संयुक्त प्रान्त की सरकार ने गुरुकुल की अलंकार डिग्री को बी०ए० के बराबर स्वीकृत कर लिया।

६ मई १९४९ को भारत के केन्द्रीय सरकार ने सामयिक रूप से गुरुकुल के स्नातकों को सरकारी विश्वविद्यालय के ग्रेजुएट के समकक्ष मान लिया।

१३ अक्टूबर १९४९ को पंजाब की सरकार ने भी गुरुकुल विश्वविद्यालय की अलंकार डिग्री को बी०ए० के बराबर स्वीकृत कर लिया है।

१५ दिसम्बर, १९४९ को बम्बई प्रान्त की सरकार ने गुरुकुल की अलंकार डिग्री को बी०ए० के बराबर मान लिया है।

अब भारत की विविध सरकारें गुरुकुल के अलंकार उपाधि से विभूषित स्नातकों को अपनी विविध नौकरियों के लिये वही अवसर देने को उद्यत है जो सरकारी विश्वविद्यालय के ग्रेजुएटों को प्राप्त हैं। यह

गुरुकुल की भारी विजय है।

अनेक विश्वविद्यालयों ने भी गुरुकुल की डिग्री को अपनी डिग्री के समकक्ष मानना स्वीकार किया। आगरा यूनिवर्सिटी ने २६ जुलाई १६४८ को एक प्रस्ताव द्वारा यह स्वीकार किया, कि गुरुकुल की अलंकार परीक्षोत्तीर्ण विद्यार्थी बी०ए० परीक्षा उत्तीर्ण किये बिना ही संस्कृत हिन्दी, पाश्चात्य दर्शन, अर्थशास्त्र और राजनीति विषयों में एम० ए० परीक्षा में बैठ सकते हैं यही बात हिन्दू विश्वविद्यालय काशी ने संस्कृत और हिन्दी विषयों के लिये स्वीकार की। अन्य विविध यूनिवर्सीटियां भी इस प्रश्न पर विचार कर रही हैं। इसमें सन्देह नहीं, कि अब वह समय आगया है, जब गुरुकुल को शिक्षा के क्षेत्र में अपना समुचित स्थान प्राप्त हो जावेगा।

## गुरुकुल और विदेशी विश्वविद्यालय

भारत में विदेशी सरकार होने के कारण यहां की ब्रिटिश सरकार ने और सरकार द्वारा स्थापित व स्वीकृत विश्वविद्यालयों ने गुरुकुल की डिग्री को स्वीकृत नहीं किया था। ब्रिटिश साम्राज्य में विद्यमान विदेशी विश्वविद्यालय भी यहां की डिग्री को मान नहीं देते थे। पर ब्रिटिश साम्राज्य के बाहर फ्रांस, जर्मनी, आस्ट्रिया, इटली आदि देशों के विश्वविद्यालयों ने गुरुकुल को यथोचित मान दिया और यहां की डिग्री को स्वीकृत किया। गुरुकुल के अनेकों स्नातक उच्च शिक्षा के लिये विदेशों में गये। वहां उन्हें सीधा डाक्टरेट परीक्षा के लिये दाखिल कर लिया गया। पेरिस, बर्लिन आदि के विश्वविद्यालय ब्रिटिश साम्राज्य में विद्यमान किसी भी विश्वविद्यालय की अपेक्षा अधिक विशाल व सम्माननीय शिक्षाकेन्द्र हैं। विद्वत्ता के अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में उनका स्थान किसी भी प्रकार आक्सफोर्ड, कैम्ब्रिज, लण्डन आदि ब्रिटिश विश्वविद्यालयों से कम नहीं है। उन्होंने गुरुकुल के स्नातकों का स्वागत किया, और

अनेक स्नातक उन से उच्चतम डिग्रीयां ले कर भारत लौटे। इन स्नातकों के नाम निम्नलिखित हैं—

१. डा० प्राणनाथ विद्यालंकार—इन्होंने विएना यूनिवर्सिटी से पी०एच० डी० की परीक्षा उत्तीर्ण की।

२. डा० ईश्वरदत्त विद्यालंकार—इन्होंने म्यूनिच यूनिवर्सिटी से पी० एच० डी० किया।

३. श्री विनायक राव विद्यालंकार ने इंगलैण्ड से बार-एट-ला पदवी प्राप्त की।

४. डा० सत्यकेतु विद्यालंकार—इन्होंने पेरिस यूनिवर्सिटी से डी० लिट् की डिग्री ससम्मान प्राप्त की।

५. डा० धीरेन्द्र विद्यालंकार—इन्होंने म्यूनिच से पी०एच०डी० की डिग्री प्राप्त की।

६. डा० सुरेशचन्द्र विद्यालंकार—इन्होंने पेरिस यूनिवर्सिटी से डी० लिट् की डिग्री प्राप्त की।

७. डा० बलराम आयुर्वेदालंकार—इन्होंने म्यूनिच यूनिवर्सिटी से एम०डी० की डिग्री प्राप्त की।

८. डा० नारायणदत्त आयुर्वेदालंकार—इन्होंने म्यूनिच यूनिवर्सिटी से एम० डी० की डिग्री प्राप्त की।

९. डा० धर्मानन्द आयुर्वेदालंकार—इन्होंने रोम और म्यूनिच यूनिवर्सिटी से एम० डी० की डिग्रीयां प्राप्त की।

१०. श्री नरदेव विद्यालंकार ने भी म्यूनिच से फोटोग्राफी में डिप्लोमा प्राप्त किया।

११. श्री राजेश्वर आयुर्वेदालंकार ने म्यूनिच से एम०डी० की उपाधि प्राप्त की।

प्रसन्नता की बात है कि, अब भारत के स्वतन्त्र हो जाने पर भारत की

विविध सरकारों तथा अनेक विश्वविद्यालयों ने भी गुरुकुल की उपाधियों को स्वीकार कर लिया है ।

## देश का विभाजन और गुरुकुल

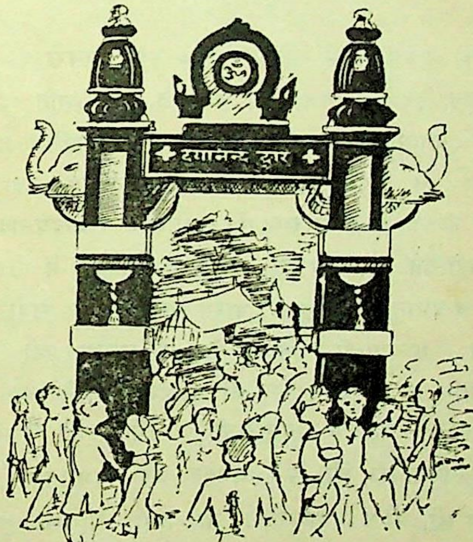
अगस्त १९४७ में भारत को दो भागों में विभक्त कर के पाकिस्तान के पृथक् राज्य का निर्माण किया गया। पाकिस्तान का निर्माण धर्म के आधार पर हुआ था। मुस्लिमलीग चाहती थी, कि मुसलमानों का अपना पृथक् राज्य हो जिसमें शासन मुस्लिम धर्म के अनुसार रहे । इसके लिये बहुत से मुसलमान नेता यह भी चाहते थे कि पाकिस्तान में हिन्दू व सिख न रहें। परिणाम यह हुआ कि पश्चिमी पंजाब, सिन्ध, सीमाप्रान्त और बलोचिस्तन से लाखों की संख्या में हिन्दुओं को भारत आना पड़ा। इस समय जो हिन्दू व सिक्ख पश्चिमी पाकिस्तान से भारत आये, उनकी संख्या ६० लाख के लगभग है। इसके अतिरिक्त लाखों हिन्दू व सिक्ख धर्मान्ध मुसलमानों द्वारा कत्ल किये गये । सम्पत्ति का जो नाश इस समय हुआ, उसका तो अन्दाज कर सकना भी संभव नहीं है।

पश्चिमी पाकिस्तान में सैकड़ों आर्य समाजें थी। इस प्रदेश में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की करोड़ों की सम्पत्ति थी। वह सब पाकिस्तान में ही रह गई। गुरुकुल कांगड़ी की भी बहुत सी सम्पत्ति इस प्रदेश में थी। जिनमें से मुख्य निम्नलिखित हैं—

| | | |
|---|---|---|
| १. | शीश महल की भूमि लाहौर में मूल्य | १६,१०,००० रु० |
| २. | नौलखा भूमि लाहौर में मूल्य | ४,१०,००० रु० |
| ३. | शुजाबाद | ५,००० रु० |
| | | २०,२५,००० रु० |

इस भूसम्पत्ति में आर्यप्रतिनिधि सभा पंजाब व गुरुकुल का रुपया सम्मिलित रूप से लगा हुआ था। बीस लाख से अधिक संम्पत्ति में आधे के लगभग रुपया गुरुकुल का था। भारत के विभाजन से गुरुकुल को दस लाख रुपये से अधिक की क्षति उठानी पड़ी।

इसके अतिरिक्त गुरुकुल की एक महत्वपूर्ण शाखा पश्चिमी पाकिस्तान के क्षेत्र में थी। मुलतान गुरुकुल बहुत सम्पन्न तथा समृद्ध दशा में था इस गुरुकुल के पास कुल मिलाकर २६६ बीघा भूमि थी, और इमारत की कीमत भी लाख से ऊपर थी।




दयानन्द द्वार

* * *

: १० :

# वर्तमान काल

## स्वर्ण जयन्ती महोत्सव

### *महामान्य राष्ट्रपति का आगमन*

गुरुकुल का स्वर्णजयन्ती महोत्सव ता० २८ फरवरी १, २, ३, ४, ५ और ६ मार्च सन् १९५०, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि और रविवार को समारोह से मनाया गया। सहस्त्रों नरनारी सम्मिलित हुए। उत्सव उपस्थिति तथा धन आदि की प्रत्येक दृष्टि से सफल रहा। दीक्षान्त भाषण स्वतन्त्र भारत के प्रथम राष्ट्रपति श्री डा० राजेन्द्रप्रसाद जी ने दिया था। इस महोत्सव पर आये हुए प्रतिष्ठित नेताओं में उत्तर प्रदेश के अन्नमंत्री श्री चन्द्रभानु जी गुप्त, भारत सरकार के मंत्री श्री नरहरि-विष्णु गाडगिल, मध्यप्रान्तीय विधान सभा के अध्यक्ष श्री घनश्यामसिंह गुप्त तथा राजाधिराज श्री उम्मेदसिंह जी शाहपुराधीश के नाम उल्लेखनीय हैं। इसके अतिरिक्त श्री पं० रामनारायण जी मिश्र, श्री स्वामी मोहनानन्द जी, श्री पं० सूर्यकान्त जी, श्री पं० जयदेव जी वेदभाष्यकार, रायबहादुर दीवान बद्रीदास जी, श्री पं० ठाकुरदत्त जी शर्मा, श्री म० कृष्ण जी, श्री पं० नरदेव जी शास्त्री, श्री डा० मंगलदेव जी शास्त्री, श्री स्वामी सत्यानन्द जी, श्री स्वामी अभेदानन्द जी, श्री स्वामी आत्मानन्द जी महाराज, श्री वासुदेवशरण जी अग्रवाल, श्री राजगुरु धुरेन्द्र जी शास्त्री, श्री पं० बुद्धदेव जी, श्री पं० सत्यव्रत जी, कुंवर चान्दकरण जी शारदा, आदि महानुभावों

ने भी इस स्वर्ण जयन्ती महोत्सव में भाग लिया। इस वर्ष कुल दान ३५२७२३) रु० सुनाया गया। एक लाख रुपये की दान की राष्ट्रपति ने भारत सरकार की ओर से घोषणा की और ६२०००) रुपये उत्तर प्रदेश की ओर से सहायता प्राप्त हुई तथा २५०००) सेठ रघुमल जी चैरिटी ट्रस्ट कलकत्ता से मिले। और भी अनेक राशियां प्राप्त हुई थीं। अनेक सम्मेलन हुए और उनमें प्रत्येक सफल रहा।

## सरकार से अनुदान

अंग्रेजी राज्यकाल में गुरुकुल की सर्वसम्मत नीति यह रही कि न कोई सरकार से संबन्ध रखा जाय और न किसी प्रकार की सहायता ली जाय। इस नीति का इतनी कठोरता से पालन किया कि स्वयं वायसराय द्वारा गुरुकुल को आर्थिक सहायता पेश किये जाने पर भी उसे अस्वीकार कर दिया गया। स्वाधीनता प्राप्त होने पर परिस्थिति में परिवर्तन आ गया। यह समझ कर कि राष्ट्रीय सरकार से आर्थिक सहायता लेने में कोई हर्ज नहीं है उस समय के राष्ट्रीय महासभा के अध्यक्ष डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद जी के परामर्श से केन्द्रीय सरकार के शिक्षा मंत्री को इस आशय का पत्र लिखा गया कि गुरुकुल विश्व-विद्यालय एक प्रमुख राष्ट्रीय संस्था है इस कारण उसे राष्ट्रीय सरकार से आर्थिक सहायता प्राप्त होनी चाहिये। उत्तर में शिक्षा मन्त्रालय ने २५०००) की राशि अनावर्तक अनुदान (अनरेकरिंग ग्रान्ट) के रूप में देना स्वीकार किया। उस राशि को गुरुकुल के गौरव के प्रतिकूल समझ कर अस्वीकार कर दिया गया। विशेष बात यह थी कि अस्वीकृति का पत्र शिक्षा मंत्री को स्वयं डा० राजेन्द्रप्रसाद जी ने लिखा १९५० में डा० राजेन्द्रप्रसाद राष्ट्रपति चुने गये। राष्ट्रपति बनने

के पश्चात् उन्होंने जो पहला सार्वजनिक भाषण दिया । वह गुरुकुल का दीक्षान्त भाषण था । भाषण के अन्त में राष्ट्रपति जी ने गुरुकुल के लिये एक लाख रुपये के अनुदान की घोषणा की । उसके पश्चात् केन्द्रीय सरकार और उत्तर प्रदेश सरकार से अनुदान के रूप में विविध राशियां प्राप्त होती रही हैं, उन में से कुछ अनावर्तक राशियां हैं, और कुछ आवर्तक राशियां । गत वर्ष एक लाख रुपयेकी एक अनावर्तक राशि केन्द्रीय सरकार से विज्ञान भवन के लिये प्राप्त हुई थी जिससे विज्ञान भवन लगभग तैयार हो गया है । उसके पश्चात् ६५०००) की राशि विज्ञान के उपकरणों व अन्य सामान के लिये और ५००००) की राशि पुस्तकालय भवन के विकास के लिये प्राप्त हुई है । आवर्तक राशियों में से केन्द्रीय सरकार से प्राप्त होने वाली सब से बड़ी राशि है । गत वर्ष शिक्षा अनुदान के रूप में ८००००) प्राप्त हुए थे, इस वर्ष ९००००) प्राप्त होने की आशा है उत्तर प्रदेश से आयुर्वेद महाविद्यालय और संग्रहालय को अब तक जो आवर्तक अनुदान तथा अनावर्तक अनुदान प्राप्त हुए हैं । उनका योग ३२२४२५) है । सम्वत् २०१४ में ८६८२५) प्राप्त हुआ ।

अनुदान के संम्बन्ध में यह बात बतला देना अत्यन्त आवश्यक है कि इन में से किसी भी अनुदान के साथ सिवाय इसके कोई शर्त नहीं लगी हुई है कि यह राशि उसी काम में व्यय की जाय जिसके लिये दी गई है । वे सब कार्य जिनके लिये सहायता प्राप्त हुई है, गुरुकुल के अपने शिक्षा क्रम के भाग है । अनुदान का व्यय किस तरह हुआ, इसकी जांच करने के लिये सरकारी निरीक्षक आता है और उन्हें देख कर चला जाता है । इसके अतिरिक्त न कोई शर्त है न कोई अवबन्ध जैसा गुरुकुल विश्वविद्यालय आप लोग चला रहे हैं, उसी को मान्यता प्राप्त है, और उसी को अनुदान मिलते हैं ।

## वेद महाविद्यालय

वेद वेदांगों की पढ़ाई को मुख्यता देने के कारण यह गुरुकुल का मौलिक महाविद्यालय ही था, ज्यों ज्यों विषयों की विभिन्नता और कार्य का विस्तार बढ़ता गया, महाविद्यालयों की संख्या बढ़ती गई। अन्य शाखा प्रशाखाओं के बन जाने पर भी मुख्यता वेद महाविद्यालय की ही रही जो अब तक भी विद्यमान है। गुरुकुल के आचार्य वेद महाविद्यालय के अध्यक्ष हैं। अधिकतर छात्रवृत्तियां वेद महाविद्यालय के छात्रों को दी जाती है। उसकी यही विशेषता है कि उसकी पाठ विधि में वैदिक तथा अर्वाचीन संस्कृत साहित्य तथा संसार के धर्मों के अनुशीलन पर अधिक बल दिया जाता है।

## गुरुकुल महाविद्यालय

इस महाविद्यालय में प्राचीन तथा अर्वाचीन भारतीय साहित्य के साथ साथ इतिहास राजनीति विज्ञान आदि विषयों की विशेष शिक्षा की व्यवस्था है। इतिहास में भारतीय इतिहास पर अधिक जोर दिया जाता है, विज्ञान में एफ० एस० सी० के स्तर की पढ़ाई होती है। इतिहास की शिक्षा से सम्बद्ध और उसके पूरक के रूप में एक संग्रहालय है जिसके अध्यक्ष इतिहास के उपध्याय हरिदत्त वेदालंकार एम०ए० हैं। भविष्य की योजनाओं में एक यह भी है कि भारतीय राजनीति पर विशेष ध्यान रखते हुए राजनीति की ऊंची शिक्षा का व्यवस्था की जाय।

इस महाविद्यालय के अध्यक्ष पं० सुखदेव विद्यावाचस्पति हैं।

## आयुर्वेद महाविद्यालय

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के अन्तर्गत आयुर्वेद महाविद्यालय

की स्थापना सन् १९२२ मे हुई थी । गुरुकुल के इस नवीन भूमि में स्थानान्तरित होने पर अन्य विभागों के समान इस महाविद्यालय की मुख्य इमारत भी यहाँ इस नवीन भूमि में बनाई गई थी, और गत स्वर्ण जयन्ती तक आयुर्वेद महाविद्यालय में अध्ययन कक्षाओं के अतिरिक्त निदान प्रयोगशाला, शवच्छेद भवन, शल्य क्रिया भवन, प्रकृतिविज्ञान संग्रहालय, ऐक्सरे भवन तथा अन्तरंग आतुरालय के रोगिगृहों का निर्माण हो चुका था।

उसके बाद से अब तक विगत ९ वर्षों में आयुर्वेद महाविद्यालय का और अधिक विकास हुआ है। इस अवधि में यहां निम्नलिखित विभागों तथा इमारतों की वृद्धि हुई है।

**बिड़ला नेत्र आतुरालय**—यह गुरुकुल के प्रेमी और विख्यात दानी श्री जुगल किशोर जी बिडला द्वारा बनवाया हुआ १० रोगी शय्याओं से युक्त रोगिगृह है, जिसमें नेत्र रोगियों के उपचार निवास और भोजनादि की सब व्यवस्था की जाती है।

**मातृमन्दिर**—यह गुरुकुल के यशस्वी, कर्मठ और तपस्वी स्नातक श्री पण्डित सत्यपाल जी सिद्धान्तालंकार अफ्रीका प्रवासी के द्वारा भेजी गई धनराशि से उनकी इच्छानुसार महिलाओं के निमित्त बनवाया गया है। इसमें प्रसव कार्य के लिये डिलीवरी बैड आदि की व्यवस्था है।

**जीवविज्ञान प्रयोगशाला**—यह उत्तर प्रदेशीय सरकार तथा गुरुकुल से प्रदत्त धन द्वारा लगभग १९ सहस्र की राशि से बनाई गई है। इसमें जीवन विज्ञान के क्रियात्मक शिक्षण के लिये दर्जनों माइक्रोस्कोप आदि यन्त्रों और उपकरणों की व्यवस्था है।

**धन्वन्तरि सभा भवन**—यह नवीन भवन भी उत्तर प्रदेशीय सरकार के और गुरुकुल के सम्मिलित धन द्वारा लगभग १८ सहस्र की राशि

से बना है। इसमें आयुर्वेद महाविद्यालय की प्रातः कालीन प्रार्थना के अतिरिक्त उपयोगी व्याख्यानों का आयोजन होता है, और समय पर सभायें—उत्सव आदि भी किये जाते हैं। इस इमारत के साथ 'अध्यक्ष भवन' तथा 'लेखक कक्ष' भी नये बनाये गये हैं।

**द्रव्य विज्ञान संग्रहालय**—यह छोटा सा संग्रहालय सर्वथा नवीन उद्योग है। स्थानाभाव के कारण इसे अभी तक एक छोटे से स्थान में ही स्थापित किया जा सका है, परन्तु इसमें सुरक्षित हरी वनस्पतियां, शुष्क मूल-कन्द, त्वचा, काष्ठ, फल, बीज, निर्यास, प्राणिज, द्रव्य, धातु, उदधातु, रत्न, उपरत्न, क्षार, लवण आदि के अतिरिक्त दुर्लभ वनस्पतियों के बहुमूल्य रंगीन चित्र तथा बहुसंख्यक फोटोग्राफ संकलित हैं। यह छात्रों और अध्यापकों के लिए भी विशेष उपयोगी हैं।

इसके अतिरिक्त इन ८-१० वर्षों में यहां पंचकर्म भवन का कार्य भी आरम्भ हो चुका है। छात्रों के शिक्षण के लिये "श्रद्धानन्द चिकित्सालय शाखा नं० २" में भी इस महाविद्यालय के उपाध्यायों के निरीक्षण में चिकित्सा कार्य सम्पन्न होता है, अर्थात् श्रद्धानन्द चिकित्सालय का विस्तार होकर उसकी अब दो डिस्पेंसरियां हो गई हैं।

इस प्रकार स्वर्णजयन्ती से हीरक जयन्ती तक की अवधि में गुरुकुल आयुवद महाविद्यालय का भी पर्याप्त विकास हुआ है।

## कृषि विद्यालय

गुरुकुल के संस्थापकों के मन में पहले से ही यह भाव था कि भारत जैसे कृषि प्रधान देश में समृद्धि के लिये कृषि तथा गौशाला आदि विषयक शिक्षा गुरुकुल में प्रचलित की जाय। इसलिये आधुनिक अन्यविषयों के साथ कांगड़ी की गुरुकुल भूमि में ऐग्रीकल्चर की शिक्षा

के लिये प्रो० महेशचरण सिन्हा एम०एससी० के अधीन कार्य प्रारम्भ किया गया।

२२ मार्च १९२१ को आर्य प्रतिनिधि सभा ने कृषि को ऐच्छिक रूप में महाविद्यासय के पाठ्यक्रम में सम्मिलित कर दिया जो सन् १९२४ की बाढ़ के कारण गुरुकुल के नवीन भूमि में आ जाने के कारण बन्द हो गया।

कृषि गोशाला की प्राचीन परम्परा को स्थापित करने के लिये नवीन गुरुकुल भूमि में ५२०००) रु० की लागत से गौशाला भवन निर्माण किया गया। और उसमें साहीवाल नसल की गौवें मंगवाई गई। ७०००) रु० की लागत से ट्यूबवैल का निर्माण किया गया संप्रति गुरुकुल में ४०० वीघा भूमि कृषि के लिये उपलब्ध है। इस भूमि के अतिरिक्त ३०० बीघा भूमि पुराने गुरुकुल की भूमि में भी कृषि के लिये है।

१९४७ में भारतीय स्वतन्त्रता के पश्चात् पंचवर्षीय योजना के आधीन कृषि श्रम से उपेक्षा को हटा कर सम्मान उत्पन्न करने के लिये विशेष प्रयत्न किया जा रहा है।

इन सब बातों का ध्यान रख कर विद्यासभा ने १६ सितम्वर १९५१ ई० को गुरुकुल में कृषि विद्यालय खोलने का निश्चय किया। इस कार्य में उत्तर प्रदेश सरकार के उपमंत्री श्री जगनप्रसाद जी रावत ने विशेष रुचि ली और जुलाई सन् १९५५ ई० में भारत सरकार के कृषि मंत्री पंजाबराव देशमुख के करकमलों द्वारा कृषि विद्यालय का उद्घाटन किया गया।

कृषि विद्यालय में उत्तर प्रदेशीय सरकार द्वारा स्वीकृत और नियत 'डीप्लोमा कोर्स की शिक्षा दी जाती है। सम्प्रति दो श्रेणियों की

'पाठविधि है विचार यह है कि इसको विकसित करके 'कृषिमहाविद्यालय' के रूप में उन्नत किया जावे। एतदर्थ गवर्नमैन्ट से पत्र व्यवहार चल रहा है और यह भी आवश्यक है कि उपयुक्त साधन उपकरण, आश्रम विद्यालय भवन आदि की व्यवस्था की जावे।

कृषि विद्यालय की प्रबन्ध व्यवस्था एक समिति द्वारा संचालित होती है।

## ग्राम प्रशिक्षण केन्द्र

सन् १९५६ ई० में कृषिविद्यालय के साथ ही गुरुकुल में उत्तर प्रदेशीय सरकार ने अपनी द्वितीय पंचवर्षीय योजना के आधीन ग्राम प्रशिक्षण केन्द्र (ट्रेनिंग–एक्सटेन्शन प्रोजेक्ट) को भी गुरुकुल में स्थापित कर दिया है। इस विभाग में विद्यार्थियों का चुनाव उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा किया जाता है। ८० हजार रुपया वार्षिक का संपूर्ण व्यय उत्तर प्रदेश की सरकार करती है।

सम्प्रति इस विभाग में ११० विद्यार्थी हैं। स्टाफ में १ प्रिंसिपल, ६ प्रोफेसर, ४ लेखक, २ चौकीदार, १ मैकेनिक, १ कारपेन्टर, १ लोहार, १ माली, १ लैब असिस्टेंन्ट, १ दफतरी, १ ड्राइवर आदि दिये हुये हैं जिनका ३०० रु० मासिक व्यय गवर्नमेन्ट द्वारा किया जाता है।

इस केन्द्र के प्रत्येक विद्यार्थी को ३० रु० सरकार द्वारा मासिक छात्रवृत्ति दी जाती है।

उत्तर प्रदेशीय सरकार की ओर से श्री देवकीनन्दन जी वैष्णव बी० एस-सी०, ए० जी०, यू० पी० ए० एस० को जो भारतीय एवं विदेशी शिक्षण संस्थाओं में शिक्षा प्राप्त किये हुए हैं तथा जिनको अनेक वर्षों का व्यवहारिक अनुभव है, दोनों विभागों के निरीक्षण एवं संचालन के लिये प्रिन्सिपल नियुक्त किया गया है। उनकी देख रेख में उनके

योग्य सहायक प्रोफेसरों द्वारा कृषि, बागबानी तथा फलउद्योग, पशुपालन तथा पशु सेवा चिकित्सा, कृषि इंजीनियरिंग, सहकारिता, समाज शिक्षा प्रसार एवं प्रशिक्षण, जन स्वास्थ्य निर्माण कार्य तथा पंचायत आदि का प्रशिक्षण कार्य संम्पन्न हो रहा है ।

इस कार्य को उन्नत करने के लिए अधिक व उचित स्थान, पुस्तकालय, सूचनालय, सांस्कृतिक स्थल, पशु चिकित्सालय, लेक्चर तथा स्टाफ रूम तथा कृषि उपकरणों से आदि के लिये पृथक् स्थानों की व्यवस्था हो रही है ।

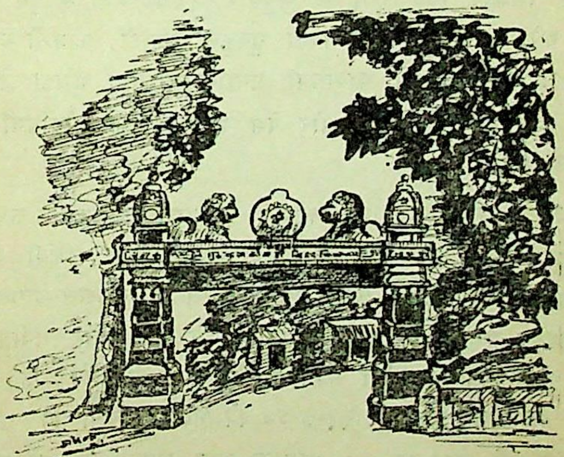
## विज्ञान महाविद्यालय

### पं० जवाहरलाल नेहरू द्वारा उद्घाटन

गुरुकुल कांगड़ी की प्रारम्भिक योजना के मन्तव्यों के अनुसार विज्ञान की विशिष्ट शिक्षा देने के लिये विद्या सभा ने १६ दिसम्बर १६५१ के अधिवेशन में निश्चय किया कि गुरुकुल में विज्ञान की उत्कृष्ट शिक्षा देने के लिये विज्ञान महाविद्यालय की नींव डाली जाय तदनुसार विद्याधिकारी परीक्षोतीर्ण छात्रों के लिए विज्ञान की श्रेणियां जारी कर दी गयीं जिनमें उत्तर प्रदेश के इन्टरमीडिएट द्वारा निर्धारित एफ०एस-सी० की पढ़ाई होने लगी । इन श्रेणियों में अन्य विश्वविद्यालयों के मैट्रिक परीक्षोतीर्ण छात्र भी प्रविष्ट हो सकते हैं ।

विज्ञान महाविद्यालय की पहली और दूसरी श्रेणियां आरम्भ करने के साथ ही यह निश्चय कर लिया गया था कि दो साल पश्चात् अगली दो श्रेणियों की भी पढ़ाई की व्यवस्था की जाय । अगली दो श्रेणियों का स्तर बी०एस-सी० के समान था । इसका यह भी निश्चय किया गया कि जब तक यूनीवर्सिटी ग्रान्ट्स कमीशन द्वारा गुरुकुल कांगड़ी

को यूनिवर्सिटी नहीं माना जाता तब तक बी०एस-सी० श्रेणियों को आगरा युनिवर्सिटी ही से सम्बद्ध कर दिया जाय। विज्ञान की ऊंची शिक्षा देने के लिये यह आवश्यक था कि उसके लिये अलग भवन बनाया जाता। प्रयत्न करके केन्द्रीय सरकार से एक लाखों रुपये का अनुदान विज्ञान भवन के लिये प्राप्त किया गया। जब भवन तैयार हो गया तब उसके उद्घाटन के लिये भारत के प्रधान मंत्री श्री पण्डित जवाहरलाल नेहरु से प्रार्थना की गयी कि वे गुरुकुल आ कर अपने हाथ से उद्घाटन करने की कृपा करें। उन्होंने स्वीकार कर लिया। १ अगस्त १९५७ को वे गुरुकुल में पधारे। यज्ञ के पश्चात् उन्होंने विज्ञान भवन का उद्घाटन किया। बी० एस० सी० क्लास चल रही हैं। अभी तक केवल फिजिक्स (भौतिक) कैमिस्ट्री (रसायन) की ही उच्च शिक्षा दी जाती है। आशा है अगले वर्ष से बायौलौजी (प्राणीशास्त्र) और बॉटनी (वनस्पति शास्त्र) की शिक्षा भी बी० एस० सी० तक आरम्भ हो जायेगी।



सिंह द्वार

* * *

: ११ :

# अन्य विभाग

## गुरुकुल काँगड़ी फार्मेसी

गुरुकुल में आयुर्वेद की शिक्षा का संचालन संवत् १९७६ से प्रारम्भ हो गया था और विद्यार्थियों को आयुर्वेद का व्यवहारिक ज्ञान देने के लिये शास्त्रोक्त औषधियों का निर्माण प्रारम्भ हो गया था। सन् १९३० ई० में भारत सरकार द्वारा एक ड्रग इन्क्वायरी कमेटी बनाई गई थी, जिसकी सिफारिशों के अनुसार १९४०-४५ में ड्रग एक्ट भी बनाये गये थे। और इन्ही दिनों गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी का विस्तार भी हुआ। गुरुकुल की ओषधियां प्रमाणिकता तथा शुद्धता के कारण अधिक जन-प्रिय होने लगीं और देश में शास्त्रोक्त औषधियों की मांग बढ़ने लगी।

फार्मेसी में गुरुकुल का लगभग ६ लाख से ऊपर धन लगा हुआ है और फार्मेसी के बढ़ते हुए कार्यो के कारण अब फार्मेसी की नवीन विशाल इमारत का दो लाख रुपये के मूल्य की कनखल—ज्वालापुर रोड पर निर्माण हो गया है और आधुनिक ढंग की नवीन नवीन मशीनों द्वारा कार्य होने लगा है। फार्मेसी के लाभ के धन के बटवारे के संबन्ध में विद्या सभा ने २१-७-४० को निश्चय किया कि सोलह हजार रुपये तक की आय का ६० प्रतिशत भाग गुरुकुल आयुर्वेद महाविद्यालय

को दिया जाय और ४० प्रतिशत गुरुकुल महानिधि को, परन्तु इस आयु में से कम से कम आठ हजार रुपया प्रतिवर्ष गुरुकुल महाविद्यालय को आवश्य दिया जाय। (ख) २० हजार रुपयों तक की आय की दशा में यह राशि गुरुकुल आयुर्वेद महा विद्यालय तथा गुरुकुल महानिधि को आधी आधी बांट दी जाय। (ग) आय का अनुपात बढ़ने की दशा में आयुर्वेद महाविद्यालय को पिछले अनुपात द्वारा प्राप्त अधिकतम राशि किसी भी दशा में घटाई नहीं जायगी। चौबीस हजार रुपयों से अधिक आय होने की दशा में उस अधिक राशि के विभाजन पर विद्यासभा पुनः विचार करेगी।

गुरुकुल फार्मेसी तथा रसायन विभाग के कार्य संचालन के लिये में स्वामिनी सभा ने एक व्यवसायपटल की स्थापना की जिसकी देखरेख में गुरुकुल के व्यवसाय सम्बन्धी कार्यों का संचालन होने लगा। उसका एक व्यवसायाध्यक्ष नियत किया गया जो मुख्याधिष्ठाता के निर्देशानुसार प्रबन्ध का कार्य करता था। श्री दीनदयालु जी शास्त्री १४ वर्ष ६ मास तक व्यवसायाध्यक्ष का कार्य बड़ी सफलता से करते रहे उनके सन् १६५६ में उत्तर प्रदेश की सरकार के उपशिक्षा मंत्री नियत हो जाने के पश्चात् श्री अर्जुनदेव विद्यालंकार व्यवसायाध्यक्ष नियत हुए।

कार्य की मात्रा बहुत अधिक बढ़ जाने से विद्यासभा ने यह आवश्यक समझा कि प्रबन्ध व्यवस्था को और भी दृढ़ किया जाय। अपने ३१ दिसम्बर १९५५ के अधिवेशन में दिल्ली के प्रसिद्ध उद्योगपति तथा व्यापारी श्री ला० हंसराज गुप्त को गुरुकुल उद्योग शिक्षापटल का व्यवस्थापक नियत किया। इस समय प्रबन्ध की व्यवस्था यह है कि गुरुकुल की स्वामिनी सभा का गुरुकुलीय उपप्रधान व्यवसायपटल का निज अधिकार से प्रधान होता है। तदनन्तर मुख्याधिष्ठाता के सारे प्रबन्ध का मुख्य अधिकारी होने के कारण व्यवसाय शिक्षा विभाग का आन्तरिक

सब प्रबन्ध व्यवस्थापक के निर्देशानुसार व्यवसायाध्यक्ष के हाथ में है।

उद्योग शिक्षा विभाग ने कितनी उन्नति की है इसका अनुमान अन्त में परिशिष्ट संख्या २ में दिये आँकड़ों से विदित हो जायगा ।

## वैदिक अनुसंधान विभाग

वैदिक अनुसन्धान विभाग का कार्य श्री भगवद्दत्त वेदालंकार एम०ए० करते हैं । यह आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का द्वारा प्रदत्त धन से संचालित है । संवत् २०११ में "अयास्य" ऋषि पर एक खोजपूर्ण निबन्ध लिखा गया है । उपनिषदों व ब्राह्मणग्रन्थों की परिभाषाओं और कथानकों का स्पष्टीकरण तथा वेद के रुद्र देवता, बृहस्पति देवता अश्विनौ व कण्व पर हस्तलेख तैयार किया गया है । वैदिक ऋषि नृषत कण्व, मेधातिथि, अयास्य पर लेखादि संगृहीत किए गये ।

सम्वत् २०१२ में वैदिक आधार पर सामान्य ऋषि का स्वरूप: उसकी शक्ति, ऋषित्व की प्राप्ति आदि विषयों पर ऋषि भूमिका का स्वरूप लिखा गया। अग्नि, इन्द्र, सोम, अश्विनौ आदि देवताओं से ऋषि के संबन्ध में प्रकाश डाला गया ।

सम्वत् २०१३ में विद्वान् कार्यकर्ता ने वेद के निम्नलिखित विषयों पर कार्य किया —

१. वेदों के ऋषि—पूर्व पक्ष के विविध पक्षों का निरूपण, अापौरुषेय पक्ष ऋषि अग्नि, ऋषि इन्द्र, ऋषि सोम ।

२. पुरुषार्थ, चतुष्टय अर्थात् धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, का साधक वेद ।

३. सामाजिक जीवन में धर्म का स्थान ।

# श्रद्धानन्द प्रतिष्ठान–कोष निर्माण

संवत् २०११ में श्री पं० इन्द्र जी विद्यावाचस्पति मुख्याधिष्ठाता की योजना पर हिन्दी भाषा के कोष निर्माण का कार्य प्रारम्भ हुआ यह विभाग इतिहास उपाध्याय श्री प्रो० हरिदत्त जी के निरीक्षण में कार्य कर रहा है। कोष के प्रमुख कार्यकर्ता श्री धर्मदेव जी विद्यावाचस्पति विद्यामार्तण्ड इस कोष का संपादन करते हैं। और पं० शंकरदेव जी विद्यालंकार, एम०ए०भी उनकी सहायता के लिये विशेष रूप से नियुक्त किये गये थे। इस कोष में ५० हजार समानार्थक शब्दों के संग्रह करने की योजना है। संवत् २०११ में ५ हजार शब्द तथा संवत् २०१५ में विज्ञान, गणित, खनिज, कृषि, दर्शन, भूगोल, इतिहास आदि के १५ हजार प्रमाणिक शब्दों का संकलन किया जा चुका था।

संवत् २०१६ तक हिन्दी कोष के लिए ४० हजार शब्दों का संकलन किया जा चुका था। विभिन्न विज्ञान के शब्दों का इस वर्ष विशेष संग्रह किया है। जिन्हें यथास्थान कोष में स्थान दिया जायेगा। इस कोष की यह मुख्य विशेषता है कि अंग्रेजी शब्दों के समानार्थक संस्कृत तथा हिन्दी शब्दों का और अनेक स्थानों पर बंगला गुजराती मराठी, कन्हड़, तेलुगु, मलयालम आदि प्रादेशिक भाषाओं में विद्यमान उत्तम संस्कृत तत्सम तद्भव शब्दों का भी निर्देश किया जारहा है। अंग्रेजी के पर्यायवाची समझे जाने वाले शब्दों के सूक्ष्म भेदों के अनुसार उचित समानार्थक संस्कृत और हिन्दी शब्दों का संकलन किया जा रहा है। एतद्विषयक लेख माला कोष संपादक महोदय की ओर से गुरुकुल पत्रिका में मुद्रित कराई जा रही है। कोष के नमूने के तौर पर लगभग ४० पृष्ठ की एक पुस्तिका छपवाई गई है जिसका भारत के प्रसिद्ध विद्वानों में वितरण किया गया है ताकि उनके परामर्शों

से लाभ उठाया जा सके। इस पुस्तिका की भूमिका मान्य कुलपति श्री पं० इन्द्र जी विद्यावाचस्पति ने लिखी है और श्री डॉ० अविनाशचन्द्र बोस, श्री पी० के० गोडे, प्रिन्सिपल महेन्द्रप्रताप शास्त्री, आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री आदि विद्वानों की सम्मतियां भी उसमें प्रकाशित की गई हैं। आर्थिक कारणों से कुछ समय के लिये कोष निर्माण का कार्य स्थगित करना पड़ा है। आशा है कि शीघ्र ही फिर आरम्भ हो जायगा।

## अतिथि भवन

प्राचीनकाल के आश्रमों के समान गुरुकुल में प्रारम्भ से ही अतिथियों के आदर सत्कार और निवास की प्रथा प्रचलित हो गई थी। अतिथि दो प्रकार के होते थे। एक तो गुरुकुल के ब्रह्मचारियों के संरक्षक दूसरे दर्शनार्थी। इन दोनों श्रेणियों के लिये अलग अलग निवास भोजन आदि की व्यवस्था रहती थी। पुण्य भूमि (गुरुकुल की पुरानी भूमि) में परिवार गृहों में एक सर्वमान्य धर्मशाला के अतिरिक्त दिल्ली के एक दानी महोदय की ओर से एक पक्की धर्मशाला भी बन गई थी जो अपने देश के अथवा विदेश के आए हुए विशेष अतिथियों के ठहरने के काम में आती थी। अमरीका के मि० फेल्प्स, इंगलैण्ड के मिस्टर एन्ड्रूज, मिस्टर मैकडोनल, मिस्टर नेवनसन आदि प्रसिद्ध पुरुषों के अतिरक्त अन्य अनेक दर्शक और शिक्षार्थी विदेशी महानुभाव भी गुरुकुल के आतिथ्य का अनुभव करते थे।

अब १९२४ ई० में बाढ़ के कारण पुरानी भूमि छोड़ देनी पड़ी और नई भूमि में सब कुछ नये सिरे से बनाना पड़ा, तब पुरानी अतिथि सेवा की व्यवस्थाएं टूट गयीं धीरे धीरे नई भूमि में भी दानियों की सहायता से धर्मशालाओं का निर्माण हो गया। जिनमें अतिथियों

के रहने का सुविधा हो जाती थी परन्तु विशेष अतिथियों के लिये आतिथ्य का कोई उचित प्रबन्ध नहीं था। यह सोच कर गुरुकुल के अधिकारियों ने विद्यासभा से एक अच्छा अतिथि भवन बनाने की स्वीकृति प्राप्त कर ली और उसके लिये अनेक प्रयत्न करके लगभग २२ हजार रुपया प्राप्त किया। परिवारगृहों के बाहर एक छोटी सी वाटिका के मध्य में वह अतिथि भवन बहुत शोभायमान होता है। देश और विदेश के दर्जनों प्रतिष्ठित अतिथि भी उसमें निवास करके गुरुकुल को अतिथि सत्कार करने का अवसर दे चुके है। हमारे अतिथि भवन में आये हुए अतिथियों की सूची में डॉ० राधाकृष्णन, पं० जवाहरलाल नेहरू, श्री अनंतशयनम, श्री के० एम० मुन्शी आदि अनेक आयंगर महानुभावों के नाम हैं। अमेरिका की फोर्ड फाउण्डेशन के सदस्य, रूस के सांस्कृतिक प्रतिनिधि श्री कोदिनोव भी गुरुकुल के अतिथि भवन में निवास कर चुके हैं। आजकल जापान के समृद्ध परिवार के कोकीनागा नाम के छात्र उसमें रहकर हिन्दी और संस्कृत की शिक्षा पा रहे हैं। इस प्रकार जहां नया अतिथि भवन देश के बाह्य-वातावरण से गुरुकुल का सम्पर्क स्थापित करने का सुन्दर साधन बन गया है वहां उसने अन्य देशों से गुरुकुल के सम्बन्धों को जोड़ने में भी सहायता की है।

## शारीरिक व्यायाम तथा क्रीड़ा

गुरुकुल कांगड़ी में ब्रह्मचारियों की शारीरिक योग्यता को बढ़ाने का प्रारम्भ से यत्न किया जाता रहा है। जब अभी बालक झोपड़ियों में रहते थे तभी से डण्ड, बैठक, कुश्ती कबड्डी आदि दैनिक व्यायाम तथा खेलों का क्रम जारी हो गया था। शारीरिक व्यायाम प्रत्येक छात्र के लिये अनिवार्य था। सन् १९०४ में ही क्रिकेट और कुछ समय

फुटबाल दल भी व्यायाम के कार्यक्रम में सम्मिलित कर लिया गया। दो वर्ष पश्चात् गतका, फरी तथा लाठी प्रहार आदि के अच्छे शिक्षक मिल जाने पर उनकी भी व्यवस्था की गयी। धनुष-बाण और घुड़सवारी शारीरिक शिक्षण के आवश्यक भाग बना दिये गये।

सन् १९०८ के लगभग हाकी की क्रीड़ा भी व्यायाम में सम्मिलित हो गयी धीरे धीरे उसमें गुरुकुल के छात्रों ने इतनी कुशलता प्राप्त की - कि उन्होंने कई आल इण्डिया हाकी टूर्नामिंटों में विजयी हो कर ट्राफ़ियां जीतीं।

उन्हीं दिनों में देश में प्रो० राममूर्ति के प्राणायाम और शारीरिक शक्ति के शारीरिक प्रयोगों की धूम मच गयी थी। ब्रह्मचारियों ने भी उन सब प्रयोगों का अभ्यास आरम्भ कर दिया जिन्हें दिखा कर प्रोफेसर राममूर्ति सरकस का आयोजन किया करते थे।

छाती पर पत्थर तोड़ना, बहुत से आदमियों से भरी गाड़ी छाती पर से निकालना, चलती मोटर को कमर में रस्सा बांध कर रोक देना। इत्यादि प्रदर्शनों का अभ्यास करके कई ब्रह्मचारियों ने लोगों को चकित कर दिया। गुरुकुल के कई स्नातक और छात्र इस समय भी धनुष - बाण और बल प्रयोग के प्रदर्शनों को सफलता पूर्वक कर सकते हैं। श्रद्धानन्द सप्ताह के अवसर पर गुरुकुल कांगड़ी में एक "अखिल भारतीय श्रद्धानन्द हाकी टूर्नामिंट" होता है – जो गुरुकुल के क्रीड़ा प्रेम का प्रमाण है। शिक्षा का यह सर्व सम्मत सिद्धान्त है कि पुस्तक विद्या के साथ साथ शारीरिक उन्नति की ओर भी ध्यान देना आवश्यक है। गुरुकुल में उस की कभी उपेक्षा नहीं की गयी।

# सैनिक शिक्षा

स्वतन्त्र देश के नवयुवकों के लिए सैनिक शिक्षा का प्राप्त करना अत्यन्त आवश्यक समझा जाता है ताकि देश के संकटकाल में वे रक्षा के लिये सर्वथा तैयार रहें। इस विचार से सन् १९५६ में विद्यालय में ए०सी०सी० तथा महाविद्यालय में एन०सी०सी० का शिक्षण प्रारम्भ कर दिया गया था। प्रोफेसर हरगोपालसिंह जी एम० ए० जो कि विधि पूर्वक एन०सी०सी० के शिक्षक की शिक्षा प्राप्त करके द्वितीय लेफ्टिनेन्ट का पद प्राप्त कर चुके हैं निरीक्षक नियुक्त किये गये। प्रतिवर्ष यह विभाग उन्नति करता गया। भिन्न भिन्न केन्द्रों में जो शिविर लगते गये उनमें गुरुकुल के केडिटों ने भी भाग लिया। १९५७ के नवम्बर मास में एन०सी०सी का ट्रेनिंग कैम्प लच्छीवाला में लगा था। कैडिट्स को लच्छीवाला के बीहड़ जंगलों में हमला करने तथा बचने की क्रियाओं का अभ्यास कराया गया। इसी वर्ष रानीखेत में भी कैम्प हुआ जिसमें गुरुकुल के सैनिक छात्रों ने सफल भाग लिया। स्वतन्त्रता दिवस प्रतिवर्ष सैनिक प्रशिक्षण केन्द्र की ओर से समारोह के साथ मनाया जाता है। १९५८ ई० में गुरुकुल कांगड़ी के एन० सी० सी० के छात्रों ने ३ शिवरों में और उत्तर प्रदेश की रैली में भाग लिया। लच्छीवाला के कैम्प में प्रशिक्षण के बाद जो परीक्षा हुई उसमें गुरुकुल के छात्रों ने बहुत सम्मान और कई पदक प्राप्त किये। कैडिट दयानन्द के शारीरिक व्यायामों के प्रदर्शन से सब अधिकारी प्रसन्न हुए।

गुरुकुल के प्रशिक्षण कार्य से सन्तुष्ट हो कर उत्तरप्रदेश सरकार की ओर से एन० सी० सी० के भवन निर्माण के लिये ७१००) रु० का अनुदान प्राप्त हुआ है। गुरुकुल ने अपनी ओर से ८ हजार रु० व्यय करके उस भवन को पूरा करा दिया है। इस प्रकार गुरुकुल का एन० सी० सी० विभाग बहुत शीघ्र पहिले दर्जे के केन्द्रों में आ जायगा।

# गुरुकुल पत्रिका

गुरुकुल पत्रिका को प्रकाशित होते १२ वर्ष हो गये हैं। इसमें सांस्कृतिक, धार्मिक और शिक्षा संबन्धी लेखों के अतिरिक्त गुरुकुल विश्व-विद्यालय की महीने भर की वृत्तियों का भी विवरण दिया जाता है। इसकी व्यवस्था उप-कुलपति के आधीन है और इसके वर्तमान सम्पादक पं० धर्मदेव विद्यामार्तण्ड हैं। उससे पूर्व इसका सम्पादन श्री रामेशवेदी और पं० शंकरदेव विद्यालंकार किया करते थे। जिन विद्वानों के लेख इस पत्रिका में समय समय पर निकलते रहे हैं। उन में से कुछ के नाम यह हैं—

आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री एम० ए०, पं० आत्मानन्द विद्यालंकार, डा० इन्द्रसेन एम० ए०, पी० एच० डी०, डा० शारदारानी साहित्य-रत्न एम० ए०, श्री समसुद्दीन एम० ए०, पं० कर्णवीर साहित्य चक्रवर्ती, कविरत्न डा० हरिशंकर शर्मा, डा० सूर्यदेव एम० ए०, पं० वंशीधर विद्यामार्तण्ड, आदि कवि अपनी कविताओं से पत्रिका को अलंकृत करते रहते हैं। यह पत्रिका जहां एक ओर 'गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का आदर्श' के प्रचार और व्याख्या का साधन है वहां वह गुरुकुल में पढ़ने वाले छात्रों के साथ उनके संरक्षकों के सम्पर्क को भी जीवित रखती है। गुरुकुल की स्वर्ण जयन्ती के अवसर पर इसका जो विशेषांक निकला था उस में गुरुकुल का लगभग पूरा इतिहास और विवरण आ गया था। संचालकों की इच्छा है कि गुरुकुल पत्रिका को और भी अधिक उन्नत करके सर्व साधारण तथा विद्वानों के लिये अधिक उपयोगी बनाया जाय।

: १२ :

# संस्कृत सेवा

गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना सन् १९०० में जिन पवित्र और उदात्त उद्देश्यों से हुई थी उनमें वेदादि सत्य शास्त्रों की शिक्षा और संस्कृत विद्या का प्रचार भी था जिस की उस समय के विद्यालयों में नितान्त उपेक्षा थी। गुरुकुल ने अपनी समस्त शाखाओं में संस्कृत शिक्षा को सब विद्यार्थियों के लिये अनिवार्य कर दिया और इसकी उच्चतम शिक्षा का प्रबन्ध किया। इस का परिणाम यह हुआ कि यहां के विद्याधिकारी परीक्षोत्तीर्ण विद्यार्थियों की संस्कृत की योग्यता बाहर के शास्त्री परीक्षोत्तीर्ण छात्र से भी अधिक रही। यहां के जो स्नातक विद्यालङ्कार, सिद्धान्तालङ्कार, वेदालङ्कार इत्यादि उपाधि लेकर निकले उन में से बहुतों की वेद, वैदिक साहित्य, संस्कृत साहित्य, दर्शनशास्त्र इत्यादि की योग्यता बाहर की आचार्य इत्यादि संस्कृत की उच्च परीक्षाओं में उत्तीर्ण व्यक्तियों से कम नहीं, बल्कि विषय और ज्ञान की विशालता की दृष्टि से अधिक ही रही यदि ऐसा कहा जाय तो इस में कोई अत्युक्ति न होगी। गुरुकुल विश्वविद्यालय ने न केवल संस्कृत के विद्वान अपितु संस्कृत में धारा प्रवाह भाषण करने वाले, ग्रन्थ निर्माण करने वाले और उत्कृष्ट कविता करने वाले कवि भी अच्छी संख्या में उत्पन्न किये।

# संस्कृत ग्रन्थ निर्माण

गुरुकुल का ध्यान संस्कृत के उत्तम ग्रन्थों के निर्माण की ओर स्थापना काल से ही रहा । प्रारम्भिक कक्षाओं से लेकर महाविद्यालय की उच्च कक्षाओं तक के लिये व्याकरण, साहित्य, दर्शन, धर्मशास्त्र तथा वेद व्याख्या विषयक ग्रन्थ गुरुकुल के आचार्य तथा उपाध्याय वर्ग की ओर से बड़ी संख्या में लिखित और प्रकाशित किये गये । इस बात को अनुभव करते हुए कि संस्कृत साहित्य के अनेक ग्रन्थ जो विशारद, शास्त्री, आचार्य, काव्य तीर्थ आदि परीक्षाओं में पाठ्य पुस्तक के रूप में पढ़ाये जाते हैं, उन में अनेक अश्लील, कामोत्तेजक स्थल हैं जो ब्रह्मचर्य की दृष्टि से अत्यन्त हानिकारक हैं, गुरुकुल ने इन पुस्तकों के संशोधित संस्करण प्रकाशित किये जिस से इन काव्य नाटकादि के उत्तम भागों से छात्र लाभ उठा सकें ।

## व्याकरण के ग्रन्थ

प्राचीन व्याकरण में सबसे प्रमुख स्थान पाणिनिमुनि कृत अष्टाध्यायी और पतञ्जलिमुनि कृत महाभाष्य का है । गुरुकुल के प्रथम आचार्य पं. गंगादत्त जी व्याकरण के धुरन्धर विद्वान थे उन्होंने 'पाणिनीयाष्टकम्' इस नाम से दो भागों में अष्टाध्यायी के सम्पूर्ण सूत्रों की व्याख्या में अद्भुत ग्रन्थ लिखा जो गुरुकुल की ओर से प्रकाशित किया गया । यह ग्रन्थ अत्यधिक उपयोगी है । इस के दो भागों का मूल्य आजकल १४.०० अर्थात् ७.०० प्रति भाग है ।

अष्टाध्यायी मूल को भी गुरुकुल की ओर से प्रकाशित किया गया और सन्धि विषय, नामिक, आख्यातिक, स्त्रैणताद्धित आदि उसके भागों को पृथक् संस्कृत टीका तथा टिप्पणियों सहित प्रकाशित किया गया जिन



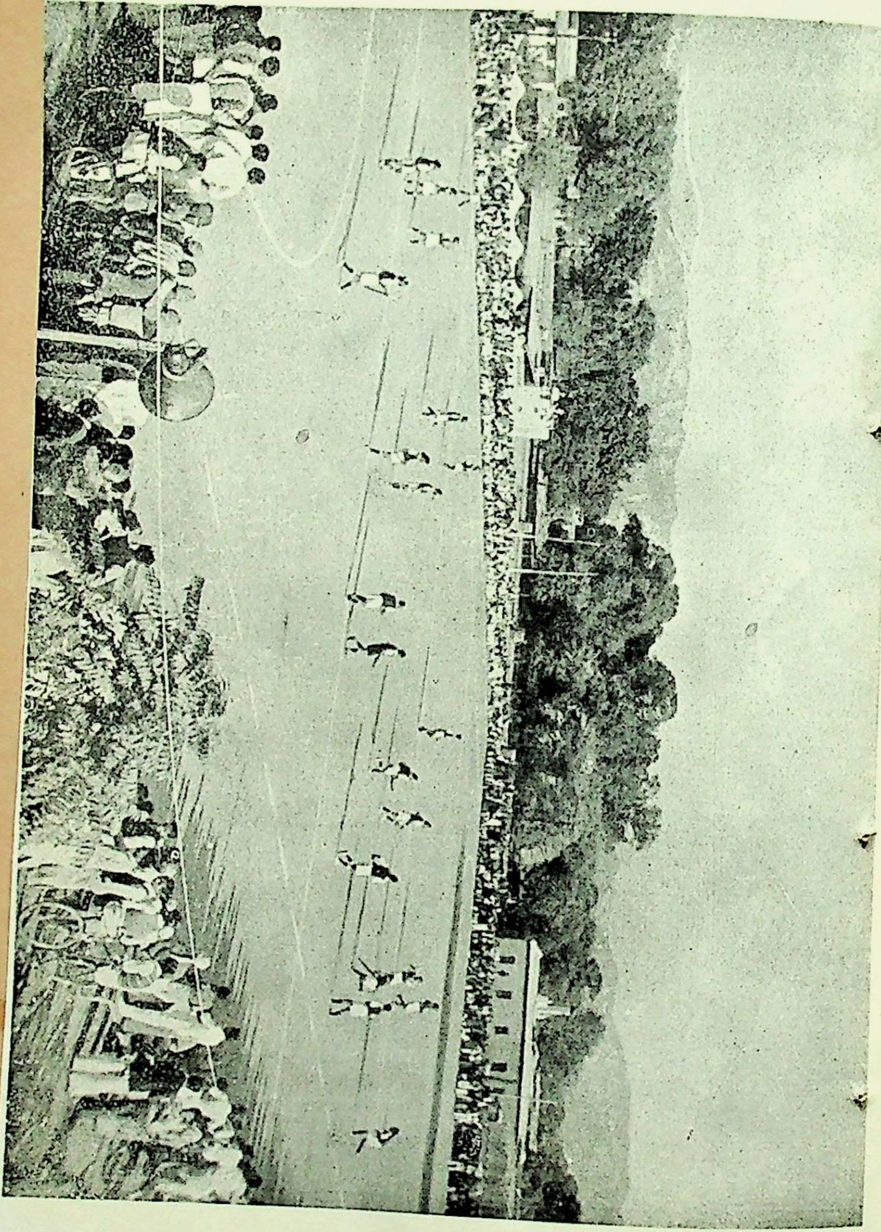

—दयानन्द द्वार

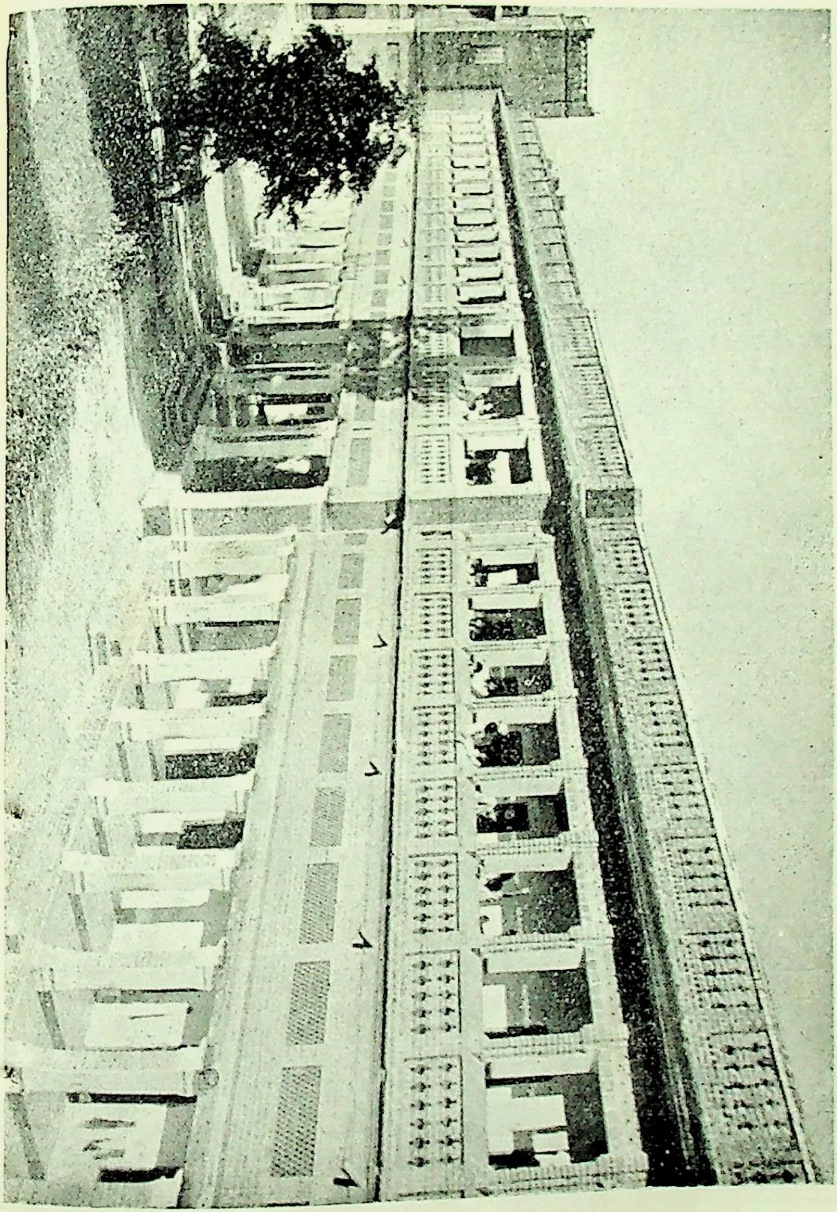
श्रद्धानन्द द्वार

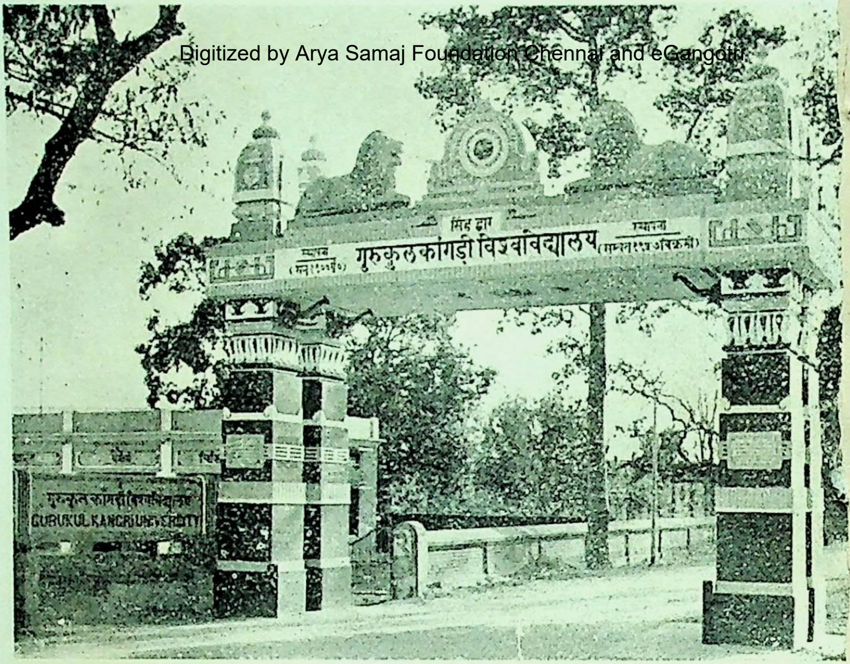


गुरुकुल का क्रीड़ा क्षेत्र










सिंह द्वार

जापानी विद्यार्थी कोकीनागा हिन्दी का अध्ययन करते हुए



से सब विद्यार्थी लाभ उठा सकते हैं। पं० धर्मदेव जी वेदवाचस्पति द्वारा लिखित सरल शब्द रूपावली भी प्रकाशित की गई। महाभाष्य के पस्पशान्हिक, अंगाधिकार आदि अनेक प्रकरणों को पृथक् प्रकाशित किया गया। गुरुकुल के व्याकरण विषयक ये प्रकाशन छात्रों के लिये अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हुए हैं।

## संस्कृत की प्रारम्भिक पुस्तकें

गुरुकुल ने संस्कृत पाठशालाओं में साधारणतया प्रचलित पाठ्य पुस्तकों को अनेक अंशो में पर्याप्त उपयोगी तथा शैली की दृष्टि से उत्तम न पाकर अपनी ओर से सुयोग्य पण्डितों द्वारा पुस्तकें तैयार कराई जिन में निम्न विशेष उल्लेख योग्य हैं।

१, गुरुकुल के प्रथम सुयोग्य स्नातक, संस्थापक महात्मा मुन्शीराम जी के ज्येष्ठ पुत्र श्री हरिश्चन्द्र जी विद्यालंकार कृत संस्कृत प्रवेशिका प्रथम भाग जिस के १६ संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं। इस से इसकी उपयोगिता और लोकप्रियता का अनुमान किया जा सकता है।

२. संस्कृत प्रवेशिका—२ य भाग श्री आचार्य प्रियव्रत जी वेदवाचस्पति कृत।

३. बालनीति कथामाला जिस में हितोपदेश पञ्चतन्त्र आदि में से नीति विषयक अनेक कथाओं को सरल भाषा में संकलित किया गया।

४. हितोपदेश का संशोधित गुरुकुलीय संस्करण।

५. पञ्चतन्त्र का संशोधित गुरुकुलीय संस्करण २ भागों में।

६. संस्कृताङ्कुर।

७. काव्य लतिका—इस में रघुवंश, भट्टिकाव्य आदि से कुछ उत्तम

भागों को संगृहीत किया गया। यह छात्रों के लिये बड़ा उपयोगी ग्रन्थ है।

८. संस्कृत साहित्य पाठावली।

९. आर्य सूक्ति सुधा।

१०. नीतिशतक (भर्तृहरी कृत) का संशोधित संस्करण।

११. कविराज श्री जगन्नाथ कृत 'अन्योक्ति शतकम्' का संशोधित संस्करण।

१२. साहित्य पुष्पाञ्जली—गुरुकुल के ब्रह्मचारियों तथा स्नातकों द्वारा निर्मित गीतियों का संग्रह।

## उच्च कक्षाओं के लिये संस्कृत ग्रन्थ

## साहित्यसुधा संग्रह के तीन भाग

यह संग्रह वेद, उपनिषद्, रघुवंश, कुमारसंभव, कादम्बरी, हर्षचरित, वासवदत्ता, अभिज्ञानशाकुन्तल, प्रबोधचन्द्रोदय, उत्तर रामचरित, मुद्राराक्षस, अनर्घराघव इत्यादि प्रसिद्ध संस्कृत ग्रन्थों से साहित्याचार्य पं. वागीश्वर जी विद्यालंकार और पं. भवानीप्रसाद जी ने किया जो विद्यार्थियों के लिये अत्यधिक उपयोगी है। इस के द्वारा विद्यार्थी प्राचीन और मध्य-कालीन कवियों तथा लेखकों की रचनाओं के अच्छे उपयोगी भागों का बड़ी अच्छी तरह से रसास्वादन कर सकते हैं। श्री विश्वनाथ जी कृत साहित्यदर्पण संस्कृत का सुप्रसिद्ध ग्रन्थ है। गुरुकुल की ओर से उसका संशोधित संस्करण प्रकाशित किया गया जिससे सब छात्र भली भांति लाभ उठा सकते हैं। गुरुकुल के आचार्य महात्मा मुन्शीराम जी ने स्वयं सुप्रसिद्ध मनुस्मृति का एक संशोधित संक्षिप्त संस्करण (जिस में से प्रक्षिप्त श्लोक पृथक् कर दिये गये) 'वेदानुकूल संक्षिप्त मनुस्मृतिः' के नाम

से गुरुकुल की ओर से प्रकाशित कराया जिस से मनुस्मृति का शुद्ध रूप में विद्यार्थी अच्छा परिचय प्राप्त कर सकें। इसी प्रकार अन्य भी संस्कृत साहित्य विषयक कुछ ग्रन्थ और गुरुकुलीय साहित्य परिषद् की ओर से उत्तम संस्कृत निबन्ध प्रकाशित किये गये।

## योग दर्शन

योग दर्शन की भोजवृत्ति भी गुरुकुल विश्वविद्यालय की ओर से प्रकाशित की गई जो एक अत्यन्त उपयोगी ग्रन्थ है।

## वेद और उपनिषद्द विषयक साहित्य

वेद ईश्वरीय ज्ञान है जो धर्म और विज्ञान के मूल हैं। वेदों की अनिवार्य शिक्षा का गुरुकुल में सब ब्रह्मचारियों के लिये बिना किसी प्रकार के भेद भाव के प्रबन्ध किया गया। वेदों की शिक्षाओं को विद्वन्मण्डली और सर्व साधारण तक पहुंचने के लिये गुरुकुल की ओर से स्वाध्याय मंजरी के नाम पुस्तकें प्रकाशित होती रही हैं। जिन में से विशेष उल्लेख योग्य निम्नलिखित हैं।

१. वैदिक विनय—३ खण्ड— आचार्य देवशर्मा जी विद्यालंकार (स्वा. अभयदेव जी) कृत।

२. वरुण की नौका २ भाग—आचार्य प्रियव्रत जी वेदवाचस्पति कृत।

३. वेदोद्यान के चुने हुए फूल—आचार्य प्रियव्रत जी वेदवाचस्पति कृत।

४. वेद का राष्ट्रीय गीत—आचार्य प्रियव्रत जी वेदवाचस्पति कृत।

५. मेरा धर्म—आचार्य प्रियव्रत जी वेदवाचस्पति कृत।

६. वैदिक कर्त्तव्य शास्त्र—श्री पं. धर्मदेव जी विद्यामार्तण्ड कृत।

७. वेदों का यथार्थ स्वरूप—श्री पण्डित धर्मदेव जी विद्यामार्तण्ड कृत।

८. वैदिक ब्रह्मचर्य गीत—आचार्य अभयदेव जी कृत।

९. ब्राह्मण की गौ—आचार्य अभयदेव जी कृत।

१०. वैदिक आध्यात्म विद्या—श्री पं. भगवद्दत्त जी वेदालंकार कृत।

११. वैदिक स्वप्न विज्ञान—श्री पं. भगवद्दत्त जी वेदालंकार कृत।

१२. आत्म समर्पण—श्री पं. भगवद्दत्त जी वेदालंकार कृत।

१३. वैदिक सूक्तियां—श्री पं. रामनाथ जी वेदालंकार कृत।

१४. वेदगीताञ्जली—श्री पं. वेदव्रत जी वेदालंकार आदि द्वारा संकलित।

१५. सोम सरोवर— श्री पं. चमूपति जी एम. ए. कृत।

१६. सन्ध्या रहस्य— श्री पं. विश्वनाथ जी विद्यालंकार कृत।

१७. सन्ध्या सुमन— श्री पं. नित्यानन्द जी वेदालंकार कृत।

१८. ईशोपनिषद् भाष्य— श्री पं. इन्द्र जी विद्यावाचस्पति कृत इत्यादि।

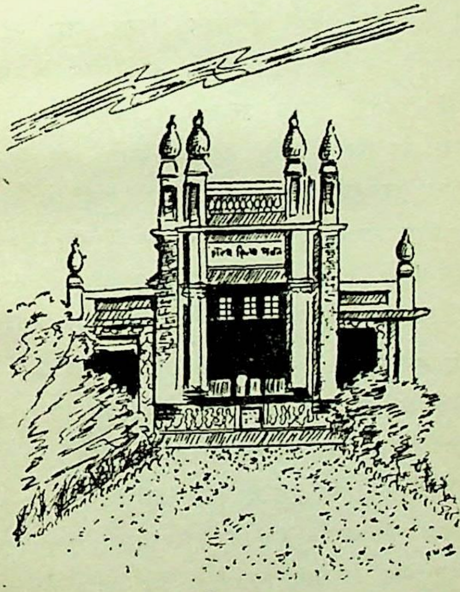
इन पुस्तकों में वेदों के अनेक सूक्तों अथवा अध्यायों तथा विविध विषयों की अत्युत्तम व्याख्या की गई है जो विद्वानों और सर्व साधारण सब के लिये उपयोगी है। इस प्रकार वेदों और उपनिषदों की शिक्षाओं को लोक प्रिय बनाने के लिये गुरुकुल का यह कार्य अत्यधिक अभिनन्दनीय है।

## संस्कृत सभा तथा पत्रिका

इन के अतिरिक्त संस्कृत भाषण के अभ्यास के लिये भी गुरुकुल में संस्कृतोत्साहिनी, देव गोष्ठी इत्यादि सभाओं का आयोजन सदा

किया जाता रहा जिसकी ओर से कवि सम्मेलन, संस्कृत साहित्य सम्मेलन आदि विविध सम्मेलनों का आयोजन होता रहा। इसका परिणाम यह हुआ कि गुरुकुल ने बहुत संख्या में संस्कृत भाषा के धुरन्धर धाराप्रवाही वक्ता उत्पन्न किये संस्कृत की उषा नाम की पत्रिका भी गुरुकुल की ओर से कई वर्षों तक निकलती रही।

इस प्रकार संस्कृत के प्रचार विषयक गुरुकुल के कार्य का संक्षेप से दिग्दर्शन कराया गया है।



शल्य क्रिया भवन

* * *

: १३ :

# सिंहावलोकन

गुरुकुल की स्थापना एक ऊंचे आदर्श को लेकर हुई थी। बीसवीं शताब्दी के सर्वोच्च सुधारक महर्षि दयानन्द ने अपने ग्रन्थों में जिस शिक्षा प्रणाली का प्रतिपादन किया था, वह भारत की प्राचीन परम्परा पर आश्रित थी। महर्षि के निर्वाण के पश्चात् उनके शिष्यों ने उनकी बताई शिक्षा प्रणाली को मूर्त रूप देने के लिये डी०ए०वी० संस्था के रूप में जो प्रयत्न किया उस से आर्य जनता पूरी तरह सन्तुष्ट न हुई। तब महात्मा मुन्शीराम जी (स्वामी श्रद्धानन्द जी) और उनके कुछ साथियों ने प्राचीन गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को पुनर्जीवित करने के लिये गुरुकुल की स्थापना का प्रस्ताव आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के सामने रखा।

गुरुकुल की स्थापना के लिये दो वस्तुएं अनिवार्य रूप से आवश्यक थीं। एक पर्याप्त धन राशि और दूसरी संस्था के लिये स्थान। जो बोले सो कुण्डा खोले की लोकोक्ति के अनुसार यह दोनों कार्य महात्मा मुन्शीराम जी के सुपुर्द किये गये। सभा ने गुरुकुल के संचालन के लिये उस समय ३० हजार रुपये की मात्रा पर्याप्त समझी। महात्माजी ने लगभग ९ मास तक सारे देश का भ्रमण कर के निश्चित राशि से कुछ अधिक राशि एकत्र कर दी। यह १९वीं सदी के अन्तिम दिनों की बात है उस समय किसी सार्वजनिक काम के लिये

३० हज़ार की राशि एकत्रित करना अत्यन्त कठिन ही नहीं असंभव सा समझा जाता था। वह कार्य हो गया तब उचित स्थान की तलाश हुई। उस समय प्रभु की उस प्रेरणा शक्ति का चमत्कार हुआ जो प्रत्येक शुभ कार्य की पूर्ति के लिये हुआ करता है। नजीबाबाद के धर्मपरायण मुन्शी अमनसिंह जी के मन में प्रेरणा हुई और उन्होंने हरिद्वार के सामने, गंगा के पूर्वी तट पर बसा हुआ अपना कांगड़ी नाम का ग्राम अपनी सारी भूमि के साथ गुरुकुल के लिये दे दिया।

उधर गंगा तट पर गुरुकुल के लिये भूमि साफ होने लगी और छप्पर छाये जाने लगे और इधर पंजाब के गुजरानवाला नगर में पहले से बनी हुई वैदिक पाठशाला के कुछ छात्रों को लेकर गुरुकुल की स्थापना करदी गई। गुरुकुल का यह बीजोरोपण सन् १९०० ई० में हुआ।

संस्कृत लोकोक्ति है—"स्वल्पारम्भाः क्षेमकराः" जो कार्य छोटे रूप में प्रारम्भ किये जाते हैं, वह अन्त में कल्याणकारी होते हैं, क्योंकि उन की पूर्ति के लिये जो प्रयत्न और स्वार्थत्याग किया जाता है, वह उन के भविष्य को बहुत उज्वल और शानदार बनादेता है। दो वर्ष तक गुरुकुल की श्रेणियां गुजरांवाला में चलती रहीं। १९०२ के प्रारम्भ में गंगा तट पर प्रारम्भिक श्रेणियों के योग्य छप्पर बन जाने पर लगभग दो दर्जन बालकों को लेकर महात्मा मुन्शीराम जी और आचार्य पं० गंगादत्त जी कांगड़ी की भूमि में पहुंच गये। इस प्रकार गुरुकुल का पौधा गुजरांवाला की ऊसर भूमि से उठाकर कांगड़ी की उपचाऊ भूमि में रोपा गया।

काँगड़ी की उपजाऊ भूमि में आकर गुरुकुल का अंकुर वृद्धि पाने लगा और धीरे धीरे बढ़ता हुआ वृक्ष रूप में परिणत हो गया

१९०० में जो शिक्षणालय प्रारम्भिक श्रेणी से आरम्भ हुआ था। वह नई भूमि में विद्यालय के रूप में आकर १९०८ में महाविद्यालय में और १९१२ में विश्वविद्यालय के रूप में परिणित हो गया। उस समय तक आश्रम, विद्यालय, महाविद्यालय, चिकित्सालय आदि के लिये आवश्यक भवन तैयार हो चुके थे। पुस्तकालय तथा रसायनशाला आदि शिक्षा के लिये उपयोगी शालाएं तैयार हो चुकी थीं। गुरुकुल की स्वाधीन स्थिति और उत्कृष्ट शिक्षा प्रणाली से आकृष्ट होकर देश विदेश के अनेक विद्वान् तथा नेता गुरुकुल में आकर उसकी प्रणाली का अनुशीलन करते थे। गुरुकुल का आकर्षण इतना बढ़ा कि भारत के वाइसराय और गवर्नर, अमेरिका, इंगलैन्ड के पत्रकार तथा राजनैतिक दलों के नेता वास्तविक भारत को समझने के लिये गुरुकुल को देखना आवश्यक समझकर वहां आते और कई दिनों तक ठहरते।

गुरुकुल की इस निरन्तर उन्नति पर दैव का एक आकस्मिक वज्रपात हुआ। सन् १९२४ में गंगा में जो भंयकर बाढ़ आई उस ने एक प्रकार से गुरुकुल में खण्ड-प्रलय मचा दी। आश्रम, भोजनभंडार, चिकित्सालय, वस्तुभंडार, प्रैस, आदि की सब इमारतें सर्वथा नष्ट हो गई। विज्ञान का समान टूट फूट गया या बह गया। पुस्तकालय को भयानक क्षति पहुंची। इस प्रकार २२ वर्षों के घोर परिश्रम, दृढ़ प्रयत्न और तपश्चर्या से बनाया हुआ उद्यान दैव के प्रकोप से उजड़ गया। आघात तो बड़ा भारी था परन्तु गुरुकुल के संचालकों ने हिम्मत नहीं हारी। गंगा के पूर्वी तट पर संकट का अनुभव करके पश्चिमी तट पर नहर के किनारे नई भूमि खरीदी गई और फिर से भवनों का निर्माण किया गया। इस पुनर्निर्माण के पहले पर्व का श्रेय गुरुकुल के उस समय के आचार्य श्री प्रो० रामदेव जी को है। कुछ ही वर्षों के परिश्रम से गुरुकुल की वर्तमान भूमि पर फिर वही उद्यान लहलहाता दिखाई देने लगा जिसे दुर्दैव ने कुछ वर्ष

पूर्व उजाड़ दिया था। इस प्रकार गुरुकुल के जीवन का दूसरा अध्याय आरम्भ हुआ।

जीवन के व्यतीत ६० वर्षों में जल विप्लव की दैवी आपत्ति के अतिरिक्त अन्य अनेक मनुष्य कृत आपत्तियां भी आईं। उन में से मुख्य वह आपत्ति थी जो गुरुकुल की राष्ट्रीय प्रवृत्तियों के कारण सरकारी दमन के रूप में प्रकट होती रही। गुरुकुल की प्रवृत्ति राष्ट्रीयता की ओर अवश्य थी परन्तु उस ने संस्था रूप में राष्ट्रीय आन्दोलन में कभी भाग नहीं लिया। यह सदा शिक्षण संस्था ही बनी रही इस कारण सरकारी कोप के बादल आये और कुछ समय बाद ठहर कर उड़ गये।

संस्थाओं में बाह्य तथा आंतरिक संघर्षों का होना बिलकुल स्वाभाविक है। जहां दस आदमी भी रहेंगे, परस्पर मतभेद होंगे। फिर जहां सार्वजनिक क्षेत्र में एक नवीन आदर्श को सम्मुख रख बहुत से महानुभाव काम कर रहे हों यह कैसे संभव है कि परस्पर मतभेद व संघर्ष न हों इन संघर्षों का भी उपयोग है। जबतक आदर्श सिद्धान्त और क्रिया–विधि के सम्बन्ध में लोगों में मतभेद न हो, और उनकी क्रिया प्रतिक्रिया से समन्वय न हो उन्नति असम्भव है। गुरुकुल के विषय में भी विविध महानुभावों मे बहुत से मतभेद रहे, अनेक बार संघर्ष हुए। पर इस में सन्देह नहीं कि सबका लक्ष्य गुरुकुल की उन्नति रहा। इसी का परिणाम है कि गुरुकुल आज इस उन्नत दशा को पहुंच सका है।

जिन महानुभावों के प्रयत्न से गुरुकुल अपनी वर्तमान दशा को पहुंचा है, उन सब का उल्लेख करना असंभव था। हमने केवल उन महानुभावों का नाम दिया है, जो प्रमुख रूप से जनता के सामने

रहे पर उनके अतिरिक्त कितने ही महानुभाव हैं जिन्होंने गुरुकुल के लिये अपना तन, मन, धन और सबकुछ अर्पण कर दिया। मुन्शी रामसिंह जी गुरुकुल खुलने के कुछ वर्ष बाद यहां आये, उनके पास जो धन-सम्पत्ति थी सब गुरुकुल के लिये दान कर दी और भोजन मात्र पर गुरुकुल की सेवा प्रारम्भ की। उन्होंने कोई चालीस वर्ष तक गुरुकुल की सेवा की। लाला बीरबल जी लाला चिरंजीलाल जी पटवारी ने भंडारी के रूप में और गुरु रामजीलाल जी ने गोशालाध्यक्ष के रूप में गुरुकुल की जो सेवा की उसे कौन आँखों से ओझल कर सकता है। लाला लब्भूराम जी नैय्यड़ ने गुरुकुल के लिये धन एकत्रित करने में जो कार्य किया, वस्तुतः अद्भुत है। यदि उन जैसे दस महानुभाव और निकल आवें तो गुरुकुल आर्थिक चिंता से सदा के लिए मुक्त हो जावे। भाई टेकचन्द नागिया ने ५० हजार रुपया दान देकर गुरुकुल की इमारत निधि को जहां बड़ी सहायता पहुंचाई, वहां प्रतिवर्ष एक विद्यार्थी सर्वथा मुफ्त खाने पीने का व्यय भी न लेकर दाखिल करने की व्यवस्था की, ठसे रघुमल के बाद गुरुकुल के दानियों में भाई जी का ही सर्वोच्च स्थान है। ला० नन्दलाल, श्रीयुत ज्ञानचन्द महता, डिप्टी रघुवरदयाल, पं० महानन्द सिद्धान्तालंकार, श्री देवराज जी सेठी, पं० दीनदयालु जी शास्त्री और पं० वागीश्वर जी आदि महानुभाव ने गुरुकुल के आन्तरिक प्रबन्ध को संभालने में बड़ा भारी कार्य किया। गुरुकुल के कार्यालय को उन्नत करने, सुव्यवस्थित रूप में लाने, और उसके जन्मदाता ला० नन्दलाल जी थे। उसे उन्नत करने का श्रेय ला० मुरारीलाल जी और पं० अमरनाथ जी सप्रू को है हम कहां तक नाम लिखें। गुरुकुल कार्यकर्त्ताओं की दृष्टि से बड़ा सौभाग्यशाली रहा है उसके प्रत्येक अंग पर किसी न किसी स्वार्थत्यागी कर्मचारी के अनथक परिश्रम और लगन की छाप है।

गुरुकुल को स्थापित हुए आज ६० वर्ष हो चुके हैं। ३४ विद्यार्थियों

की छोटी सी पाठशाला से शुरु हो कर अब वह एक विश्वविद्यालय बन चुका है, जिस में एक हजार के लगभग विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। उस के अन्तर्गत चार महाविद्यालय और दस विद्यालय हैं। गुरुकुल की उन्नति सचमुच आश्चर्यजनक है। सरकार से न केवल किसी प्रकार की सहायता न लेकर, अपितु सरकारी शिक्षा से किसी प्रकार का सम्बन्ध न रख राष्ट्रीय शिक्षणालय के रूप में गुरुकुल काँगड़ी को जितनी सफलता मिली है, उतनी अन्य किसी संस्था को नहीं मिली। गुरुकुल की स्थापना आर्य समाज ने की थी। आर्यसमाज के शिक्षा के क्षेत्र में जो विशेष आदर्श और सिद्धान्त हैं उन्हें क्रिया में परिणत कर गुरुकुल ने बड़ा भारी कार्य किया है। वैदिक-धर्म भारतीय सभ्यता और आर्य संस्कृति के रंग में रंगे हुए उच्च शिक्षित नागरिक उत्पन्न कर गुरुकुल ने जहां आर्यसमाज की बड़ी सेवा की है वहां सच्ची राष्ट्रीय शिक्षा का विचार भी देश के सम्मुख रखा है।

गुरुकुल स्थापित करने में आर्य प्रतिनिधि सभा का एक मुख्य उद्देश्य वैदिक साहित्य का अनुशीलन तथा वैदिकधर्म का पुनरुज्जीवन था। इस के लिये जो कार्य गुरुकुल ने किया है, वह ध्यान देने योग्य है। प्रारम्भ में गुरुकुल में इन विषयों को पढ़ाने के लिये जब अध्यापकों की आवश्यकता हुई तो सनातनी पंडित रखे गये। श्री गुरु काशीनाथ जी, पं० सूर्यदेव शर्मा और पं० योगेन्द्रनाथ भट्टाचार्य जी गुरुकुल में सब से पहले वेद वेदांग के अध्यापक थे। ये लोग कट्टर सनातनी थे और गुरुकुल में रहते हुए भी मूर्तिपूजा करते थे। ढूंढने से भी आर्य समाज में कोई भी ऐसा पं० उस समय में नहीं मिल भर था, जो वेद, ब्राह्मणग्रन्थ व दर्शनों का उच्च कोटि का अध्याप वह सव सके। कुछ दिनों के लिये पं० शिवशंकर काव्यतीर्थ गुरुकुल साहित्यक भयंकर रोग से पीडित होने के कारण वे देर तक न टि वागीश्वर जी,

गुरुकुल की स्थापना से मिली प्रेरणा और उसके अपने प्रयत्न से आज वेद वेदांग के पंडितों की कमी नहीं रही है। आज न केवल गुरुकुल कांगड़ी में, अपितु बहुत सी आर्य संस्थाओं में भी इन विषयों के पढ़ाने का कार्य गुरुकुल के स्नातक कर रहे हैं। पं० श्रीपाद दामोदर सातवलेकर गुरुकुल के स्नातक नहीं है पर उन्होंने प्रायः सम्पूर्ण वैदिक ज्ञान गुरुकुल में रहकर प्राप्त किया है। गुरुकुल के स्नातकों में पं० जयदेव जी विद्यालंकार ने चारों वेदों का भाष्य कर आर्यसमाज की महान् सेवा की है उसे कौन भूल सकता है।

गुरुकुल के वेदोपाध्याय पं० विश्वनाथ विद्यालंकार आर्यसमाज के बहुत गम्भीर वैदिक विद्वान हैं वेदों का जितना विस्तृत और विवेचनात्मक अध्ययन उन्होंने किया है उतना और शायद किसी ने न किया हो। पं० देवशर्मा विद्यालङ्कार की "वैदिक विनय" जिस ने पढ़ी है उसने उसकी मुक्त कंठ से प्रशंसा की। पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति पं० चन्द्रमणि विद्यालङ्कार, पं० धर्म देव जी विद्यावाचस्पति, पं० भगवद्दत्त जी वेदालंकार, पं० देवराज जी आदि कितने ही स्नातकों की वेद विषयक पुस्तकें आर्य समाज के सम्मुख आ चुकी है। अनेक स्नातक वेद विषयक ग्रन्थ लिखने में व्यस्त हैं। गुरुकुल का प्रत्येक विद्यार्थी लगभग २००० मन्त्र गुरुकुल में पढ़ लेता है। इससे उनमें वेदों को समझने की अच्छी योग्यता उत्पन्न हो जाती हैं जो विद्यार्थी वेद महाविद्यालय में पढ़ते हैं, उनकी वैदिक योग्यता तो और भी अग्रे जाती है। आधुनिक ज्ञान विज्ञानों तथा नवीन विवेचनात्मक शैली की दृ[illegible]चित होने के कारण गुरुकुल के स्नातक वैदिक अनुसंधान किसी स्वी[illegible]बड़ी उत्तमता के साथ कर सकते हैं।

गुरुकुल [illegible]ज के प्रचार के लिए भी गुरुकुल के स्नातकों ने बहुत

कार्य किया है। प्रतिनिधि सभा के अनेक प्रसिद्ध उपदेशक गुरुकुल के स्नातक रहे हैं। पं० बुद्धदेव जी, पं० प्रियव्रत जी, पं० यशःपाल जी आदि स्नातक प्रचार कार्य जिस सफलता के साथ करते रहे हैं उस से पंजाब के आर्य बन्धु भली भांति परिचित हैं। दक्षिण भारत में वैदिक धर्म का सन्देश पं० धर्मदेव जी, पं० केशवदेव जी, पं० देवेश्वर जी आदि स्नातक ही ले गये हैं। दक्षिण अफ्रीका फिजी आदि विदेशों में पं० सत्यपाल जी, पं० ईश्वरदत्त जी, पं० अमीचन्द जी आदि कितने ही स्नातक वैदिक धर्म का प्रचार कर चुके हैं और कर रहे हैं। राष्ट्रभाषा हिन्दी की जो सेवा गुरुकल के स्नातकों ने की है उस की सर्वत्र प्रशंसा हुई है। इतिहास, अर्थशास्त्र, राजनीति आदि विविध विषयों पर गुरुकुल के स्नातकों ने मौलिक ग्रन्थ लिखे हैं। गुरुकुल के दो स्नातकों को हिन्दी साहित्य की ओर से १२००) का मंगलाप्रसाद पारितोषिक भी प्राप्त हो चुका है। पं० सत्यकेतु विद्यालंकार ने "मौर्य साम्राज्य का इतिहास" पर और पं० जयचन्द्र जी विद्यालंकार ने "भारतीय इतिहास की रूप रेखा" पर यह पुरस्कार प्राप्त किया है। पण्डित सत्यव्रत जी को उपनिषदों के अनुवाद पर पुष्कल पुरस्कार प्राप्त हुआ। डा० प्राणनाथ विद्यालंकार के ग्रन्थ हिन्दी जगत् में अच्छी ख्याति प्राप्त कर चुके हैं। श्री हरिदत्त जी वेदालंकार ने "हिन्दू परिवार का इतिहास" तथा "हिन्दू विवाह का विकास" नामक दो पुस्तकें लिखी हैं, जिन पर बंगाल हिन्दी मण्डल द्वारा बारह बारह सौ के दो पारितोषिक मिले हैं। पं० चन्द्रगुप्त वेदालंकार का "बृहत्तर भारत" ग्रन्थ अपने विषय का अनुपम व प्रामाणिक ग्रन्थ है। पं० चन्द्रमणि विद्यालंकार ने निरुक्त का जो विस्तृत भाष्य किया है, उसकी भारत भर के विद्वानों ने मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की है। निरुक्त पर संभवतः वह सब से उत्तम ग्रन्थ है। पं० चन्द्रगुप्त विद्यालंकार हिन्दी के प्रतिष्ठित साहित्यक हैं। उनकी रचनायें बहुत उच्चकोटी की मानी जाती हैं। पण्डित वागीश्वर जी,

पं० वंशीधर विद्यालंकार, पं० निरंजनदेव और पं० सत्यपाल 'उन्मुख' अच्छे कवि हैं, और हिन्दी के कवि समाज में अच्छी स्थिति रखते हैं। आयुर्वेद सम्बन्धी ग्रन्थों को लिखने में श्री जयदेव विद्यालंकार, श्री विद्याधर विद्यालंकार श्री अत्रिदेव विद्यालंकार और श्री रमेश बेदी आयुर्वेदालंकार ने अच्छी ख्याति प्राप्त की है। इस के अतिरिक्त अन्य भी बहुत से स्नातकों ने हिन्दी साहित्यिक क्षेत्र में बहुमूल्य सेवा की है। गुरुकुल के कम से कम २५ फी सदी स्नातक अच्छे लेखक हैं और अपने लेखों व ग्रन्थों द्वारा हिन्दी साहित्य की सेवा कर रहे हैं।

संस्कृत साहित्य के निर्माण कार्य में भी स्नातकों को यश मिला है पं० धर्मदेव विद्यामार्तण्ड तथा पं० जनमेजय विद्यालंकार संस्कृत कविताओं पर सरकार से पुरस्कृत हुए हैं।

पत्र सम्पादन के क्षेत्र में भी गुरुकुल के स्नातकों ने अच्छी ख्याति प्राप्त की है। सर्व श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति, सत्यदेव विद्यालंकार, रामगोपाल विद्यालंकार, भीमसेन विद्यालंकार, चन्द्रगुप्त विद्यालंकार, अवनीन्द्र कुमार विद्यालंकार, कृष्णचन्द्र विद्यालंकार, सत्यकाम विद्यालंकार, पंडित वेदव्रत विद्यालंकार, परम विद्यालंकार, क्षितीश विद्यालंकार, सतीश विद्यालंकार कृष्णचन्द्र मेहता विद्यालंकार, शिवकुमार विद्यालंकार, अशोक कुमार विद्यालंकार, आनन्द विद्यालंकार, ब्रह्मदत्त विद्यालंकार, अशोककुमार विद्यालंकार, आदि कितने ही स्नातक विविध समाचार पत्रों के सम्पादन कार्य में प्रसिद्धि प्राप्त कर चुके हैं। अभिप्राय यह है कि कि हिन्दी के सभी साहित्यिक क्षेत्रों में स्नातक लोग सफलता प्राप्त कर रहे हैं।

## राष्ट्रीय सेवा

राष्ट्रसेवा के क्षेत्र में भी गुरुकुल ने प्रशंसनीय भाग लिया है। १९१९ ईस्वी से आरम्भ होकर १९४७ ईस्वी तक राष्ट्र ने जो सत्याग्रह का सफल

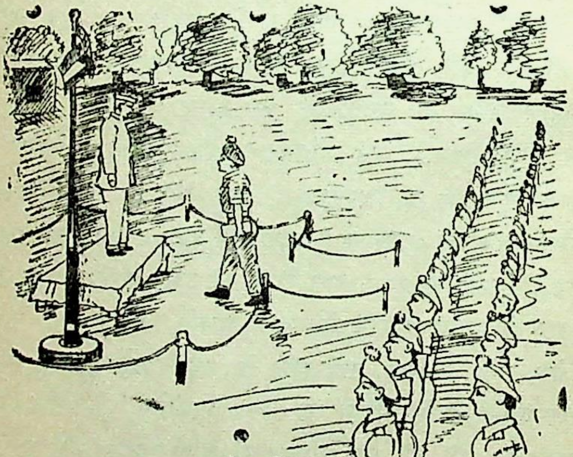
संग्राम किया उस में गुरुकुल के छात्र तथा उपाध्याय पर्याप्त भाग लेते रहे। स्वराज्य प्राप्ति के पश्चात् जब स्वनामधन्य सरदार वल्लभ भाई पटेल की प्रेरणा से गुरुकुल की उपाधियों को सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त हो गई और उस के स्नातकों को राजनैतिक क्षेत्र में कार्य करने का खुला अवसर मिला, तब से अनेक स्नातक शासन से सम्बन्ध रखने वाले तथा उनके अतिरिक्त अन्य ऊंचे पदों पर प्रतिष्ठित होकर सफलता प्राप्त कर चुके हैं और अब भी कर रहे हैं। श्री विनायकराव विद्यालंकार, श्री अमरनाथ विद्यालंकार, श्री दीनदयालु शास्त्री आदि स्नातक ऊँचे राजकीय पदों पर कार्य कर रहे हैं। और अनेक स्नातक धारा सभाओं के सदस्य चुने जाकर राष्ट्रीय सेवा कर रहे हैं।

## भावी योजनाएं

यह तो हुआ गुरुकुल ६० वर्षों का सिंहावलोकन । अब हम उस के भविष्य की ओर दृष्टि डालते हैं तो हमें बहुत विस्तृत क्षेत्र दिखाई देता है। सब से पहला काम तो यह है कि इस समय जो गुरुकुल विश्वविद्यालय का ढांचा तैयार हुआ है, उसे पूर्णता तक पहुंचाया जाय। प्रत्येक विभाग में उन्नति की गुंजाइश है। विद्यालय की शिशु श्रेणियों की व्यवस्था बड़ी श्रेणियों से अलग करना आवश्यक है ताकि उन्हें माता की गोद सा विश्राम मिल सके। शेष श्रेणियों का प्रबन्ध तथा शिक्षा को उन्नत करके गुरुकुल विद्यालय को अन्य गुरुकुलों तथा स्कूलों के लिये आदर्श बनाने का यत्न होना चाहिये। वेद, कला, विज्ञान, तथा कृषि के महाविद्यालयों की शिक्षा को उन्नत करना चाहिये वे शिक्षार्थियों के लिये आकर्षण के केन्द्र बन जायें भवन बहुत बन चुके हैं, अब भी बन रहे हैं और आगे भी बनते रहेंगे परन्तु वास्तविक कर्त्तव्य यह है कि गुरुकुल के मूल सिद्धान्तों की रक्षा करते हुए शिक्षा के स्तर को तथा उपयोगिता को अधिकाधिक

बढ़ाया जाय। इस लक्ष्य की पूर्ति के लिये ऊंची योग्यता वाले गुरुओं का संग्रह आवश्यक है। हमें उस का भी प्रयत्न जारी रखना चाहिये।

एक विभाग खुलना शेष है। गुरुकुल की प्रारम्भिक नियमावली में उस की चर्चा थी। विद्यासभा ने १९४३ में शिक्षा की जो योजना स्वीकार की थी उसमें शिल्प तथा उद्योग शिक्षा को भी स्थान दिया था। गुरुकुल के संस्थापक श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी ने पुरानी भूमि में कला भवन की स्थापना करके शिल्प शिक्षा का आरम्भ भी कर दिया था। परन्तु बाढ़ से इमारतों के साथ कला भवन भी बह गया। नई भूमि में अभी तक शिल्प की शिक्षा आरम्भ करने के लिये कोई पग नहीं उठाया जा सका। आशा है कि अवसर अनुकूल होने पर विद्यासभा की स्वीकृति से गुरुकुल के कार्यकर्त्ता कुछ समय पश्चात् शिल्प शिक्षा की भी व्यवस्था कर सकेंगे।



राष्ट्रीय सैनिक शिक्षा

* * *

# परिशिष्ट संख्या १

## स्नातकों की प्रान्तवार सूची

| क्रम सं० | प्रान्त | स्नातक संख्या |
|---|---|---|
| १. | मध्यभारत | १२ |
| २. | बंगाल | ६ |
| ३. | उड़ीसा | १ |
| ४. | आंध्र | ४ |
| ५. | मद्रास | २ |
| ६. | मैसूर | २ |
| ७. | बम्बई | ९३ |
| ८. | राजस्थान | २९ |
| ९. | सौराष्ट्र | १० |
| १०. | हिमाचल प्रदेश | २ |
| ११. | पंजाब | १३६ |
| १२. | दिल्ली | १०२ |
| १३. | बिहार | २३ |
| १४. | यू० पी० | २३२ |
| १५. | स्याम | १ |
| १६. | अमेरिका | ३ |
| १७. | अफ्रीका | १७ |
| १८. | नेपाल | १ |
| १९. | फ्रंच इंडिया | १ |

कुल स्नातक संख्या संवत् २०१५ के अन्त तक— ६७७

: १५ :

# परिशिष्ट २

## गुरुकुल के आय व्यय का तुलनात्मक विवरण

| संवत् | आय | व्यय |
|---|---|---|
| १९७० | १,००,५४४) | १,२२,५९०) |
| १९८० | १,४८,७०८) | १,४०,०२३) |
| १९९० | १,५०,१७९) | १,४९,५५०) |
| २००० | २,२९,२३७) | २,४२,९९४) |
| २०१० | ५,१५,१८४) | ४,५४,५९४) |
| २०१६ कार्तिक तक | २,९४,६०१) | ३,००,७४५) |

---

## फार्मेसी के लाभ का तुलनात्मक विवरण

| संवत् | |
|---|---|
| १९९१ | २६६५१)८६ |
| २००१ | ४७७९९)२१ |
| २०११ | ७७११६)५४ |

# परिशिष्ट ३

## गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय

### प्राध्यापक तथा अध्यापक

२०१६ (१६६०)

### वेद महाविद्यालय

१ श्री पं० प्रियव्रत जी वेदवाचस्पति–आचार्य
२. श्री सुखदेव जी विद्यावाचस्पति, दर्शन भूषण–अध्यक्ष
३. श्री हरिदत्त जी वेदालङ्कार, एम. ए.
४. श्री रामनाथ जी वेदालङ्कार, एम. ए.–प्रस्तोता
५. श्री गंगाराम जी गर्ग एम. ए.
६. श्री धर्मदेव जी विद्यावाचस्पति एम. ए.
७. श्री हरगोपालसिंह जी एम. ए. (मनोविज्ञान)

### आयुर्वेद महाविद्यालय

१. श्री निरंजनदेव जी आयुर्वेदालङ्कार–अध्यक्ष
२. श्री बेलीराम जी एम. बी. बी. एस.
३. श्री अनन्तानन्द जी आयुर्वेदालङ्कार
४. श्री रामराज जी आयुर्वेदाचार्य, व्याकरणाचार्य एम. ए.
५. श्री चम्पत स्वरूप जी एम. एस. सी., एल. एल. बी.
६. श्री आनन्द मोहन जी एम. बी. बी. एस.
८. रामनाथ जी आयुर्वेदाचार्य, आयुर्वेद वाचस्पति।

९. श्री क्रांन्ति कृष्ण जी आयुर्वेदालङ्कार
१०. श्री सत्यपाल आयुर्वेदालङ्कार
११. श्री सत्यदेव जी विद्यालङ्कार आयुर्वेद भूषण
१२. श्री दिनेश कुमार जी बी.एस.सी.
१३. श्री महेशचन्द्र जी आयुर्वेदालङ्कार, ए.एम.बी.एस.
१४. श्री मदनगोपाल जी आयुर्वेदालंकार, एम.ए.बी.एस.

## विज्ञान महाविद्यालय

१. श्री फकीरचन्द जी एम.एस.सी.-अध्यक्ष
२. श्री सुरेशचन्द्र जी एम.एस.सी. (गणित)
३. श्री भूदेव जी एम.एस.सी. (फिजिक्स)
४. श्री ओ. पी. सिन्हा एम.एस.सी. (कैमिस्ट्री)
५, श्री सुरेश कुमार जी विद्यालङ्कार–एम. ए.।
६. श्री वेद प्रकाश जी–एम. ए. सी. (मैथमैटिक्स)
७. श्री विष्णुदत्त जी-एम. ए. (इंगलिश)
८. श्री हंसराज जी बी.ए.,एफ.एस.सी.
९. श्री ठाकुर सिंह जी बी.एस.सी.

## माध्यमिक शिक्षा

१. श्री दयालु जी एम. ए., ए. टी. सी.-मुख्याध्यापक
२. श्री विष्णुदत्त जी विद्यालङ्कार, एम. ए.।
३. श्री राजेन्द्र कुमार जी वेदालङ्कार, एम.ए.।
४. श्री वासुदेव जी विद्यालङ्कार।
५. श्री नृसिंहदेव जी शास्त्री, सर्वदर्शनाचार्य।
६. श्री कृष्णराव जी वेदालङ्कार।
७. श्री नन्दकुमार जी बी.एस.सी.।

८. श्री शिवस्वरूप जी बी.ए.बी.टी ।

९. श्री भलसिंह जी बी.ए.बी.टी ।

१०. श्री आनन्द प्रकाश जी बी. ए. बी. टी. ।

## प्रारम्भिक विद्यालय

११. श्री चन्द्रकेतु जी आयुर्वेदशास्त्री

१२. श्री प्रकाशचन्द्र जी वेदालङ्कार ।

१३. मोखासिंह जी ।

१४. श्री पुरुषोत्तमदेव जी आयुर्वेदालङ्कार ।

१५. श्री रत्नाकर जी शास्त्री, साहित्यरत्न ।

१६. श्री ओम्प्रकाश जी

१७. श्री महीधर जी शास्त्री, साहित्यरत्न ।

## कृषि विद्यालय

१. श्री देवकीनन्दन वैष्णव बी.एस.सी.ए.जी.,यू.पी.ए.एस.–अध्यक्ष

२. श्री देवदत्त तोमर एल. ए. जी.–संयुक्त अध्यक्ष

३. श्री बिहारीलाल जी बी.एस.सी.ए.जी.

४. श्री सुरेशचन्द्र जी एम. ए., बी. एस. सी.

५. श्री नन्हेंसिंह जी बी. एस. सी. ए. जी.

६. श्री जसवीरसिंह जी बी. एस. सी. ए. जी.

७. श्री विक्रम सिंह मैट्रिक ए. जी. डिप्लोमा

८. श्री विजयपाल मैट्रिक ए.जी. डिप्लोमा

* * *

: १७ :

# परिशिष्ट ४

## पुरातत्व संग्रहालय (म्यूजियम)

श्री हरिदत्त जी वेदालंकार इतिहास उपाध्याय के आधीन यह कार्य चल रहा है। इस में भारतवर्ष के अत्यन्त प्राचीन सिक्के संगृहीत हैं। प्राचीन भारत में प्रचलित विविध प्रदेशीय स्त्री-पुरुषों की वेश-भूषा तथा आभूषण आदि के चार्टों द्वारा समय-समय के चित्र हैं। जिन में मथुरा संग्रहालय की कुषाण कालीन मूर्तियों के आधार पर प्रथम तथा द्वितीय शताब्दी ईस्वी में प्रचलित कण्ठाभरण, ग्रैवेयक कण्ठश्री, एकावली, गुच्छक, हार आदि आभूषण प्रदर्शित किये गये हैं। भारत सरकार के मानव शास्त्र विभाग द्वारा कलकत्ता में बनाए हुए भारत की प्रमुख जातियों के विभिन्न प्रकार के सिरों की प्रतिकृति मंगवा कर रखी गई है। यतः जौनसारी, नागा, आवोर ओंगी, गुजराती, मालवीय, सन्थाल, उड़िया, बंगाली, कडर, मराठा, ऐन्डेमन आदि निवासियों की प्रतिकृति है।

**वनस्पतियाँ**—वनस्पतियों के लिये नये शो-केस बनवाए गये जिनमें अशोक, कुरवक, जपा, चम्पा, यूथिका, प्रियाल, आम्र, मावी, कुटज, जाति, कम्पिल, कुन्द के पुष्प आदि कालिदास के ग्रन्थों में पाये जाने वाले संस्कृत श्लोकों के साथ दिखाये गये हैं।

**उत्तराखंड की झांकी**—इस प्रदर्शन कक्ष में एक घूमने वाले अष्टभुज शोकेस में बद्रीनाथ, केदारनाथ, ऋषिकेश आदि स्थानों के धार्मिक महत्वपूर्ण चित्रों की झांकी दिखलाई गई है।

इस वर्ष संग्रहालय में ५० नई भारत की प्राचीनतम आहत मुद्राओं की तथा कुमारपाल के एक सोने के सिक्के की वृद्धि हुई। ३८ प्राचीन मुद्राओं की अनुकृतियां तैयार कराई गयीं। मुद्राओं को सुरक्षित रखने के लिये गोदरेज की अलमारी मंगवाई गयी। राजस्थानी शैली के ८ नये प्राचीन रंगीन चित्र उपलब्ध किये गये। २१ नई पाषाण मूर्तियां संग्रहालय में आईं। ३० मृण्मयी नई मूर्तियां संग्रहालय में उपलब्ध की गयीं जिन से प्राचीन भारत की वेष भूषा, आमोद प्रमोद, केश विन्यास, आदि का परिचय प्राप्त होता है। तीन ऐसे रंगीन चार्ट बनाये गये जिनमें प्राचीन संस्कृत साहित्य विशेषतया कालिदास के ग्रन्थों में वर्णित पक्षियों के रंगीन चित्र हैं इन से राजहंस चक्रवाक आदि पक्षियों के यथार्थ रूप का ज्ञान हो जाता है। इनके हिन्दी अंग्रेजी नाम भी लिख दिये गये हैं। इस वर्ष भी गत वर्ष की भांति प्राचीन भारत की वेष भूषा से सम्बन्धित ८ नये चार्ट तैयार करवाये गये और चित्र उपलब्ध किये गये।

यूनेस्को द्वारा निर्धारित तिथियों में अन्तर्राष्ट्रीय संग्रहालय सप्ताह बड़ी धूमधाम से मनाया गया। इस का विशेष कार्यक्रम ज्ञान विज्ञान के विभिन्न विषयों पर अधिकारी विद्वानों द्वारा चित्रों की सहायता से करवाये जाने वाले विशेष व्याख्यान थे। इन व्याख्यानों में विद्यार्थियों तथा जनता ने बड़े उत्साह से भाग लिया और इससे संग्रहालय द्वारा लोक शिक्षण और ज्ञान प्रसार का कार्य भली भांति सम्पन्न हुआ। श्री स्वामी श्रद्धानन्द जन्म शताब्दी समारोह (अप्रैल १९५४) के उपलक्ष्य में एक सप्ताह तक श्रद्धानन्द जन्म शताब्दी प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिस में स्वामी जी द्वारा रचित पुस्तकों सम्पादित समाचार पत्रों उन के हस्तलिखित पत्रों और उनकी जीवनी से संबन्ध रखने वाले चित्रों आदि का प्रदर्शन किया गया।

प्राचीन मूर्तियों को समुचित रूप से रखने के लिये ३० फुट लम्बा, १५ फुट चौड़ा टीन की छत का एक भवन तैयार किया गया है। संग्रहालय को

देखने के लिये १,२२०० दर्शक पधारे। इस वर्ष दर्शकों में श्री मदनमोहन जी नागर, श्री कृष्णदत्त जी वाजपेयी और चिन्तामणि द्वारकानाथ देशमुख के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं। डॉ० राधाकृष्णन् उपराष्ट्रपति, श्री मदनमोहन नागर संग्रहालय संचालक उत्तर प्रदेश, श्री गणेश सखाराम महाजन कुलपति दिल्ली विश्वविद्यालय, श्री विश्वेश्वरप्रसाद प्राध्यापक दिल्ली विश्वविद्यालय आदि प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने इसका अवलोकन किया।

## गुरुकुल संग्रहालय—गुरुकुल काँगड़ी—(हरिद्वार)

(भारत सरकार द्वारा १९५९ में प्रकाशित "डायरेक्टरी आफ म्यूजियम्ज इन इन्डिया" में छपे अंग्रेजी विवरण का हिन्दी अनुवाद)

**इतिहास**—इस संग्रहालय को आरम्भ करने का श्रेय अमरहुतात्मा श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी को है। १९०७–८ में इसकी स्थापना इस दृष्टि से की गयी थी कि यह विद्यार्थियों के अध्ययन में सहायक हो सके तथा विविध विषयों के सम्बन्ध में छात्रों में तथा साधारण जनता में अनुराग उत्पन्न कर सके। स्वामी जी की यात्राओं से तथा उन के भारतीय और विदेशी मित्रों की सहायता से इस संग्रहालय की वस्तुओं में वृद्धि होने लगी। इस के आरम्भिक संग्रह में प्रथम विश्वयुद्ध में मद्रास के तट पर जर्मन युद्धपोत एमडन द्वारा की गयी गोलाबारी के कुछ अंश थे। इसी समय श्री एफ० टी० ब्रुक्स तथा श्री सी० एफ० एन्ड्रूज ने समुद्री वस्तुओं के नमूने भेंट किये तथा १९११ में उपाध्याय श्री महेशचरण जी सिन्हा के निरीक्षण में विद्यार्थियों ने टेलीफोन के माडल तैयार किये। १९२४ में गंगा की भीषण बाढ़ में संग्रहालय की सब वस्तुएं नष्ट हो गयीं। इसके बाद आयुर्वेद महाविद्यालय में आयुर्वेद एवं चिकित्सा शास्त्र से सम्बन्ध रखने वाली वस्तुओं का संग्रह किया जाने लगा। तदनन्तर इसमें जीव शास्त्रीय वस्तुओं को एकत्र किया गया। १९४५ में संग्रहालय का पुनः संगठन किया गया, ऐतिहासिक वस्तुओं के संग्रह की ओर ध्यान दिया

जाने लगा। तथा मार्च १९५० में गुरुकुल की स्वर्णजयन्ती के अवसर पर वेद मन्दिर में वर्तमान सँग्रहालय का उद्घाटन किया गया। श्री पं० इन्द्र जी विद्यावाचस्पति की प्रबल प्रेरणा से इसके विकास में बड़ा सहयोग मिला डॉ० शिवनाथराय जी के अनथक उद्योग और भगीरथ परिश्रम से तथा इसके अध्यक्ष श्री हरिदत्त वेदालङ्कार के प्रयत्न से इसकी श्री वृद्धि हुई।

इसमें पुरातत्वीय वैज्ञानिक और उद्योग विभाग हैं।

**पुरातत्वविभाग**—में इस प्रदेश में संग्रहालय द्वारा उपलब्ध की गयी मूर्तियां हैं, उनमें चतुर्मुख ब्रह्मा, समुद्रमन्थन का फलक, बुद्ध की अभिलेखांकित प्रतिमा उल्लेखनीय हैं, ये मूर्तियां गुप्तकाल से मध्यकाल तक की हैं। मोहेन्जोदड़ो की खुदाई से निकली वस्तुओं का एक छोटा सा संग्रह है। विभिन्न युगों की मृण्मूर्तियों को भी संगृहीत किया गया है। यहां आहत, (Punchmarked) हिन्दयूनानी (Indogreek) गणीयों, (Tribal) कुशाण, गुप्त, मध्यकालीन और मुगल मुद्राओं का तथा देशी राज्यों के तथा विदेशों के सिक्कों और नोटों का संग्रह है। कांगड़ा शैली के चित्र तथा १९वीं शताब्दी के आरम्भ में बने कनखल के भित्ति चित्रों की प्रति चित्रों की प्रतिकृतियां भी संगृहीत हैं।

अशोक के कालसी अभिलेख, समुद्रगुप्त के प्रयाग स्तम्भ लेख आदि महत्वपूर्ण शिलालेखों की प्रतिकृतियां भी यहां प्रदर्शित की गई हैं। १०० से अधिक चार्टों की सहायता से तीसरी शताब्दी ई० पू० से अब तक भारतीय लिपियों के विकास को भली भांति दिखाया गया है।

यहां इस प्रदेश में मिले कुछ प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थ भी हैं। इनमें ताड़पत्र पर लिखे ग्रन्थ और काश्मीरी कागज पर लिखा एक सचित्र भागवतपुराण भी है।

इसके एक विभाग में पर्वतीय प्रदेशों—विशेषकर गढ़वाल और जौनसार बाबर के प्रदेशों के लोक जीवन को प्रदर्शित करने वाली वस्तुओं का संग्रह है।

**वैज्ञानिक विभाग**—में जीवशास्त्र, भूगर्भशास्त्र, कृषिशास्त्र, शरीर विकृति विज्ञान, शरीर रचनाशास्त्र, शरीर क्रिया शास्त्र तथा द्रव्यगुण शास्त्र से सम्बन्ध रखने वाली वस्तुओं का संग्रह है। इसके सर्पशास्त्रीय विभाग में १८ फीठ लम्बे अजगर से ७ इन्च के लम्बे छोटे सांप तक प्रायः सभी प्रकार के भारतीय सर्पों को दिखाया गया है।

**उद्योग-धन्धों के विभाग में**—स्थानीय उद्योग धन्धों की वस्तुओं के साथ काश्मीरी कला कारीगरी के कुछ नमूने हैं। इस शिक्षा विभाग में उपयोगी चार्टों, चित्रों तथा विशेष रूप से तैयार किये गये मान चित्रों की सहायता से राजनैतिक अधिकारों कर्त्तव्यों आर्थिक और सामाजिक तथ्यों के संम्बन्ध में बहुमूल्य सूचनायें दी गई हैं।

**शिक्षा संबन्धी कार्य**–संग्रहालय गुरुकुल विश्वविद्यालय के पुस्तकालय का उपयोग करता है और संग्रहालय शास्त्र तथा पुरातत्व विज्ञान पर इसके पास थोड़ी सी अपनी पुस्तकें भी है। संग्रहालयाध्यक्ष निकटवर्ती विद्यालयों तथा महाविद्यालयों के छात्रों को संग्रहालय में आमन्त्रित करता है। कभी कभी इस में विशेष प्रदर्शनियों की व्यवस्था की जाती है। दूसरे संग्रहालयों के प्रकाशनों के साथ यह संग्रहालय अपने प्रकाशनों का विनमय करता है। इसमे प्रदर्शित वस्तुओं का स्वरूप बताने वाले लेबल मुख्य रूप से हिन्दी में हैं। पारिभाषिक शब्दावली वाले लेबल अंग्रेजी में हैं। गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के तथा हरिद्वार की अन्य शिक्षण संस्थाओं के विद्यार्थी संग्रहालय में पूरी दिलचस्पी लेते है। गर्मियों तथा दूर्गापूजा की छुट्टियों में अन्य विश्वविद्यालयों तथा महाविद्यालयों के विद्यार्थी इस संग्रहालय को देखने के लिये अनेक बड़ी पार्टियां बनाकर आते रहते हैं।

**प्रकाशन**---(क) वार्षिक विवरण (ख) डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल द्वारा लिखित समुन्द्रमन्थन का एक दृश्य (ग) डॉ० यज्ञदत्त शर्मा द्वारा लिखित-आरम्भिक भारतीय पुरातत्व की समस्यायें।

**खुलने का समय**—संग्रहालय सप्ताह के सभी दिनों में खुला रहता है। सर्दियों में खुलने का समय ८ बजे प्रात: से १२ बजे तक तथा मध्यान्ह में १ बजे से ५ बजे तक है। गर्मियों में यह समय सबेरे ७ बजे से १२ बजे तक तथा शाम को ४ बजे से ७ बजे तक है।

इसमें कोई प्रवेश शुल्क नहीं हैं।

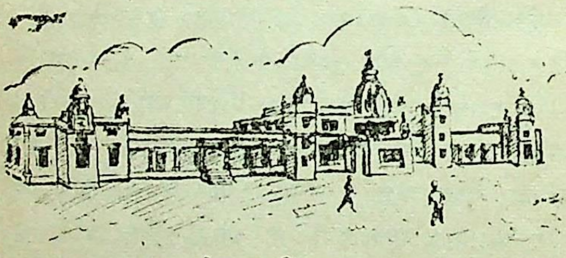
**प्रबन्ध कारिणी सभा**—संग्रहालय का प्रशासन गुरुकुल कांगड़ी विश्व विद्यालय एक संग्रहालय समिति द्वारा करता है।

**कार्यकर्त्ता मण्डल**—अध्यक्ष श्री हरिदत्त वेदालंकार एम. ए. (पुरातत्व विभाग), श्री चम्पत स्वरूप गुप्त एम. एस. सी. (प्राणी शास्त्रीय विभाग), संग्रहालय सहायक, लेखक और चपरासी।

इसका वार्षिक बजट १६०००) का है।

**अन्य टिप्पणियाँ**—सँग्रहालय एक ऐसे शहर में अवस्थित है, जो भारत का एक प्रसिद्ध तीर्थ है। यहां पावन पर्वों के तथा कुम्भ मेलों के अवसरों पर हज़ारों व्यक्ति आते हैं। संग्रहालय में आने वाले दर्शकों की दैनिक संख्या की औसत २७६ तथा वर्ष में १ लाख के लगभग है। दर्शक शीत ऋतु की अपेक्षा ग्रीष्म ऋतु में अधिक संख्या में आते हैं। यहां कुम्भ मेले के अवसर पर तथा अन्य पर्वों पर सब से अधिक यात्री आते हैं। संग्रहालय का भवन बहुत अच्छा बना हुआ है, प्रकाश तथा वायु की उत्तम व्यवस्था होने से यह वस्तुओं के प्रदर्शन के लिये बड़ा उपयोगी है किन्तु वस्तुओं के संग्रह में वृद्धि होने से प्रदर्शन के स्थान की बहुत कमी हैं। वस्तुओं को सुरक्षित रूप से रखने के लिये भी जगह नहीं है। संग्रहालय की वस्तुओं के

फोटोग्राफ दाम देकर प्राप्त किये जा सकते हैं। संग्रह के प्रधान स्रोत ये हैं—आसपास के प्रदेशों का निरीक्षण, खुदाई, विनिमय, दान तथा अत्यल्प मात्रा में वस्तुओं का क्रय करना। यह संग्रहालय अन्य संग्रहालयों के साथ प्रकाशनों का विनिमय करने के लिये सहर्ष उद्यत है। यह भारत के संग्रहालय सम्मेलन का संस्था के रूप में सदस्य है। अपने सीमित साधनों के साथ संग्रहालय ने पाण्डुवाला तथा भीवरहेड़ी का पुरातत्व की दृष्टि से सूक्ष्म निरीक्षण किया है, किन्तु इस विषय में अभी बहुत कार्य किया जाना शेष है। संग्रहालय में भारत की प्रमुख नस्लों के जाति शास्त्रीय नमूने हैं। इस ने कनखल के भित्तिचित्रों को सुरक्षित रखने की दृष्टि से इसके सादे फोटो लिये हैं। और अब इसका विचार उनके रंगीन चित्र लेने का भी है। वित्त की व्यवस्था होने पर हिमालय और उत्तराखण्ड के पशु पक्षियों और वनस्पतियों के संग्रह करने का विचार है। प्राकृतिक विज्ञान विभाग के साथ एक छोटा सा वानस्पतिक उद्यान भी है।



वेद महाविद्यालय

# परिशिष्ट ५

## गुरुकुल की सम्पत्ति

### २०१६ के आय व्यय के विवरण के अनुसार

| | | | |
|---|---|---|---|
| १ | भूमि तथा शाला विनियोग | ८९२०१३ | × |
| २ | विविध व्यवसाय | ७०८४६० | ७९२४२८ |
| ३ | ऋण अगाऊ | ७४६८५ | ८६१२८ |
| ४ | महानिधि से व्यय | | ३८८४०४ |
| ५ | चलित खाते | १९९८३ | १३८२१ |
| ६ | जमानतें | ३४२९३ | ३४२९३ |
| ७ | सभा धरोहर | १८०८७८ | १७४२९६ |
| ८ | हस्तगत माल | १७३९२९ | १३८१६४ |
| | योग | २०८४२७१ | १६३१५३४ |
| ९ | क. दान तथा महानिधि से भूमि विनियोग | | ३८४७८७ |
| | ख. दान तथा महानिधि से भवन विनियोग | ११००३६६ | १७६३७५३ |
| | ग. पुस्तकालय की पुस्तकें व उपकरण | ३७०९९६ | ३६४३५० |
| | योग | १४७१३६२ | २५१२८९० |
| | सर्वयोग | ३५५५६३३ | ४१४४४२४ |

# परिशिष्ट ६

# कृषि विद्यालय का प्रगति विवरण

(अध्यक्ष कृषि विद्यालय द्वारा)

स्वतन्त्रता प्राप्ति के वाद सबसे बड़ी समस्या देश में गरीबी, अज्ञानता तथा रोगों को दूर करने की उपस्थित हो गई है। हमारी सरकार का तथा प्रत्येक विचारशील व्यक्ति का ध्यान इस ओर है कि किस प्रकार हमारा जीवन स्तर ऊंचा हो और सारे देश में खुशहाली फैले। राष्ट्रीय सरकार ने उपरोक्त लक्ष्य प्राप्त करने के लिये पंचवर्षीय योजनाओं का आयोजन किया। इस वर्ष हम द्वितीय पंचवर्षीय योजना के चौथे वर्ष में चल रहे हैं। इन योजनाओं के अनुसार हमारी आमदनी प्रतिवर्ष ५-६ प्रतिशत बढ़नी चाहिए यों तो देश की आमदनी बढ़ाने के लिये उद्योग-धन्धे, व्यापार, आयात, निर्यात, आदि अन्य बहुत से उपाय हैं, परन्तु भारत के लिये एक कृषि प्रधान देश होने के कारण यह बहुत आवश्यक है कि कृषि में विशेष उन्नति की जाए, जिससे इस व्यवसाय में लगी हुई ८० प्रतिशत से अधिक जनता लाभ प्राप्त करे। इसके लिये यह आवश्यक है कि वैज्ञानिक कृषि की शिक्षा का अधिक से अधिक प्रसार हो।

इसको ध्यान में रखते हुए जुलाई १९५५ में गुरुकुल कांगड़ी में कृषि विद्यालय की स्थापना की गई। यों तो सन् १९०२ में स्वर्गीय स्वामी श्रद्धानन्द जी ने जब हरिद्वार से पांच मील दूर गंगा के तट पर कांगड़ी ग्राम में गुरुकुल कांगड़ी शिक्षा केन्द्र की स्थापना की थी, उस समय ही उनके ध्यान

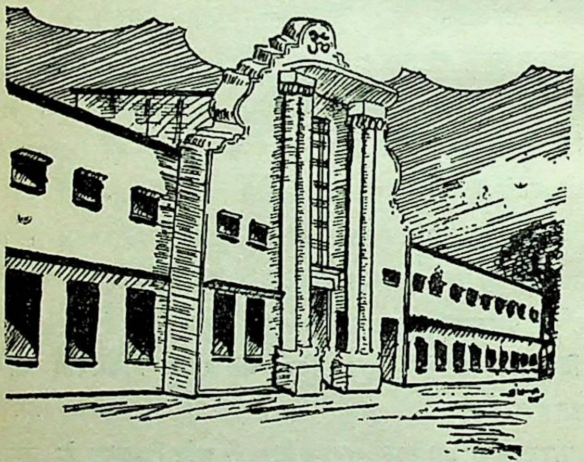
में यह बात आ गई थी, और गुरुकुल की शिक्षा में और विषयों के समान कृषि विषय भी था। किन्तु यह लक्ष्य जुलाई १९५५ से पहले पूर्ण न हो सका।

गुरुकुल में कृषि की उच्च से उच्च शिक्षा देने का लक्ष्य सन्मुख रखा गया है, परन्तु अभी कृषि एवं प्रसार डिप्लोमा और प्रसार की कक्षाएं खोलने से ही कार्य प्रारम्भ किया गया है। इसके लिये गुरुकुल के पास इस समय पर्याप्त साधन उपलब्ध हैं। लगभग १५० एकड़ कृषि भूमि तथा २० एकड़ बाग व नर्सरी है तथा आधुनिक ढंग की सुन्दर गोशाला भी है। इसके अतिरिक्त लगभग ६० एकड़ भूमि पुराने गुरुकुल (पुण्य भूमि) में भी है। कृषि, अभियन्त्रिकी, पशुपालन, पशु चिकित्सा, ग्रामीण अर्थशास्त्र, सहकारिता, ग्रामीण उद्योग धन्धे, प्रारम्भिक विज्ञान, पंचायत, प्रसार, ग्राम स्वच्छता तथा जनस्वास्थ्य आदि विषयों की शिक्षा डिप्लोमा कोर्स के अन्तर्गत दी जाती है। प्रत्येक विद्यार्थी को फार्म पर १/२० एकड़ भूमि कृषि की क्रियात्मक शिक्षा के लिये दी जाती हैं। उपरोक्त सभी विषयों की क्रियात्मक शिक्षा के लिये वर्कशाप, पशुशाला, उद्यान, नर्सरी आदि का उचित प्रबन्ध है। विद्यालय का अपना भवन है, तथा प्रत्येक विभाग के लिये अलग अलग स्थान नियत है। संग्रहालय, पुस्तकालय तथा वाचनालय का पूरा प्रबन्ध है। इसके अतिरिक्त गुरुकुल विश्वविद्यालय के विस्तृत साधन भी सदैव विद्यार्थियों की उन्नति के लिये उपलब्ध हैं।

राज्यसरकार के मन्त्रीगण तथा अधिकारी कृषि विद्यालय के खुल जाने के पश्चात जब यहां समय ससय पर पधारे तो वे यहां के विस्तृत फार्म, उद्यान गोशाला आदि देख कर बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने यहां के सुन्दर, शान्त तथा प्रेरणापूर्ण वातावरण को देश के चतुर्मुखी-विकास के लिये नवयुवकों को ट्रेनिङ्ग देने हेतु अत्यन्त उपयुक्त पाया। इस प्रकार जनवरी १९५६ में ग्राम सेवक शिक्षा केन्द्र कृषि विद्यालय के साथ साथ राज्यसरकार की ओर से प्रारम्भ हुआ है।

इस समय यहाँ एक ब्लॉक भी खुल गया है, जिसके अन्तर्गत लगभग एक सौ ग्राम हैं। प्रशिक्षार्थियों को प्रशिक्षण काल में तथा उसकी समाप्ति पर ग्रामसेवा सम्बन्धित व्यवहारिक शिक्षा का अवसर प्राप्त होता है।

गुरुकुल तथा राज्य के घनिष्ठ सहयोग एवं आत्मीय मेल से एक अह्लादक वातावरण का जन्म हुआ है। और हम लोग क्रमशः रचनात्मक कार्य, नव निर्माण एवं लाभप्रद प्रशिक्षण की ओर अग्रसर हो रहे हैं।



राजेन्द्र छात्रावास

* * *

: २० :

# गुरुकुल के सम्बन्ध में लोकमत

## श्री महात्मा गान्धी का आशीर्वाद

१६२७ में रजत जयन्ती के अवसर पर आशीर्वाद देते हुये महात्मा गान्धी ने निम्न शब्द कहे—

"आज तो मेरे मन में ऐसा प्रतीत होता है कि साधु बास्वानी के जैसे मैं भी प्रणाम करके बैठ जाऊं। पर यों तो हर किसी की नकल नहीं कर सकता। अनुकरण भी स्वाभाविक होना चाहिये। इससे मुझे जो कहना है, वह कह ही दूंगा।

"स्वामी जी का देहान्त तो तब होगा, जब हम उनकी सच्ची देह को मिटाने की कोशिश करेंगे, अगर्चे कि सच्ची बात तो यह है कि हमारी कोशिश से भी उनकी देह का नाश होने को नहीं है—जब तक यह गुरुकुल कायम है जबतक एक भी स्नातक गुरुकुल की सेवा करता है, तब तक स्वामी जी जीते हैं। स्वामी जी का शरीर किसी दिन गिरने को था ही। पर स्वामी जी का सबसे बड़ा काम गुरुकुल है, उन्होंने अपनी सारी शक्ति इसमें लगा दी थी, इसे पैदा करने में उन्होंने अधिक से अधिक तपश्चर्या की थी। तुमने सत्य की प्रतिज्ञा ली है। अगर तुम अपने वचन का पालन करोगे तो किसी की हिम्मत नहीं कि वह गुरुकुल को मिटा देवे"।

"पर गुरुकुल को चिरस्थाई रखने के लिये उस वीरता की, ब्रह्मचर्य और क्षमा की जरूरत है, जो हमने उनके जीवन में देखी। वीरता का लक्षण क्षमा और ब्रह्मचर्य, और वीर्य का संयम है। वीरता और वीर्य की रक्षा से तुम

देश ग्रौर धर्म की पूरी पूरी रक्षा कर सकोगे। मैं जानता हूं कि यह काम मुश्किल है। तुम्हारे यहां के बहुत से विद्यार्थियों के पत्र मेरे पास पड़े हुए हैं कोई मेरी स्तुति करते हैं तो कोई गाली देते हैं। स्तुति तो नाकाम चीज है। उसका ग्रसर मेरे ऊपर नहीं होता। परन्तु जब विद्यार्थी चिढ़ कर गाली देते हैं तो मुझे चिन्ता होती है क्योंकि क्रोध से वीर्य का नाश होता है। स्वामी जी के सामने मैंने ब्रह्मचर्य की ग्रपनी व्याख्या रक्खी थी ग्रौर वे मेरे साथ सम्मत थे। किसी स्त्री का मलिन स्पर्श न करने में ही ब्रह्मचर्य नहीं होता। हां ब्रह्मचर्य वहां से शुरू जरूर होता है। पर क्षमा की पराकाष्ठा ब्रह्मचर्य का लक्षण है। पिछले साल स्वामी जी जब टंकारा से पीछे लौटते समय मुझसे मिलने गये थे तो उन्होंने मुझे कहा कि 'हिन्दू धर्म की रक्षा नीति से ही सम्भव है।' ग्रगर तुम वैदिक ग्राचार ग्रौर विचार की रक्षा करना चाहते हो तो तुम यह बात याद रक्खो कि तुम्हें पग २ पर रुपये मिल जायंगे, मगर ब्रह्मचर्य का नीति का पाया यहां पर न होगा तो तुम्हारा गुरुकुल मिट्टी में मिल जायगा। इस भूमि के तो ग्रात्मा नहीं है। इसकी ग्रात्मा तुम्हीं हो। ग्रगर तुम ग्रात्मबल खो दोगे ग्रौर 'उदरनिमित्तं बहुकृतवेशः, जैसे बन जाग्रोगे तो तुम्हारी सारी शिक्षा बेकार हो जायगी।

"मैं ग्राज तुम्हारे ग्रागे चर्खा ग्रौर खादी की बात करने नहीं ग्राया हूं। तुम्हारा पहला काम ब्रह्मचर्य ग्रौर वीरता का—क्षमा का है। उसे भूल जाग्रोगे तो स्वामी जी का काम कायम नहीं रहेगा। ग्रब्दुलरशीद की गोली से स्वामी जी का क्या हुग्रा! वे तो उस गोली से ही ग्रमर हुए।

"स्वामी जी का दूसरा काम ग्रछूतोद्धार था। जिन शब्दों में मालवीय जी ने खादी की बकालत की, मैं नहीं कर सकता। पर इतना जरूर कहूंगा कि ग्रगर हम हमेशा गरीबों ग्रौर ग्रछूतों की फिक्र रखेंगें तो खादी से ग्रलग नहीं रह सकते। ग्रगर किसी ग्रमली काम में वीर्य की रक्षा का उपयोग करना हो तो खादी से बढ़कर दूसरा कोई काम नहीं है। खादी के कार्य के साथ

मैं स्वामी जी का नाम नहीं जोड़ना चाहता, क्योंकि यह उनका मुख्य काम नहीं था। पर तुम स्नातक विदेशी कपड़े से अपना शरीर सजाने का विचार न करोगे पर अपने गरीबों और अछूतों की रक्षा के लिये केवल खादी ही धारण करोगे।

"ईश्वर तुम सबके ब्रह्मचर्य का, सत्य और तुम्हारी प्रतिज्ञाओं की रक्षा करें, और स्वामी जी का हर एक काम परमात्मा चालू रक्खे।"

## गाँधी जी की अपील

दीक्षान्त–संस्कार के दिन सायंकाल अपील हुई। आचार्य रामदेव जी के अपील के बाद महात्मा गाँधी भाषण देने के लिए उठे। उन्होंने कहा:—

"आर्यसमाज की मैं टीका करता हूं, पर स्तुति भी करता हूं। और जो हार्दिक स्तुति करता है, उसे टीका करने का अधिकार होता है। मैं मानता हूं कि ब्रिटिश राज्य स्थापित होने के बाद शिक्षितों का जनता के साथ आध्यात्मिक संबन्ध नहीं रहा और उस संबन्ध का पुनरुद्धार करने वाला आर्यसमाज है।

"आज जो दृश्य यहां दिखलाई पड़ता है, वैसे दृश्य भाग्य से ही कहीं दूसरी जगह देखने में आते हैं। मैं आपका कुछ अनुकरण करता हूं पर मुझे बालटियों में पैसे नहीं मिलते। मैं तो रुमालों में पैसा इकट्ठा करता हूं। मुझे तो पैसा मिलता है, और अपको रुपये मिलते हैं। सभी के सभी पंजाबी कुछ धनिक नहीं हैं। आप में भी गरीब लोग तो हैं ही, पर आपका दिल उदार है। मैं आर्यसमाज की टीका करता हूं, आपको झगड़ालू कहता हूं। पर आज आपका काम करने आया हूं। उदार पंजाबियों को कहता हूं कि जो दो पैसा दे चुके हैं, वे फिर से देवें, क्योंकि मैं यह स्वीकार करना चाहता हूं कि गुरुकुल की मार्फत हिन्दुस्तान की सेवा हो रही है। मैं ऐसा नहीं मानता कि आपकी टीका करते हुए मैं आपका त्याग न समझता होऊंगा। आपमें

त्याग तो भरा हुआ है ही, पर इस त्याग पर सन्तुष्ट न हो जाओ। जो त्याग आगे दिखलाना है, उसके मुकाबले में, यह त्याग कुछ भी नहीं है पर आपके त्याग की स्तुति करता हूं, क्योंकि आपके बराबर दूसरे में त्याग शक्ति नहीं है। काम तो वही है जो त्यागवृत्ति से किया जाय। बाकी तो स्वच्छन्द हैं।

आपकी स्तुति करता हूं। तो इस से संतुष्ट न हो जाना। आपने दिया तो इस से यह न समझना कि पूरा दे दिया। दान का अर्थ ही है कि अधिक से अधिक दिया जाय। जिस संस्था के लिये स्वामी श्रद्धानन्द जी के सर्वस्व का त्याग था, उसके लिये जितना दे सको, दो। और कुछ परिणाम न भी निकले तो भी गुरुकुल ने संस्कृत के अभ्यास को स्थान दिया है, यह क्या कुछ छोटी बात है? जब किसी पंजाबी को मैं देवनागरी पढ़ते देखता हूं तो अटकल करता हूं कि वह गुरुकुल का पढ़ा होगा। दोष किस संस्था में नहीं होते? पर दोषों के होते हुए भी गुरुकुल संस्था की सेवा बहुत बड़ी है। इस गुरुकुल की आप सेवा करो और इसे जीवन्त रखो। स्वामी श्रद्धानन्द का कहना है कि इस संस्था के लिये उन्होंने ब्रह्मचर्य और तपश्चर्या के दो दान दिये थे। आप कहो कि इस संस्था को जीती रखने के लिए हमसे जितना हो सकेगा हम दान करेंगे।"

**Mr. Ramsay Mscdonald**

Once the Premier of England; sojourned in the Gurukula for some time and expressed the following opinion about the institution—

'Gurukula is the most monentous thing in Indian Education that has been done since Macualay sat down to put his opinions into minute in 1835. Every one here in India is unhappy regarding results of that minute but no one, so far as I have yet seen, save the founders of the Gurukula, has translated his unhappiness into a new experiment.'

## Mr. Myran H. Phelps

The well-know Amrican educationist, contributed a series of articales to the Anglo-Indian paper, the 'Pioneer of Allahabad' on the basis of his impressions regarding the Gurukula, formed during his three months stay in it. The following is an exteract from one of his articles—

'I can not conceive of any institution which could make a stronger appeal to Hindu sentiment regardless of all sectarian feeling, it brings back and makes living best period of Indian life, It reverences and realises the loftiest ideals of Hindu thought. It promises, indeed gives a trustworthy assurance of restoring to the people of India. their ancient virtues No man can live for a time in the atmosphere of this institution without feeling full confidence that the men who receive its training will be of genuine worth and integrity, whose work in the world is certain to advance the welfare of their countrymen and of mankind. My observations long ago convinced me that in training of that sort which this institution is per-eminently qualified to give, lies for the present the only hope, so far as the human pre-science can determine, for the development in Indian of that manly and elevated character which alone can achieve a future for the country, commensurate with its glorious past.

डॉ० राजेन्द्र प्रसाद
राष्ट्रपति भारतीय गणराज्य
राष्ट्रपति भवन
नई देहली

हमारी आज की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये सर्वोत्तम शिक्षा प्रणाली का क्या रूप हो, इस सम्बन्ध में अभी तक निश्चय पूर्वक कुछ कहना सम्भव नहीं है। गुरुकुल शिक्षा प्रणाली भारतीय शिक्षापद्धति पर आधारित है, किन्तु आधुनिक शिक्षा विज्ञान से भी यह प्रणाली प्रभावित हुई है। सार्वजनिक शिक्षा के क्षेत्र में जो भी परीक्षण हमारे देश में अभी तक हुए हैं उन में गुरुकुल शिक्षा संस्थाओं का महत्वपूर्ण स्थान है।

डॉ० राधाकृष्णन्
उपराष्ट्रपति

स्वतन्त्रता से पूर्व सन् १९४२ में मैं यहां आया था। उन दिनों यह संस्था उन कुछ एक संस्थाओं में से एक थी जिस ने प्रकाश को उस समय भी स्थिर रखा जबकि चारों ओर अंधकार था। आज वह प्रकाश पूर्व से भी अधिक प्रकाशित हो रहा है। कई एक सिद्धान्तों का जिन को शिक्षण संस्थाऐं अब अंगीकार कर रही है, सर्व प्रथम निर्माण इसी गुरुकुल में हुआ था। आप एक ऐसा विश्वविद्यालय बनाना चाहते थे जहां पर छात्रनिवास करते हों। और भीड़ भाड़ से भी प्रथक् रहें। आप इस देश की प्राचीन संस्कृति से प्रोत्साहन प्राप्त करने में विश्वास रखते है और आपने शिक्षा के माध्यम के रूप में मातृभाषा को स्वीकार किया। यह वे सिद्धांत है जिन को आज के शिक्षाविज्ञ व्यवहार में लाना चाहते हैं।

पं० जवाहरलाल नेहरू
प्रधान मंत्री भारतीय गणराज्य
नई देहली, २३ मई १९५९

गुरुकुल कांगड़ी की हीरक जयन्ती के लिये मैं अपनी शुभ कामनाएं भेजता हूं कुछ मास पूर्व मैं इस संस्था में गया था। और वहां की कार्य प्रणाली के विषय में कुछ जानकारी प्राप्त की थी, मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि यह संस्था अच्छे ढंग से कार्य कर रही है। मैंने उस अवसर पर भाषण देते हुए इस बात पर बल दिया था कि देश के सांस्कृतिक आदर्श के साथ साथ विज्ञान की प्रगति पर भी समान रूप से बल देने की आवश्यकता है जो कि आज के युग में अत्यधिक महत्वपूर्ण है। एकमात्र इन दोनों के समन्वय से ही हम लक्ष्य का निर्माण कर सकते हैं।

गोविन्द वल्लभ पंत
गृह मंत्री, भारत सरकार
नई देहली

मुझे यह जानकर खुशी है कि इस साल गुरुकुल कांगड़ी की हीरक जयन्ती मनाई जायेगी। इन ६० वर्षों में इसने शिक्षा के क्षेत्र में उत्साह वर्धक काम किया है। भविष्य में इसकी उन्नति और द्रुतगति से होगी यह मेरा विश्वास है। मेरी शुभकामना आप लोगों के साथ है।

श्रीप्रकाश
बम्बई गवर्नरस कैम्प
महाबालेश्वर

बड़े ही सन्तोष और प्रसन्नता का विषय है कि हर प्रकार की विषम स्थितियों का साहस से सामना करते हुए यह उपयोगी संस्था ६० वर्ष तक लगातार देश की सेवा करती रही और राष्ट्रीय शिक्षा के नये प्रयोगों में सफल होती रही। स्वामी श्रद्धानन्द जी की यह अमर कीर्ति है और उसके संचालकों, कार्यकर्ताओं, अध्यापकों, स्नातकों और विद्यार्थियों को मैं हृदय से बधाई देता हूं कि उनका हम से निकट संम्पर्क रहा है । और उनके आत्मत्याग की मैं प्रशंसा करता हूं। कि वे प्रतिकूल स्थितियों के होते हुए भी अपने आत्मनिर्धारित पथ से कभी भी विचलित नहीं हुए और अपने आदर्शों का पालन सदा दृढ़ता से करते रहे।

मुझे १६०६ अर्थात ५० वर्ष पहले का वह दिन स्मरण आ रहा है। जब अपने प्रिय मित्र श्री शिवप्रसाद गुप्त जी के साथ हरिद्वार से गंगा को पार कर मैं गुरुकुल के आदि स्थान पर गया था। स्वामी श्रद्धानन्द जी के प्रथम दर्शन मैंने वहीं किये थे। उस समय वे गुरुकुल की स्थापना में लगे हुये थे। पीछे प्राकृतिक असुविधाओं के कारण गुरुकुल को वहां से हटाकर उसके नये स्थान पर लाया गया जहां पर भी मुझे जाने का कई बार सुअवसर मिला, स्वामी श्रद्धानन्द जी के भक्त की हैसियत से और भारत वासी होने के नाते मैं भी आज प्रसन्न हो रहा हूं कि इस संस्था की इतनी वृद्धि और उन्नति हुई, इसने ज्ञान के विवध शाखाओं के अध्ययन अध्यापन के लिये कितने ही विभाग खोले, पुराने धर्मशास्त्रों के मनन के साथ साथ नये विज्ञान के तरफ भी ध्यान दिया। चिकित्सा के प्रकारों का अनुसंधान किया और पूर्ण रूप से स्वतन्त्र रहकर शिक्षा की नई प्रथाओं का सफल

प्रयोग किया। गुरुकुल हमारी राष्ट्रीय सम्पत्ति है इसको सुदृढ़ बनाना और समुचित रूप से इसका पोषण करना हमारा कर्त्तव्य है आशा है हम ऐसा ही करते रहेंगे।

जाकिर हुसेन

बिहार गवर्नरस कैम्प, पटना

ता० २ फरवरी १९६०

प्रिय श्री इन्द्र जी,

मुझे आपका पत्र दिनांक २५ जनवरी, १९६० का मिला। इस के लिये मैं आपको धन्यवाद देता हूं। यह जानकर बड़ी खुशी हुई कि आप गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की हीरक जयन्ती महोत्सव के अवसर पर एक संदेश पुस्तिका प्रकाशित करने जा रहे हैं। इस संस्था ने पिछले ६० वर्षों से बड़ा ही सराहनीय काम किया है और मुझे पूर्ण विश्वास है कि भविष्य में भी आपके देख रेख में इस संस्था की प्रतिष्ठा बढ़ेगी तथा उत्तरोत्तर इस के काम में वृद्धि होगी। राष्ट्रीय शिक्षा के सब काम करने वालों पर गुरुकुल कांगड़ी का बड़ा अहसान है। जब लोग आगे बढ़ने में झिझकते थे उस समय इसने रास्ता दिखाया।

मैं अपनी शुभ कामनायें इस के लिये प्रस्तुत करता हूं।

श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति,
उपकुलपति,
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय,
हरिद्वार

श्री अनन्त शयनम अय्यंगर
स्पीकर लोकसभा

यह अत्यन्त संतोषजनक है कि गुरुकुल विश्वविद्यालय शिक्षा के वैदिक आदर्शों में आस्था रखता है और मानवता की निस्वार्थ सेवा को प्रोत्साहित करता है।

जब मैं इस स्थान के चारों ओर देखता हूं तब मैं प्रकृति के उस सुकोमल और श्रेष्ठ प्रभाव से जो कि इस देश के विचारों और संस्कृति पर पड़ता है प्रभावित होता हूं। गुरुकुल पद्धति इसलिये प्रशंसा के योग्य है। कि वह यह पद्धति है जो कि बालकों के चरित्र निर्माण पर सबसे अधिक बल देती है। वह शहरों के कालेजों तथा शिक्षण संस्थाओं से भिन्न है जो समाज के दूषित वातावरण में से फंसे हुए हैं। छात्रों के मस्तिष्क को उन्नत करने के लिये गुरुकुल के पास पर्याप्त सामग्री है।

श्रीमती लक्ष्मी मैनन
डिप्टी मिनिस्टर
विदेश मंत्रालय

मनुष्य को अपनी प्राकृतिक आध्यात्मिक पृष्ठभूमि में सर्वांग रुपेण उन्नत करने के लिये एक भिन्न युग और भिन्न वातावरण में शिक्षा पद्धति के ढंग को पुनः अपनाने के लिये गुरुकुल में यत्न किया जाता है। इस मशीन के युग में अपने भौतिक ध्येय और विभिन्न स्वत्वों के होते हुये एक आदर्श एकान्त और प्राकृतिक वातावरण में गुरु शिष्य के निकट सम्बन्ध वाकी गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का एक बड़े पैमाने पर विस्तार होना सम्भव नहीं है जब तक कि उसकी भावना को पुनर्जीवित करने के लिये विशेष प्रयत्न न किया जावे जो कि इस गुरुकुल द्वारा हो रहा है।

यह संस्था गत ६० वर्ष से स्थित है और गुरुकुल के आदर्शों को मूर्तिमान करती रही है, जो कि इस बात का प्रमाण है कि इसने शिक्षा के क्षेत्र में उत्तम कार्य किया है।

केशवदेव मालवीय
खनिज व तेल मंत्री,
भारत सरकार, नई दिल्ली

मुझे यह जान कर अति प्रसन्नता हुई कि गुरुकुल कांगड़ी अपना हीरक जयन्ती महोत्सव अप्रेल १९६० में मनाने जा रहा है। इस शुभ अवसर पर मैं अपनी शुभ कामनायें भेजता हूं।

यह बात किसी से छिपी नहीं है कि भारत में आश्रम प्रणाली के आधार पर शिक्षा प्रदान करने का जो कार्य गुरुकुल कांगड़ी ने किया है वह अद्वितीय है, राष्ट्रभाषा के प्रचार में भी यह संस्था सदैव ही आगे रही है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि भविष्य में भी शिक्षा जगत में यह विश्वविद्यालय इसी प्रकार अपनी सेवायें करता रहेगा।

श्री डॉ० सम्पूर्णानन्द
मुख्य मंत्री, उत्तर प्रदेश

गुरुकुल उन महान और श्रेष्ठ संस्थाओं में से है जिन का जन्म और पालन आर्य समाज द्वारा इस देश में हुआ है। यद्यपि कई संस्थाऐं इस देश में इन्हीं लाईनों पर काम कर रहीं हैं परन्तु मैं समझता हूं कि यह गुरुकुल उन सब में अधिक पुराना है, और हम सब ही इस प्रयोग को बड़े चाव के साथ देखते रहते हैं।

गुरुकुल के अन्दर आप पुराने और नये प्रयोगों का मिश्रण कर रहे हैं। और इस युग की वर्तमान परिस्थिति में प्राचीन ढंग से इस गुरुकुल का संचालन कर रहे हैं। आप यहां केवल हिन्दी में ही ऊंची शिक्षा देने का यत्न नहीं करते परन्तु आप इस बात का भी यत्न करते हैं कि आप के यहां छात्र उस प्रकार से निवास करें जिस प्रकार पुराने गुरुकुलों में निवास किया करते थे।

श्री अमरनाथ झा

गुरुकुल भारतवर्ष के पुराने विश्वविद्यालयों के स्तर पर आधारित है। गुरुकुल ने अपने जन्म काल से ही शिक्षा का माध्यम हिन्दी रक्खा है।

डॉ० चिन्तामणि द्वारकानाथ देशमुख

प्राचीन गुरुकुल प्रणाली को पुनर्जीवित करने का स्वर्ण स्वप्न महर्षि दयानन्द सरस्वती ने देखा था। स्वतन्त्रता के आगमन के साथ साथ गुरुकुल ने भारत के शिक्षा जगत में बड़े सन्मान का स्थान प्राप्त कर लिया है।

श्री के० एम० मुन्शी

गुरुकुल वह वस्तु देता है जो अन्य विश्वविद्यालयों से शायद ही प्राप्त हो सके, अर्थात् भारत और उसकी संस्कृति में विश्वास।

सत्यनारायण सिंह
मिनिस्टर पार्लियामेण्टरी अफेयर्स

मुझे यह जानकर खुशी हुई है कि अप्रैल १९६० में गुरुकुल कांगड़ी का हीरक जयन्ती महोत्सव मनाया जायगा। इस संस्था ने शिक्षा जगत में अभी तक जो किया है, वह प्रत्येक हिन्दु संस्कृति प्रेमी के लिये गौरव का विषय हैं आशा है कि भविष्य में भी वह संस्था आप लोगों के प्रयत्न से उन्नति करती जायगी। महोत्सव की सफलता के लिये मैं अपनी शुभ कामनायें भेजता हूं।

सतीशचन्द्र

डिप्टी मिनिस्टर आफ कामर्स एण्ड इंडस्ट्रीज

नई देहली

गुरुकुल ने हमारे राष्ट्रीय जीवन में उच्च आदर्शों का समावेश किया है। त्याग और संयम की जिस भावना को गुरुकुल ने पुनः जागृत किया, वह हमारे नवयुवकों के लिये विशेष महत्व रखती है। मेरा विश्वास है कि अतीत की भांति आप का यह गुरुकुल भविष्य में भी नवयुवकों को राष्ट्र निर्माण के कठिन पथ पर बढ़ते रहने की प्रेरणा प्रदान करता रहेगा।

क्षितीशचन्द्र चौधरी

उपाचार्य (वाइस चान्सलर)

बिश्वभारती

गुरुकुल काँगड़ी ने अपने जीवन के पिछले ६० वर्षों में शिक्षा और संस्कृति के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य किया है और उसने गौरव पूर्ण परम्पराएं तथा इतिहास बना लिया है।

डॉ० वि. ही. कापडिया एम.ए.,पी.एच.डी.
रीडर इन संस्कृत
सरदार वल्लभ भाई विद्यापीठ
वल्लभ विद्यानगर, गुजरात

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय ने गत ६० वर्षों से शिक्षा वितरणादि के उज्वल शुभ कार्य में अपना नाम रोशन किया है इस में सर्व की श्रद्धा है । प्राचीन भारतीय संस्कृति को सदैव सन्मुख रखकर गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय ने गीता के सिद्धान्त कर्मयोग को कृतकृत्य करके दिखाया है । गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का नाम भारत में एक सीमा चिन्ह के रूप में है । इस विश्वविद्यालय ने जो कुछ समीचीन स्वरूप में किया है वह अत्यन्त आदरणीय और अनुकरणीय है । गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय ने अपने जीवन के यशस्वी ६० वर्ष व्यतीत किये हैं । मैं ईश्वर से ऐसी प्रार्थना करता हूं कि इस विद्यालय की कीर्तिपताका ७५, १०० और उस से आगे फहरती रहे और इस विश्वविद्यालय अन्य संस्थाओं को पथप्रदर्शन किया करे ऐसी मेरी शुभ निष्ठा है ।

डॉ कालीदास नाग

संसार के विभिन्न क्षेत्रों से महान शिक्षाविज्ञों ने इस अद्भुत संस्था को देखा है और उन्होंने इस संस्था की अत्यन्त ऊंची प्रशंसा की है ।

बाबूराम सक्सेना एम० ए०, डी० लिट०
इलाहाबाद यूनिवर्सिटी

महर्षि दयानन्द सरस्वती के उपदेश के अनुसार शिक्षा प्रणाली को ढालने का जो प्रयत्न आर्य समाज ने किया उस का सर्वोत्तम नमूना गुरुकुल कांगड़ी है। गुरू के साथ प्रायः सर्वथा रहकर और अपने जन्मकुल से कम से कम सम्बन्ध रखकर भारतीय बालक आर्य ग्रन्थों का अध्ययन करता हुआ, वर्तमान युग की लौकिक विद्याओं को भी पढ़ता हुआ ब्रह्मचर्यव्रत का पालन सर्वथा पूरा करता हुआ, देश और समाज का आदर्श सभेय युवा बनेगा— यह गुरुकुल ने करके दिखा दिया। भले ही गौतम, कणाद न पैदा हो सकें पर सरकारी नौकरियों और कृपाकटाक्षों को ठुकरा देने वाले सच्चे राष्ट्र सेवक इस कुल ने भारत को दिये हैं। जिस राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली की योजना महात्मा गांधी ने १९२० में देश के सामने रखी उस के सारे श्रेष्ठ गुण गुरुकुल प्रणाली में कार्य रूप में आ चुके थे। आर्य भाषा के द्वारा विज्ञान की पढ़ाई सुगम और सफल हो सकती है यह गुरुकुल ने पहले ही सिद्ध कर दिया था।

श्री एस० सत्यमूर्ति

आप के विश्वविद्यालय का महान गुण जिसपर मैं आप को विशेष रूप से बधाई देना चाहता हूं वह ब्रह्मचर्य की भावना है जिसे आप व्यवहार में लाते हैं। यह वास्तव में गुरुकुल है। संस्कृत के एक तुच्छ विद्यार्थी के रूप में मैं आप के विद्यालय को इस महान महत्व पर और संस्कृत की शिक्षा पर बधाई देता हूं।

कुंजीलाल दुबे
उप-कुलपति,
जबलपुर विश्वविद्यालय, जबलपुर

दिनांक–फरवरी १९६०

संदेश

मुझे यह जानकर हर्ष हुआ कि अप्रैल १९६० में गुरुकुल कांगड़ी विश्व-विद्यालय, हरिद्वार अपनी हीरक जयन्ती का महोत्सव मना रहा है।

भारत की उच्च शिक्षा के क्षेत्र में गुरुकुल कांगड़ी का एक विशेष स्थान रहा है। गत लगभग ६० वर्षों से गुरुकुल कांगड़ी भारतीय पद्धति से और हिन्दी भाषा में भारत के नवयुवकों को उच्चशिक्षा दे रहा है। यह उसके लिये और सारे भारत के लिये विशेष गौरव की बात है।

उसके उज्वल भविष्य के लिये मैं अपनी शुभ कामनाएं प्रेषित करता हूं।



नहर का स्नान